राधास्वामी दयाल की दया
राधास्वामी सहाय

सूचीपत्र बचनाँ का

सूचीपत्र शब्दों का

कड़ी		सफ़हा

कड़ी	सफ़हा

करत रही सुर्त गुरु दर्शन ।
अहा हा हा ओहो हो हो ॥ ६ ॥
चरन पर वार रही तन मन ।
अहा हा हा ओहो हो हो ॥ ७ ॥
खेलती सुन में सँग हंसन ।
अहा हा हा ओहो हो हो ॥ ८ ॥
भँवर होय सत्तपुर धावन ।
अहा हा हा ओहो हो हो ॥ ९ ॥
परस राधास्वामी हुई पावन ।
अहा हा हा ओहो हो हो ॥ १० ॥

॥ शब्द २ ॥

अतोला तेरी कर न सके कोइ तोल ॥टेक॥
जिन पर मेहर मिले सतगुरु से ।
सतसँग में उन बनिया डोल ॥ १ ॥
उमँग सहित लागे अब घट में ।
सुनत रहे नित अनहद बोल ॥ २ ॥
सुन सुन धुन सुत चढ़त अधर में ।
काल करम का लूटा होल ॥ ३ ॥

चढ़ चढ़ पहुँची सत्तलोक में ।
दूर हुए सब माया खोल ॥ ४ ॥
राधास्वामी दरस मेहर से मिलिया ।
पाय गई पद अगम अडोल ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३ ॥

सुरतिया सोग (बिरह) भरी
रहे निस दिन चित्त उदास ॥ टेक ॥
प्रीतम प्यारे का व्योग सतावे ।
नहिँ भावे कुछ भोग बिलास ॥ १ ॥
बेकल तड़प उठत मन माहीँ ।
बढ़त अधिक दर्शन की प्यास ॥ २ ॥
गुरु प्यारे मेरे बसेँ अधर में ।
मैं तो किया मृतलोक निवास ॥ ३ ॥
कैसे चढ़ूँ दरस कस पाऊँ ।
यहि मेरे मन में सोच और आस ॥ ४ ॥
बिन दर्शन मोहिँ कल न पड़त है ।
रटत रहूँ पिया पिया हर स्वाँस ॥ ५ ॥

कैसी करूँ कौन जुगत कमाऊँ ।
किस बिधि लखूँ प्रीतम परकाश ॥६॥
कासे पूछूँ राह रकाना ।
प्रीतम का कोइ मिले निज दास ॥ ७ ॥
मैं तो अजान भेद नहिँ जानूँ ।
चहत रहूँ पिया चरनन बास ॥ ८ ॥
प्रीतम आपहि मरम जनावें ।
घट में दिखावें शब्द उजास ॥ ९ ॥
मेहर करें सुत गगन चढ़ावें ।
पहुँचूँ शब्द गुरू के पास ॥ १० ॥
आगे सत्तलोक जाय परसूँ ।
सतगुरु चरन निज सुख की रास॥११॥
आगे चल पहुँचूँ धुर धामा ।
खेलूँ नित पिया राधास्वामी पास ॥१२॥

॥ शब्द ४ ॥

चलो घर गुरू सँग धर मन धीर ॥टेक॥
यह तो देश बिगाना जानो ।
सुद्ध करो निज घर की बीर ॥ १ ॥

सतगुरु घट का भेद लखावैं।
मिल उन से तू खोज शरीर ॥ २ ॥
मथ मथ शब्द लखो परकाशा।
छान करो तुम नीर और छीर ॥ ३ ॥
निरमल होय चढ़े सुत ऊँचे।
निरखे सत पद गहिर गँभीर ॥ ४॥
दया हुई सुत अधर सिधारी।
पहुँची राधास्वामी चरनन तीर ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५ ॥

कामना जग की तज मन यार ॥टेक॥
जगत गुनावन बिष कर जानो।
ता मैं बहत सुरत की धार ॥ १ ॥
ज़हर हलाहल नितही खावत।
अमृत रस नहिँ चाखत सार ॥ २॥
गुरु सतसँग कर शब्द भेद ले।
सुरत चढ़ाओ धुन की लार ॥ ३ ॥
गगन जाय गुरु रूप निहारे।
सुन मैं निरखे बिमल बहार ॥ ४ ॥

कैसी करूँ कौन जुगत कमाऊँ।
किस बिधि लखूँ प्रीतम परकाश ॥६॥
कासे पूछूँ राह रकाना।
प्रीतम का कोइ मिले निज दास ॥ ७ ॥
मैं तो अजान भेद नहिं जानूँ।
चहत रहूँ पिया चरनन बास ॥ ८ ॥
प्रीतम आपहि मरम जनावें।
घट में दिखावें शब्द उजास ॥ ९ ॥
मेहर करें सुत गगन चढ़ावें।
पहुँचूँ शब्द गुरू के पास ॥ १० ॥
आगे सत्तलोक जाय परसूँ।
सतगुरु चरन निज सुख की रास॥११॥
आगे चल पहुँचूँ धुर धामा।
खेलूँ नित पिया राधास्वामी पास ॥१२॥

॥ शब्द ४ ॥

चलो घर गुरु सँग धर मन धीर ॥टेक॥
यह तो देश बिगाना जानो।
सुद्ध करो निज घर की बीर ॥ १ ॥

सतगुरु घट का भेद लखावैं ।
मिल उन से तू खोज शरीर ॥ २ ॥
मथ मथ शब्द लखो परकाशा ।
छान करो तुम नीर और छीर ॥ ३ ॥
निरमल होय चढ़े सुत ऊँचे ।
निरखे सत पद गहिर गँभीर ॥ ४॥
दया हुई सुत अधर सिधारी ।
पहुँची राधास्वामी चरनन तीर ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५ ॥

कामना जग की तज मन यार ॥ टेक॥
जगत गुनावन बिष कर जानो ।
ता मैं बहत सुरत की धार ॥ १ ॥
ज़हर हलाहल नितही खावत ।
अमृत रस नहिँ चाखत सार ॥ २ ॥
गुरु सतसँग कर शब्द भेद ले ।
सुरत चढ़ाओ धुन की लार ॥ ३ ॥
गगन जाय गुरु रूप निहारे ।
सुन मैं निरखे बिमल बहार ॥ ४ ॥

राधास्वामी चरन बसाय हिये मैं ।
पहुँची सत्तपुरुष दरबार ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६ ॥

सुरत लाई आरत सरधा धार ॥टेक॥
उमँग उमँग गुरु चरनन लागी ।
सतसँगियन मैं बाढ़ा प्यार ॥ १ ॥
आरत सामाँ सजे बनाई ।
अनेक पदारथ धरे सम्हार ॥ २ ॥
प्रेमी जन मिल आरत गावैं ।
घंटा संख धूम अति डार ॥ ३ ॥
गगन मँडल मैं बजी बधाई ।
हुए प्रसन्न अब गुरू दयार ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया बिचारी ।
दिया मोहिँ निज चरन अधार ॥ ५ ॥

॥ शब्द ७ ॥

सुरत लगी गुरु चरनन चित जोड़ ॥टेक॥
बचन सुनत जागा अनुरागा ।
मन को लीन्हा जग से मोड़ ॥ १ ॥

दर्शन कर हिये बढ़त उमंगा ।
रूप सुहावन हुआ चित चोर ॥ २ ॥
गुरु चरनन में बासा चाहत ।
जग जीवन से नाता तोड़ ॥ ३ ॥
गुरु सेवा लागी अति प्यारी ।
प्रेम रंग भींजत सरबोर ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया काज हुआ पूरा ।
काल करम सिर दीन्हा फोड़ ॥ ५ ॥

॥ शब्द ८ ॥

भाव धर गुरु सन्मुख आई ॥ टेक ॥
सुरत पियारी बँध रही तन में ।
बचन सुनत हिये उमगाई ॥ १ ॥
जगत भाव और तन मन प्रीती ।
तोड़ फोड़ गुरु सर नाई ॥ २ ॥
दर्शन पाय हरष रही मन में ।
गुरु छवि निरखत बल जाई ॥ ३ ॥
उमगा प्रेम हिये में भारी ।
गुरु चरनन रही लिपटाई ॥ ४ ॥

मेहर करी गुरु लिया अपनाई ।
राधास्वामी गुन निस दिन गाई ॥५॥

॥ शब्द ९ ॥

मगन हुआ मन गुरु भक्ती धार॥टेक॥
जगत भोग से कर बैरागा ।
गुरु परशादी मिला अधार ॥ १ ॥
आसा मनसा जग की छोड़ी ।
गुरु चरनन में लागा प्यार ॥ २ ॥
गुरु बिस्वास धार अब चित में ।
करम धरम सब दिये निकार ॥ ३ ॥
चरन सरन गुरु दई मेहर से ।
अपना कर लिया मोहिं सुधार ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरन अब बसे हिये में ।
नित्त रहूँ मैं चरन सम्हार ॥ ५ ॥

॥ शब्द १० ॥

उमँग मन गुरु चरनन में लाग ॥टेक॥
भोग रोग तज चेत जगत से ।
सतसँग में अब जाग ॥ १ ॥

सुरत समेट लगो घट धुन मैं।
सुन ले अनहद राग ॥ २ ॥
प्रीत प्रतीत धरो गुरु चरनन।
सेवा करत बढ़ाओ भाग ॥ ३ ॥
सुरत चढ़ाय चलो गगनापुर।
धोवो कल मल दाग़ ॥ ४ ॥
वहाँ से आगे चलो उमँग से।
राधास्वामी चरनन पाग ॥ ५ ॥

॥ शब्द ११ ॥

त्याग दे प्यारी जग व्योहार ॥ टेक ॥
बिरध अवस्था आ कर छाई।
अब ग़फ़लत तज हो हुशियार ॥ १ ॥
सतसंग कर गुरु बचन सम्हारो।
भेद लेव तुम सत करतार ॥ २ ॥
घर चलने की जुगत कमाओ।
गुरु चरनन मैं लाओ प्यार ॥ ३ ॥
बिरह अंग ले चालो घट मैं।
मन के निकारो सबहि बिकार ॥ ४ ॥

राधास्वामी दया संग ले अपने ।
सहजहि उतरो भौ जल पार ॥ ५ ॥

॥ शब्द १२ ॥

ज्ञान तज भक्ती पंथ सम्हार ॥ टेक ॥
बाचक ज्ञान कुछ काम न आवे ।
मन मैं बढ़े थोथा अहंकार ॥ १ ॥
अंतर मैं कुछ असर न होवे ।
बाहर बातें करैं लबार ॥ २ ॥
नास्तिक मत इन का तुम जानो ।
ख़बर न पाई कुल करतार ॥ ३ ॥
ब्रह्म मान अपने को बैठे ।
सच्चा मालिक दिया बिसार ॥ ४ ॥
मन इंद्री की गति नहिँ जानी ।
भरम रहे वे माया लार ॥ ५ ॥
यह मत जाल बिछाया काला ।
बिद्यावान घेर लिये झाड़ ॥ ६ ॥
इनका संग करो मत कोई ।
जो तुम चाहो अपन उद्धार ॥ ७ ॥

गुरु भक्ती हित चित से धारो ।
राधास्वामी सरन सम्हार ॥ ८ ॥
सुरत शब्द की जुगत कमावो ।
तब होवे सच्चा निरवार ॥ ९ ॥
राधास्वामी मेहर से सुरत चढ़ावेँ ।
सहज उतारेँ भौजल पार ॥ १० ॥

॥ शब्द १३ ॥

गुरू बिन घट का भेद न पाय ॥टेक॥
षट शास्तर और बेद पुराना ।
पढ़ पढ़ बिरथा बैस बिताय ॥ १ ॥
काल जाल से कभी न छूटे ।
माया हद्द के पार न जाय ॥ २ ॥
षट पट में नित रहे भरमाई ।
करम धरम सँग रहे फँसाय ॥ ३ ॥
निज घट का है भेद नियारा ।
बिन सतगुरु वह कौन सुनाय ॥ ४ ॥
याते संत संग अब कीजे ।
उनके चरन में प्रीत बढ़ाय ॥ ५ ॥

राधास्वामी दया संग ले अपने ।
सहजहि उतरो भौ जल पार ॥ ५ ॥

॥ शब्द १२ ॥

ज्ञान तज भक्ती पंथ सम्हार ॥ टेक ॥
बाचक ज्ञान कुछ काम न आवे ।
मन में बढ़े थोथा अहंकार ॥ १ ॥
अंतर में कुछ असर न होवे ।
बाहर बातें करें लबार ॥ २ ॥
नास्तिक मत इन का तुम जानो ।
ख़बर न पाई कुल करतार ॥ ३ ॥
ब्रह्म मान अपने को बैठे ।
सच्चा मालिक दिया बिसार ॥ ४ ॥
मन इंद्री की गति नहिं जानी ।
भरम रहे वे माया लार ॥ ५ ॥
यह मत जाल बिछाया काला ।
बिद्यावान घेर लिये झाड़ ॥ ६ ॥
इनका संग करो मत कोई ।
जो तुम चाहो अपन उद्धार ॥ ७ ॥

गुरु भक्ती हित चित से धारो ।
राधास्वामी सरन सम्हार ॥ ८ ॥
सुरत शब्द की जुगत कमावो ।
तब होवे सच्चा निरवार ॥ ९ ॥
राधास्वामी मेहर से सुरत चढ़ावेँ ।
सहज उतारेँ भौजल पार ॥ १० ॥

॥ शब्द १३ ॥

गुरू बिन घट का भेद न पाय ॥टेक॥
षट शास्तर और बेद पुराना ।
पढ़ पढ़ बिरथा बैस बिताय ॥ १ ॥
काल जाल से कभी न छूटे ।
माया हद्द के पार न जाय ॥ २ ॥
घट पट में नित रहे भरमाई ।
करम धरम सँग रहे फँसाय ॥ ३ ॥
निज घट का है भेद नियारा ।
बिन सतगुरु वह कौन सुनाय ॥ ४ ॥
याते संत संग अब कीजे ।
उनके चरन में प्रीत बढ़ाय ॥ ५ ॥

भेद लेव मारग का उन से ।
प्रेम सहित उन जुगत कमाय ॥ ६ ॥
राधास्वामी सरन सम्हारो ।
मेहर से दें वे काज बनाय ॥ ७ ॥

वचन १२ प्रेम प्रकाश भाग दूसरा

॥ शब्द १ ॥

गुरु प्यारे नज़र करो मेहर भरी ॥ टेक ॥
मैं भई दासी तुम्हरे चरन की ।
सब तज तुम्हरे द्वारे पड़ी ॥ १ ॥
तुम्हरे चरन की ओट गही अब ।
काल करम से नाहिँ डरी ॥ २ ॥
जब से तुम्हरी सरना लीन्ही ।
माया ममता सकल जरी ॥ ३ ॥
प्रीत प्रतीत बढ़त गुरु चरनन ।
जग से छिन छिन सहज तरी ॥ ४ ॥
शब्द भेद ले सुरत लगाऊँ ।
सुन सुन धुन अब अधर चढ़ी ॥ ५ ॥

दरश दिखाय किया गुरु प्यारा ।
तन मन तज हुई आज छड़ी ॥ ६ ॥
राधास्वामी सतगुरु दीन दयाला ।
अब मो पै पूरन दया करी ॥ ७ ॥

॥ शब्द २ ॥

गुरु प्यारे चरन से लिपट रहूँ ॥टेक॥
दर्शन कर मन उमँगा भारी ।
छिन छिन तन मन वार धरूँ ॥ १ ॥
रूप अनूपम् बसा हिये में ।
मस्त हुई जग लाज तजूँ ॥ २ ॥
प्रीत लगी चरनों में भारी ।
सब तज उनकी सरन पड़ूँ ॥ ३ ॥
क्या ले अब मैं गुरू रिझाऊँ ।
निस दिन यही मैं सोच करूँ ॥ ४ ॥
राधास्वामी प्यारे रक्षक मेरे ।
अब जम से मैं नाहिँ डरूँ ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३ ॥

गुरु प्यारे चरन पर जाउँ बलिहार॥टेक॥

दया करी मोहिँ खैंच बुलाया।
सतसँग बचन सुनाये सार ॥ १ ॥
अपने चरन की प्रीत घनेरी।
(मेरे) हिये बसाई कर के प्यार ॥ २ ॥
दया करी घट भेद सुनाया।
दिन दिन दई परतीत सम्हार ॥ ३ ॥
छबि अनूप लख जब धरा ध्याना।
घट मैं निरखी बिमल बहार ॥ ४ ॥
राधास्वामी दयाल दया की न्यारी।
शब्द सुनाय उतारा पार ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४ ॥

गुरु प्यारे चरन मेरे प्रान अधार ॥ टेक ॥
क्या महिमा चरनन की गाऊँ।
जीव पकड़ उन उतरैं पार ॥ १ ॥
मैं तो बसाय रही उन उर मैं।
प्रीत सहित करूँ ध्यान सम्हार ॥ २ ॥
ध्यान धरत हुआ घट परकाशा।
सुनत रही अनहद झनकार ॥ ३ ॥

चरन सरन गुरु हियरे धारी ।
नित्त रहूँ गुरु दया निहार ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया चली अब घट में ।
सुन सुन धुन सुत हो गई सार ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५ ॥

गुरु प्यारे चरन मोहिँ लगे प्यारे ॥टेक॥
जब से राधास्वामी सरना लीन्ही ।
छुट गये करम भरम सारे ॥ १ ॥
मन और सुरत प्रेम रस पागे ।
जगत भोग तज हुए न्यारे ॥ २ ॥
आसा मनसा जग की त्यागी ।
संतगुरु चरन सीस धारे ॥ ३ ॥
सरन धार सुत अधर सिधारी ।
तीन लोक के गई पारे ॥ ४ ॥
क्या महिमा मैं राधास्वामी गाऊँ ।
कोटिन जीव लिये तारे ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६ ॥

गुरु प्यारे चरन हिये बस गये री ॥ टेक॥

भाग जगे सतसँग में आई ।
बचन सार गुरु रस लिये री ॥१॥
मन और सुरत उमँग कर आये।
धर प्रतीत गुरु चरन लये री॥२॥
प्रेम अंग ले चाली घट में ।
काल करम दोउ थक रहे री॥३॥
माया ममता त्याग दई अब।
मन इंद्री के बिकार दहे री॥४॥
धुन रस पाय सुरत मगनानी ।
दृढ़ कर राधास्वामी चरन गहे री॥५॥

॥ शब्द ७ ॥

गुरु प्यारे दया करो आज नई॥ टेक॥
मन और सुरत चढ़ाओ घट में।
निज स्वरूप का दरस दई ॥ १ ॥
शब्द रूप तुम्हरा अगम अपारा।
तिस से मिल आनंद लई ॥ २ ॥
नौ द्वारन में चैन न पाऊँ।
अनेक प्रकार के कष्ट सही ॥३॥

जब सुत चढ़ै अधर दस द्वारे।
शब्द अमी रस चाख चखी ॥४॥
राधास्वामी दया करो अब पूरी।
मैं ग़रीब तुम सरन पई ॥ ५ ॥

॥ शब्द ८ ॥

गुरु प्यारे सुनो फ़रियाद मेरी ॥ टेक॥
इस मन से मैं हार गई अब।
बचन सुने नहिँ चित्त धरी ॥१॥
फिर फिर मोहिँ जग में भरमावत।
भोग बासना नाहिँ जरी ॥ २ ॥
मन को मारो इन्द्री जारो।
आसा मनसा सकल हरी ॥ ३ ॥
करम काट निज घर पहुँचाओ।
सुफल होय मेरी देह नरी ॥ ४ ॥
राधास्वामी बिन कोइ नाहिँ सहाई।
उनके चरन लग आज तरी ॥ ५ ॥

॥ शब्द ९ ॥

गुरु प्यारे चरन पकड़े मज़बूत ॥ टेक॥

चरनन में नित प्रीत बढ़ातो ।
छोड़ दई जग की करतूत ॥ १ ॥
शब्द जुगत ले जूझूँ घट में ।
सहज करूँ बस मन का भूत ॥ २ ॥
गुरु बल सूरत अधर चढ़ाऊँ ।
धुन से लागे मेरा सूत ॥ ३ ॥
नभ को फोड़ गगन में धाऊँ ।
सैर करूँ आलम लाहूत ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर से आगे चालो ।
सतगुरु दरस मिला जाय हूत ॥ ५ ॥

॥ शब्द १० ॥

गुरु प्यारे चरन रचना की जान ॥टेक॥
आदि धार चेतन जो निकसी ।
उसने रची सब रचना आन ॥ १ ॥
वही धार गुरु चरन पिछानो ।
वही पिंड ब्रह्मंड समान ॥ २ ॥
उसी धार का सकल पसारा ।
वोही धुन और नाम कहान ॥ ३ ॥

जुगती ले गुरु से सुत अपनी ।
उसी धार को पकड़ चढ़ान ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर करें जब अपनी ।
निज स्वरूप घट में दरसान ॥ ५ ॥

॥ शब्द ११ ॥

गुरु प्यारे चरन का लाऊँ ध्यान ॥टेक॥
मन और सुरत जमा हर द्वारे ।
धुन घंटा सुन अधर चढ़ान ॥ १ ॥
त्रिकुटी धुन सुन गगन सिधारूँ ।
लाल रंग जहँ सूर दिखान ॥ २ ॥
सुन की धुन सुन चढ़ी सुत आगे ।
मानसरोवर किये अस्नान ॥ ३ ॥
गुरु सँग गई महा सुन पारा ।
मुरली धुन सुनी गुफा ठिकान ॥ ४ ॥
सत्त शब्द धुन डोर पकड़ के ।
सतगुरु रूप करी पहिचान ॥ ५ ॥
अलख अगम धुन सुनती चाली ।
धाम अनामी निरखा आन ॥ ६ ॥

शब्द धार चढ़ निज घर आई ।
राधास्वामी चरन समान ॥ ७ ॥

॥ शब्द १२ ॥

गुरु प्यारे बचन सुन हो गई दीन ॥टेक॥
जग ब्योहार असार पिछाना ।
मन इन्द्री को ठगिया चीन्ह ॥ १ ॥
गुरु सतसँग की महिमा जानी ।
चरनन में हुई दीन अधीन ॥ २ ॥
शब्द उपदेश निवारनहारा ।
गुरु से लिया मन धार यक़ीन ॥ ३ ॥
नित अभ्यास करूँ मैं उमँग से ।
सुन सुन धुन अब मन हुआ लीन ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरन पकड़ घर चाली ।
मेहर दया उन गहिरी कीन ॥ ५ ॥

॥ शब्द १३ ॥

गुरु प्यारे सुनो इक अरज़ मेरी ॥ टेक ॥
जब से दर्शन पायो तुम्हारा ।
चरनन में रहे सुरत अड़ी ॥ १ ॥

मन भी मोह रहा दर्शन में ।
नैनन में छबि रहे भरी ॥ २ ॥
पर बिन दर्शन शब्द स्वरूपा ।
मन और सुत नहिं शांति धरी ॥ ३ ॥
मेहर से देव अंतर दीदारा ।
चिंता बिपता सकल हरी ॥ ४ ॥
तुम्हरी दया का वार न पारा ।
अब क्यों एती देर करी ॥ ५ ॥
हे दयाल मेरी अरज़ी मानो ।
मैं हठ कर अब चरन पड़ी ॥ ६ ॥
राधास्वामी प्यारे परम उदारा ।
गाऊँ तुम गुन घड़ी घड़ी ॥ ७ ॥

॥ शब्द १४ ॥

गुरु प्यारे की छबि पर बल बल जाउँ ॥टेक॥
रूप अनूप देख हरखानी ।
सोभा वाकी कस कह गाउँ ॥ १ ॥
प्रीत घसी अब हिये अंतर में ।
निस दिन रूपहि रूप धियाउँ ॥२॥

तन मन से हुइ गुरू की दासी ।
गुरू गुरू मैं गुरू मनाउँ ॥ ३ ॥
कौन सके गुरू महिमाँ गाई ।
कहत कहत मैं कहत लजाउँ ॥ ४ ॥
अचरज दरस दिखाया प्यारे ।
दया मेहर अब किसे जनाउँ ॥ ५ ॥
वाह वाह मेरे गुरू दयाला ।
चरनन में नई प्रीत जगाउँ ॥ ६ ॥
मैं तो निबल निकाम अजाना ।
यही हवस मन माहिँ समाउँ ॥ ७ ॥
क्या सेवा कर गुरू रिझाउँ ।
भक्ति भाव क्या क्या दिखलाउँ ॥ ८ ॥
दया करो राधास्वामी गुरू प्यारे ।
मैं अब राधास्वामी राधास्वामी गाउँ ॥९॥

॥ शब्द १५ ॥

गुरू प्यारे के नैना ताक रहूँ ॥ टेक ॥
दृष्टि जोड़ गुरू नैन कँवल में ।
सीतल होय धुन शब्द सुनूँ ॥ १ ॥

सुरत लगाय धसूँ तिल द्वारे।
घट मैं दौरा करत रहूँ ॥ २ ॥
घंटा संख सुनूँ नभपुर मैं।
जोत रूप लख गगन चढ़ूँ ॥ ३ ॥
गुरु स्वरूप का दर्शन करके।
सुन मैं हंसन संग मिलूँ ॥ ४ ॥
भँवरगुफा लख सतपुर धाऊँ।
अलख अगम के पार बसूँ ॥ ५ ॥
राधास्वामी प्यारे मेरा भाग जगाया।
सरन धार उन चरन पड़ूँ ॥ ६ ॥

॥ शब्द १६ ॥

गुरु प्यारे का मुखड़ा झाँक रहूँ ॥टेक॥
अद्भुत छबि निरखत हुई मोहित।
हरख हरख दृष्टि तान रहूँ ॥ १ ॥
लगन लगी गाढ़ी गुरु चरनन।
दर्शन रस ले मगन रहूँ ॥ २ ॥
बचन सार गुरु सुने सतसँग मैं।
अब तन मन की ब्याध हरूँ ॥ ३ ॥

शब्द संग नित सुरत लगाऊँ ।
घट में धुन झनकार सुनूँ ॥ ४ ॥
रूप सुहावन राधास्वामी प्यारे ।
ध्यान धरत घट माहिँ लखूँ ॥ ५ ॥

॥ शब्द १७ ॥

गुरु प्यारे के दर्शन करत रहूँ ॥टेक ॥
दर्शन कहो चाहे जीव अधारा ।
बिन दर्शन अति बिकल रहूँ ॥ १ ॥
दर्शन कर मोहिँ मिलत अनंदा ।
बिन दर्शन मैं तड़प रहूँ ॥ २ ॥
दर्शन कर दुख होवत दूरा ।
बिन दर्शन मैं दुखित रहूँ ॥ ३ ॥
दर्शन कर सुत मन थिर आवैं ।
बिन दर्शन मैं बिपत सहूँ ॥ ४ ॥
नित प्रति दर्शन देव राधास्वामी ।
बार बार तुम चरन पड़ूँ ॥ ५ ॥

॥ शब्द १८ ॥

गुरु प्यारे की बतियाँ सुनत रहूँ ॥टेक॥

सुन सुन बतियाँ हुई मतवाली ।
चरन पकड़ अब लिपट रहूँ ॥ १ ॥
जग का भय और भाव बिसारा ।
उमँग उमँग गुरु सेव करूँ ॥ २ ॥
गुरु सतसंगत लागी प्यारी ।
प्रेमी जन सँग मेल करूँ ॥ ३ ॥
शब्द जुगल गुरु दीन्ह बताई ।
प्रीत लाय धुन गगन सुनूँ ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर करी अब न्यारी ।
उनके चरन में सुरत भरूँ ॥ ५ ॥

॥ शब्द १९ ॥

गुरु प्यारे की महिमा क्या कहूँ गाय ॥टेक॥
नित नई लीला बिमल बिलासा ।
देख देख मन अति हरखाय ॥ १ ॥
जग कारज की सुध बिसरानी ।
रैन दिवस आनँद बरखाय ॥ २ ॥
दर्शन शोभा कस कहुँ गाई ।
मन और सूरत रहे लुभाय ॥ ३ ॥

जान और प्रान वार देउँ गुरु पर।
जस मोपे मेहर उन करी बनाय ॥ ४ ॥
कुमत हटाय सुमत अब दीन्ही।
मन और सूरत शब्द लगाय ॥ ५ ॥
माया के सब बिघन निकारे।
काल करम भी दूर पराय ॥ ६ ॥
राधास्वामी चरन अधार जिऊँ मैं।
राधास्वामी रूप रहूँ नित ध्याय ॥ ७ ॥

॥ शब्द २० ॥

गुरु प्यारे की सरनी जो जन आय ॥टेक॥
सतसँग मैं गुरु लेहैं लगाई।
अमृत रूपी बचन सुनाय ॥ १ ॥
करम भरम की टेक छुड़ावैं।
सुरत शब्द मारग दरसाय ॥ २ ॥
उमँग जगाय करावैं सेवा।
मन और सूरत शब्द लगाय ॥ ३ ॥
जस जस मेहर करैं गुरु प्यारे।
तस तस सूरत अधर चढ़ाय ॥ ४ ॥

राधास्वामी मेहर करें फिर अपनी ।
इक दिन दें निज धाम लखाय ॥ ५ ॥

॥ शब्द २१ ॥

गुरु प्यारे का प्यारी सुन उपदेस ॥टेक॥
निज घर का वे भेद सुनावें ।
तिरलोकी जानो परदेस ॥ १ ॥
शब्द संग तुम सुरत चढ़ाओ ।
छोड़ चलो यह माया देस ॥ २ ॥
तरुन अवस्था मुफ़ बिताई ।
सेत हुए अब सारे केस ॥ ३ ॥
अब चेतो गुरु बचन सम्हालो ।
सुफल होय तेरी सारी बैस ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरनन धर परतीती ।
हिये सें धारो भक्ती भेस ॥ ५ ॥
तब कारज तेरा होवे पूरा ।
काल करम का छूटै लेस ॥ ६ ॥
राधास्वामी धाम करे बिस्रामा ।
जहाँ परम सुख नाहीं क्लेश ॥ ७ ॥

॥ शब्द २२ ॥

गुरु प्यारे की सरनी आवो धाय॥टेक॥
तन मन सँग नित रहो बँधानी।
फिर फिर जन्मो जग मैं आय ॥ १॥
देह धार नित दुख सुख सहना।
निकसन की कोइ जुगत न पाय॥ २॥
याते प्यारी कहना मानो।
सतगुरु से लो मेल मिलाय ॥ ३ ॥
सतसँग करो पड़ो उन चरनन।
दिन दिन प्रीत प्रतीत बढ़ाय ॥ ४ ॥
सरन धार करो शब्द कमाई।
राधास्वामी दें तेरा काज बनाय ॥ ५ ॥

॥ शब्द २३ ॥

गुरु प्यारे की प्यारी मानो बात ॥टेक॥
सतगुरु हैं हितकारी तेरे।
और वोही हैं पित और मात ॥ १ ॥
दया मेहर से बचन सुनावें।
उनका सतसँग कर दिन रात ॥ २ ॥

मन माया ने घेरा डाला ।
जीव की करते बहु बिधि घात ॥ ३ ॥
बिन सतगुरु कोइ बचन न पावे ।
दृढ़ कर पकड़ो उनका हाथ ॥ ४ ॥
वे दयाल तोहि लेहैं सम्हारी ।
काल करम से टूटे नात ॥ ५ ॥
अपना बल दे भजन करावें ।
सुरत शब्द मारग दरसात ॥ ६ ॥
राधास्वामी धाम लखावें ।
धुन सँग सूरत अधर चढ़ात ॥ ७ ॥

॥ शब्द २४ ॥

गुरु प्यारे के सँग चलो घर की ओर ॥टेक॥
इस नगरी में सुख नहिं चैना ।
भाग चलो सब बंधन तोड़ ॥ १ ॥
जग जीवन की प्रीत है काची ।
तू सतगुरु से नाता जोड़ ॥ २ ॥
वोही हैं सच्चे हितकारी ।
वोही हैं तेरे बंदी छोड़ ॥ ३ ॥

घट में तुझ से करावें करनी ।
मन और सूरत धुन सँग मोड़ ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर से जाय भौ पारा ।
काल करम का माथा फोड़ ॥ ५ ॥

॥ शब्द २५ ॥

गुरु प्यारे का सतसँग करो दिन रात ॥टेक॥
सुन सुन बचन मगन होय मन में ।
चरनन में नित प्रीत बढ़ात ॥ १ ॥
दरस अमी रस पीवत प्यारी ।
तन मन को सब सुद्ध भुलात ॥ २ ॥
शब्द भेद ले चालत घट में ।
मधुर मधुर धुन शब्द सुनात ॥ ३ ॥
गुरु गुन गावत मन हुलसाना ।
जग भय भाव अब चित न समात ॥४॥
राधास्वामी मेहर से जागी सूरत ।
सुन सुन धुन अब अधर चढ़ात ॥ ५ ॥

॥ शब्द २६ ॥

गुरु प्यारे की प्यारी कर परतीत ॥टेक॥

भाव सहित सतसँग कर उनका।
धार हिये में गहिरी प्रीत ॥ १ ॥
सुरत शब्द की जुगत बतावें।
और सिखावें भक्ती रीत ॥ २ ॥
करम भरम से खूँट छुड़ावें।
और करें तेरा निरमल चीत ॥ ३ ॥
जो तू गुरु के बचन सम्हारे ॥
जावे निज घर भौजल जीत ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरन पकड़ ले दृढ़कर।
वोही हैं तेरे सच्चे मीत ॥ ५ ॥

॥ शब्द २७ ॥

गुरु प्यारे की प्रीत प्यारी हिरदे धार ॥टेक॥
जगत मोह दुखदाई जानो।
मन से उसको तू तज डार ॥ १ ॥
कुटुँब जगत की प्रीत न साँची।
स्वारथ सँग सब लगे लबार ॥ २ ॥
निज घर की अब सुद्ध सम्हालो।
शब्द भेद ले गुरु से सार ॥ ३ ॥

प्रेम सहित उन जुगत कमाओ ।
घट में सुन अनहद झनकार ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर से पार लगावें ।
उनके चरन का कर आधार ॥ ५ ॥

॥ शब्द २८ ॥

गुरु प्यारे के चरनों की हो जा धूर ॥टेक॥
दीन होय गुरु सन्मुख आवो ।
जग परमारथ जानो कूड़ ॥ १ ॥
देवी देवा भाव बिसारो ।
साखा तज अब पकड़ो मूर ॥ २ ॥
गुरु दयाल तोहि जुगत बतावें ।
घट में सुनावें अनहद तूर ॥ ३ ॥
प्रेम सहित जब जुगत कमावे ।
देखे नभ में अद्भुत नूर ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरन सरन गहो दृढ़कर ।
मेहर करें तुझ पर भरपूर ॥ ५ ॥

॥ शब्द २९ ॥

गुरु प्यारे की निंदा मत कर यार ॥टेक॥

निंदा कर क्यों पाप बढ़ावे।
वृथा उठावे करमन भार ॥ १ ॥
यह करतूत न जावे ख़ाली।
दुक्ख सहे तू बारम्बार ॥ २ ॥
जो कुल जीवन के हितकारी।
तिन को औगुन धरे गँवार ॥ ३ ॥
अंत समय तेरे वेही रच्छक।
जस तस उन में लाओ प्यार ॥ ४ ॥
राधास्वामी नाम सुमिर ले अबके।
राधास्वामी लैं फिर तोहि सम्हार ॥५॥

॥ शब्द ३० ॥

गुरु प्यारे से मिलना उमँग उमँग ॥ टेक॥
चित दे सुनो गुरू के बचना।
सीखो उनसे भक्ती ढंग ॥ १ ॥
करम भरम सब दूर निकारो।
छोड़ो सबहि कुसंग ॥ २ ॥
सुरत लगाय सुनो घट धुन को।
चढ़ै प्रेम का रंग ॥ ३ ॥

गुरु का बल ले चढ़ो गगन को ।
काल कर्म रहे दंग ॥ ४ ॥
दीन हीन मोहिं चीन्ह दया से ।
राधास्वामी मिलाया अपने अंग ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३१ ॥

गुरु प्यारे से प्यारी नाता जोड़ ॥ टेक ॥
या जग में साँचा सुख नाहीं ।
काल करम का मच रहा शोर ॥ १ ॥
मन इन्द्री लागे भोगन में ।
काम क्रोध का भारी ज़ोर ॥ २ ॥
याते बेग गिरो गुरु चरनन ।
सतसँग करो कपट को छोड़ ॥ ३ ॥
दीन होय ले शब्द उपदेशा ।
सुन ले घट में अनहद घोर ॥ ४ ॥
दया होय तब चढ़ो अधर में ।
राधास्वामी चरनन पावै ठौर ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३२ ॥

गुरु प्यारे से प्यारी मत कर रोस ॥ टेक ॥

तू अनसमझ चेत नहिं लावे ।
भोगन संग रहे बेहोश ॥ १ ॥
गुरु हर दम तेरी दया बिचारें ।
हँगता ममता लेवें खोस ॥ २ ॥
मसलहत उनकी तू नहिं समझे ।
उनको लगावे उलटा दोष ॥ ३ ॥
अब ही चेत प्रीत करो उनसे ।
काम न आवे फिर अफ़सोस ॥ ४ ॥
धर परतीत सरन गहो दृढ़ कर ।
राधास्वामी करें तेरा सब बिधि पोष ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३३ ॥

गुरु प्यारे से माँगो भगती दान ॥ टेक ॥
दीन होय गिर गुरु चरनन में ।
करम भरम तज और अभिमान ॥ १ ॥
सतसँग कर मानो गुरु बचना ।
घट में परखो शब्द निशान ॥ २ ॥
प्रीत प्रतीत धार हिये अंतर ।
सेवा करो उमँग से आन ॥ ३ ॥

गुरु को परशन करले प्यारी ।
तब घट धुन में सुरत लगान ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरन प्रीत बढ़े छिन छिन ।
घट में बिमल बिलास दिखान ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३४ ॥

गुरु प्यारे से प्यारी लगन लगाय ॥ टेक ॥
जग का मोह छुड़ावें दिन दिन ।
भोग बासना सहज हटाय ॥ १ ॥
वचन सुना तेरे भरम मिटावें ।
मन और सुरत देहें जगाय ॥ २ ॥
घट में सहज करावें करनी ।
सुरत शब्द की जुगत बताय ॥ ३ ॥
उमँग जगाय करावें सेवा ।
दिन दिन प्रीत प्रतीत बढ़ाय ॥ ४ ॥
इक दिन मेहर करें गुरु पूरी ।
राधास्वामी पद में दें पहुँचाय ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३५ ॥

गुरु प्यारे से मत कर तू अभिमान ॥ टेक ॥

जो तू उनसे करे अहंकारा।
मुफ़ सहे भारी नुक़सान ॥ १ ॥
वे नित करते जीव उबारा।
उनकी महिमा बेद न जान ॥ २ ॥
जो तू चाहे अपन उधारा।
प्रीत करो उन चरनन आन ॥ ३ ॥
बचन सुनो उपदेश सम्हारो।
गुरु स्वरूप का लावो ध्यान ॥ ४ ॥
शब्द शब्द धुन सुन सुन घट में।
राधास्वामी की कर पहिचान ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३६ ॥

गुरु प्यारे के बचन अमृत की धार ॥ टेक ॥
सुन सुन मैं तिरपत हुई मन में।
हियरे उमगा अधिक पियार ॥ १ ॥
सतसँग करत भर्म सब नासे।
और इष्ट सब दिये बिसार ॥ २ ॥
दिन दिन बढ़त प्रतीत चरन में।
नित प्रति दर्शन करूँ सम्हार ॥ ३ ॥

शब्द जुगत ले करूँ अभ्यासा ।
घट में सुनूँ अनहद झनकार ॥ ४ ॥
ऐसा सतसँग मिला दया से ।
राधास्वामी गुन गाऊँ हरबार ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३७ ॥

गुरु प्यारे का शब्द सुनो धर प्यार ॥ टेक ॥
जो जुगती गुरु देयँ बताई ।
उसका करो अभ्यास सम्हार ॥ १ ॥
शब्द गाज रहा घट में हर दम ।
वाहि सुनो हिये परतीत धार ॥ २ ॥
इसी शब्द ने रची त्रिलोकी ।
यही शब्द करे जीव उबार ॥ ३ ॥
याते दृढ़ कर पकड़ो धुन को ।
और जुगत सब देव बिसार ॥ ४ ॥
शब्द शब्द को सुनो अधर चढ़ ।
मन माया से गहो किनार ॥ ५ ॥
राधास्वामी सरन धार अब मन में ।
पहुँचो इक दिन धुर दरबार ॥ ६ ॥

॥ शब्द ३८ ॥

गुरु प्यारे का ले तू नाम सम्हार ॥ टेक ॥
राधास्वामी धाम का बाँध निशाना ।
राधास्वामी नाम सुमिर हर बार ॥ १ ॥
यही नाम निज नाम पिछानो ।
और नाम सब तज दो झाड़ ॥ २ ॥
इसी नाम का लेकर भेदा ।
सुन सुन धुन घट में चढ़ यार ॥ ३ ॥
प्रीत प्रतीत धार अब मन में ।
राधास्वामी नाम का कर आधार ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया संग ले अपने ।
सहज चलो भौसागर पार ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३९ ॥

गुरु प्यारे के सतसँग में तू जाग ॥ टेक ॥
दर्शन करो भाव से उनके ।
बचन सुनो धर हिये अनुराग ॥ १ ॥
जो तू गुरु के बचन सम्हारे ।
जाग उठे तेरा सोता भाग ॥ २ ॥

मन इन्द्रिन का मुख अब मोड़ो ।
बिषयन से तू कर बैराग ॥ ३ ॥
तब सुत तेरी पकड़े धुन को ।
घट में सुने तू अनहद राग ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरन पकड़ के ।
जैसे बने तू जग से भाग ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४० ॥

गुरु प्यारे की अस्तुत गाओ री ॥ टेक ॥
धर बिस्वास गुरू का प्यारी ।
चरन सरन में धाओ री ॥ १ ॥
जो कुछ दया करें गुरु प्यारे ।
चित से कभी न भुलाओ री ॥ २ ॥
भूल भरम को दूर निकारो ।
प्रेम चरन में लाओ री ॥ ३ ॥
नित्त भजन कर गुरु प्यारे का ।
धुन में सुरत लगाओ री ॥ ४ ॥
छिन २ मेहर परख सतगुरु की ।
राधास्वामी चरन समाओ री ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४१ ॥

गुरु प्यारे का सँग कर जग से भाग ॥टेक॥
जब लग मन अटका रहे जग में ।
बढ़े न चित में बिमल अनुराग ॥ १ ॥
काम क्रोध मद दूर बहावो ।
छोड़ देव संगत मन काग ॥ २ ॥
निरमल चित होय कर सतसंगा ।
गुरु चरनन में लाओ राग ॥ ३ ॥
शब्द संग तुम सुरत सँवारो ।
उमँग उमँग घट धुन में लाग ॥ ४ ॥
प्रीत प्रतीत जगाय हिये में ।
राधास्वामी सँग नित खेलो फाग ॥५॥

॥ शब्द ४२ ॥

गुरु प्यारे से प्यारी मत कर मान ॥टेक॥
सब को ख़्वार करत अभिमाना ।
परमारथ की करता हान ॥ १ ॥
जब लग साँचा दीन न होवे ।
दया मेहर नहिँ लेवे आन ॥ २ ॥

दर्शन में कुछ रस नहिं पावे ।
बचन सुने नहिं देकर कान ॥ ३ ॥
याते प्यारी अबही समझो ।
गुरु चरनन पड़ो तज अभिमान ॥ ४ ॥
तेरा काज उन्हीं से होगा
मत भटके तू अनेक ठिकान ॥ ५ ॥
सेवा कर तन मन धन अरपो ।
सरधा लाय धरो उन ध्यान ॥ ६ ॥
संसै भरम बिसारो चित से ।
हित से सूरत शब्द लगान ॥ ७ ॥
अपने जीव की दया बिचारो ।
नहिं भटको तुम चारो खान ॥ ८ ॥
राधास्वामी तेरा काज बनावें ।
पहुँचावें तोहि अधर ठिकान ॥ ९ ॥

॥ शब्द ४३ ॥

गुरु प्यारे की मानो बात सही ॥टेक॥
उनके बचन अनुभवी जानो ।
तू ग्रन्थन में अटक रही ॥ १ ॥

बुध चतुराई काम न आवे ।
दीन होय गुरु चरन गही ॥ २ ॥
करनी कर परखो उन कहनी ।
सार वस्तु तब हाथ लई ॥ ३ ॥
विद्यावान न पावें भेदा ।
करम भरम में भटक रही ॥ ४ ॥
प्रीत सहित करो शब्द कमाई ।
तब जागे परतीत नई ॥ ५ ॥
सेवा कर आरत कर गुरु की ।
उमँग उमँग उन चरन पई ॥ ६ ॥
राधास्वामी मेहर से लें अपनाई ।
निज चरनन की सरन दई ॥ ७ ॥

॥ शब्द ४४ ॥

गुरु प्यारे के संग करूँ आज बिलास ॥टेक॥
नई नई सेवा धार उमँग से ।
घट में नित प्रति बढ़त हुलास ॥ १ ॥
उमँग उमँग कर आरत धारूँ ।
देखूँ घट में अजब प्रकाश ॥ २ ॥

मेहर भरी दृष्टी गुरु डारी ।
पूरन हुई मेरे मन की आस ॥ ३ ॥
मन और सुरत सिमट कर दोऊ ।
गगन ओर चढ़ते निस बास ॥ ४ ॥
राधास्वामी दयाल गुरु प्यारे के ।
चरन मिले निज सुख की रास ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४५ ॥

गुरु प्यारे से दिन दिन प्रीत बढ़ाय ॥टेक॥
लोक लाज और जगत भाव में ।
और भोगन सँग रहा भुलाय ॥ १ ॥
साधारन करे शब्द अभ्यासा ।
मन माया की परख न पाय ॥ २ ॥
याते होय हुशियार जगत से ।
गुरु चरनन में प्रीत जगाय ॥ ३ ॥
जस जस प्रीत बढ़े गुरु चरनन ।
घट में पावे रस अधिकाय ॥ ४ ॥
मन माया का बंधन छूटे ।
सुन सुन धुन सुत गगन चढ़ाय ॥ ५ ॥

जोत उजियार लखे घट माहीँ ।
सूर चंद्र निरखत हरखाय ॥ ६ ॥
मुरली बीन सुनत हरखानी ।
राधास्वामी के दर्शन पाय ॥ ७ ॥

॥ शब्द ४६ ॥

गुरु प्यारे से ले घट पाट खुलाय ॥टेक॥
सतसँग करो बचन उर धारो ।
दर्शन करो मन सुरत लगाय ॥ १ ॥
गुरु आज्ञा हित चित से मानो ।
जुगत कमाओ उमँग जगाय ॥ २ ॥
प्रीत लाओ गुरु चरनन पूरी ।
सरन गहो परतीत पकाय ॥ ३ ॥
घट मैं करो अभ्यास उमँग से ।
शब्द संग नित सुरत लगाय ॥ ४ ॥
राधास्वामी होय प्रसन्न मेहर से ।
तिल पटके दें पार चढ़ाय ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४७ ॥

गुरु प्यारे की लीला देख नई ॥ टेक ॥

दीन होय जो सरनी आवे ।
ताको गुरु अपनाय लई ॥ १ ॥
अगिनत जीव अस लिये हैं उबारी ।
उन मेहर की महिमा कौन कही ॥२॥
मेहर दया जीवन पर भारी ।
सहज सबन को तार दई ॥ ३ ॥
कोई दिन सतसंग करा के ।
शब्द का सहज उपदेश दई ॥ ४ ॥
जैसी बने तैसी करनी करावैं ।
काल करम से छुटाय लई ॥ ५ ॥
ऐसी दया कोई नहिँ कीनी ।
याते सब जिव कर्म बही ॥ ६ ॥
राधास्वामी दयाल नई जुगत उपाई ।
सहज सुरत भी पार गई ॥ ७ ॥
मैं गुन उनके कैसे गाऊँ ।
हार हार उन चरन पई ॥ ८ ॥

॥ शब्द ४८ ॥

गुरु प्यारे से मिल हुई आज निहाल ॥टेक॥

जब लग गुरु सतसँग नहिँ पाया।
फँसी रही माया के जाल ॥ १ ॥
मेहर हुई गुरु दर्शन पाया।
छूटा काल करम जंजाल ॥ २ ॥
सुरत लगी घट में अब चढ़ने।
निरखा अद्भुत जोत जमाल ॥ ३ ॥
मस्त हुई सुत आगे चाली।
त्रिकुटी में लखा सूरज लाल ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया गई सतपुर में।
दंग रहे काल और महाकाल ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४९ ॥

गुरु प्यारे के सँग प्यारी चलो निज धाम ।टेक।
यह तो देश तुम्हारा नाहीं।
नहिँ पावे यहाँ तू आराम ॥ १ ॥
माया भारी जाल बिछाया।
घेरे जीव स्वास और श्राम ॥ २ ॥
बिन गुरु दया छुटे नहिँ कोई।
गुरु के चरन लो दृढ़ कर थाम ॥ ३ ॥

वे दयाल तोहि लेहैं उबारी ।
प्रीत सहित जप गुरु का नाम ॥ ४ ॥
मन माया के बिघन हटाकर ।
तोहि लखावैं शब्द मुक़ाम ॥ ५ ॥
प्रीत प्रतीत जगा तेरे हिये में ।
धुन में सुरत लगावैं ताम ॥ ६ ॥
उनकी दया का करो भरोसा ।
राधास्वामी करैं तेरा पूरन काम ॥ ७ ॥

॥ शब्द ५० ॥

गुरु प्यारे के सँग प्यारी सुरत धुलाय ॥टेक॥
जनम जनम की भूली सूरत ।
भोगन सँग नित मैल भराय ॥ १ ॥
काम क्रोध की कीचड़ सानी ।
मन इन्द्री सँग रही लिपटाय ॥ २ ॥
बिन सतसंग मैल नहिं छूटै ।
याते सुनो बचन गुरु आय ॥ ३ ॥
शब्द संग माँजो मन सूरत ।
और ध्यान गुरु रूप लगाय ॥ ४ ॥

राधास्वामी दया दृष्ट से हेरें ।
तब सुत निरमल होय घर जाय ॥ ५॥

॥ शब्द ५१ ॥

गुरु प्यारे से करना प्रीत ज़रूर ॥टेक॥
बिन गुरु भक्ति कुमत नहिं छूटे ।
बिन सतसंग न मन होय चूर ॥ १ ॥
याते भक्तिहि भक्ति कमाओ ।
गुरु चरनन की हो जा धूर ॥ २ ॥
दया करें गुरु दें उपदेशा ।
घट में सुन फिर अनहद तूर ॥ ३ ॥
काल करम को काढ़ निकारें ।
गुरु बल मन होय घट में सूर ॥ ४ ॥
मन और सुरत चढ़ें तब घट में ।
राधास्वामी करें तेरा कारज पूर ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५२ ॥

गुरु प्यारे करें आज जगत उद्धार ॥टेक॥
जीवन को अति दुखी देख कर ।
उमँगी दया जाका वार न पार ॥ १ ॥

नर स्वरूप धर जग मैं आये ।
भेद सुनाया घर का सार ॥ २ ॥
दीन होय जो चरनन लागे ।
उन जीवन को लिया सम्हार ॥ ३ ॥
बाक़ी जीव जंतु पर जग मैं ।
मेहर दृष्ट करी गुरू दयार ॥ ४ ॥
जस तस उनका काज बनाया ।
अपनी दया से किरपा धार ॥ ५ ॥
कोई जीव ख़ाली नहिँ छोड़ा ।
सब पर मेहर की दृष्टी डार ॥ ६ ॥
कुल मालिक राधास्वामी प्यारे ।
जीव जंतु सब लीन्हे तार ॥ ७ ॥
कौन सके उन महिमा गाई ।
शेष महेश रहे सब हार ॥ ८ ॥
दोउ कर जोर करूँ मैं बिनती ।
शुकर करूँ मैं बारम्बार ॥ ९ ॥
राधास्वामी सम समरथ नहिँ कोई ।
राधास्वामी करैं अस दया अपार ॥१०॥

मैं बालक उन सरन अधीना ।
चरन लगाया मोहिँ कर प्यार ॥ ११ ॥

॥ शब्द ५३ ॥

गुरु प्यारे को प्यारी ले पहिचान ॥ टेक ॥
वोही हैं तेरे साँचे मीता ।
वही हैं चेतन पुरुष सुजान ॥ १ ॥
वही हैं बंद छुड़ावन हारे ।
वही सच्चे हितकारी जान ॥ २ ॥
बचन सुनो उन हिये धर प्यारा ।
आज्ञा उनकी चित से मान ॥ ३ ॥
अंतरमुख करो शब्द कमाई ।
गुरु स्वरूप का धारो ध्यान ॥ ४ ॥
प्रीत प्रतीत बढ़ाओ दिन दिन ।
गुरु प्रसन्नता लेवो आन ॥ ५ ॥
सहज सहज निरमल होय सूरत ।
शब्द शब्द सँग अधर चढ़ान ॥ ६ ॥
दया करैं जब राधास्वामी ।
निज घर अपने जाय बसान ॥ ७ ॥

॥ शब्द ५४ ॥

गुरु प्यारे के सँग मन माँजो आय ॥टेक॥
माया संग भुलाना भारी
बिषयन मेँ रहा अधिक फसाय ॥ १ ॥
करम धरम सँग हुआ बावरा ।
देवी देवा रहा अटकाय ॥ २ ॥
जब लग सतसँग गुरु नहिँ धारे ।
समझ बूझ निरमल नहिँ पाय ॥ ३ ॥
याते चेत सुनो गुरु बचना ।
और अंतरमुख शब्द कमाय ॥ ४ ॥
तब मन निश्चल चित होय निरमल ।
भजन करत घट धुन रस पाय ॥ ५ ॥
गुरु बल चढ़े अधर मेँ सूरत ।
मगन होय निज भाग सराय ॥ ६ ॥
राधास्वामी दया मेहर ले साथा ।
सहज सहज सुत निज घर जाय ॥७॥

॥ शब्द ५५ ॥

गुरु प्यारे सिखावैँ भक्ती रीत ॥ टेक ॥

निरमल भक्ति रीत है झीनी ।
कौन सिखावे बिन गुरु मीत ॥ १ ॥
कुल मालिक का भेद सुना कर ।
चरन कँवल मैं लगावैं प्रीत ॥ २ ॥
मालिक से मालिक को चाहे ।
यही है निरमल भक्ती रीत ॥ ३ ॥
और चाह सब दूर बहावो ।
चरन गहो तज माया तीत ॥ ४ ॥
गुरु सतगुरु मालिक को जानो ।
वेही हैं संत और वेही अतीत ॥ ५ ॥
धर परतीत करो दृढ़ प्रीती ।
त्यागो जग की चाल अनीत ॥ ६ ॥
शब्द संग मन सुरत चढ़ाओ ।
सतगुरु बल धर अपने चीत ॥ ७ ॥
राधास्वामी मेहर से निज घर जावो ।
काल करम और माया जीत ॥ ८ ॥

॥ शब्द ५६ ॥

गुरु प्यारे के सँग चलो हे मन यार ॥ टेक॥

निज घर की वह राह बतावैं।
सुरत शब्द की जुगती सार ॥ १ ॥
राधास्वामी चरनन प्रीत बढ़ावैं।
घट में सुनावैं धुन झनकार ॥ २ ॥
परचे दे परतीत दृढ़ावैं।
बचन सुना करैं हिये सिंगार ॥ ३ ॥
मन के मैल बिकार निकारैं।
भोग बासना काटैं झाड़ ॥ ४ ॥
अस करनी कहो कौन करावे।
बिन गुरु सतगुरु परम उदार ॥ ५ ॥
निरमल होय सुत चढ़ै अधर में।
मगन होय लख बिमल बहार ॥ ६ ॥
परम बिलास मिला निज घर में।
राधास्वामी रूप निहार ॥ ७ ॥

॥ शब्द ५७ ॥

गुरु प्यारे ने दी मेरी सुरत जगाय ॥ टेक ॥
किरपा कर सतसँग में खैंचा।
दया भरे मोहिं बचन सुनाय ॥ १ ॥

ध्यान धरत मन रूप समाना ।
घट मैं रस पावत हरखाय ॥ २ ॥
निज घर का दिया भेद बताई ।
सुरत शब्द मैं दीन्ह लगाय ॥ ३ ॥
सुन सुन धुन हिये होत अनंदा ।
उमँग सहित नित जुगत कमाय ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया परख अंतर मैं ।
छिन छिन अपना भाग सराय ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५८ ॥

गुरु प्यारे के सँग प्यारी खेलो फाग ॥टेक॥
प्रेम रंग ले खेलो होली ।
आसा मन्सा जग की त्याग ॥ १ ॥
मोह नींद मैं सब जग सोता ।
तू सतसँग मैं गुरु के जाग ॥ २ ॥
मन इन्द्री और सुरत समेटो ।
उमँग उमँग गुरु चरनन लाग ॥ ३ ॥
मेहर दया से शब्द सुनावैं ।
दिन दिन बढ़े घट मैं अनुराग ॥४॥

राधास्वामी चरनन जाय समाई ।
जाग उठा मेरा अचरज भाग ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५९ ॥

गुरु प्यारे करो अब मेहर बनाय ॥टेक॥
मैं तो अजान लिपट रही जग में ।
सतसँग बचन न चित ठहराय ॥ १ ॥
सुरत शब्द की जुगती भारी ।
सो भी मुझ से गई न कमाय ॥ २ ॥
मैं तो सब बिधि हीन अधीनी ।
चरन सरन गही तुम्हरी आय ॥ ३ ॥
जैसे बने मोहिँ लेव सुधारी ।
चरनन में लेव सुरत लगाय ॥ ४ ॥
राधास्वामी दयाल जीव हितकारी ।
जस तस देव मेरा काज बनाय ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६० ॥

गुरु प्यारे करें तेरी आज सहाय ॥टेक॥
क्यों घबरावे मन में प्यारी ।
गुरु परताप रहा हिये छाय ॥ १ ॥

सब बिधि तेरा काज बनावें।
तू उन चरनन प्रीत बढ़ाय ॥ २ ॥
संशय छोड़ करो बिस्वासा।
जैसी बने तैसी जुगत कमाय ॥ ३ ॥
सतसँग कर उन सेवा धारो।
प्रेमी जन से मेल मिलाय ॥ ४ ॥
अपनी दया से राधास्वामी प्यारे।
इक दिन देंगे घर पहुँचाय ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६१ ॥

गुरु प्यारे से रलिया कर लो आज ॥टेक॥
भाग जगे सतसँग में आई।
भक्ति भाव का पाया साज ॥ १ ॥
सुरत सम्हार करो अभ्यासा।
शब्द रहा तेरे घट में गाज ॥ २ ॥
प्रीत प्रतीत धार गुरु चरनन।
आज बनाओ अपना काज ॥ ३ ॥
मन इंद्री के भोग बिसारो।
छोड़ो जग का भय और लाज ॥ ४ ॥

राधास्वामी चरनन जाय समाई ।
जाग उठा मेरा अचरज भाग ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५९ ॥

गुरु प्यारे करो अब मेहर बनाय ॥टेक॥
मैं तो अजान लिपट रही जग में ।
सतसँग बचन न चित्त ठहराय ॥ १ ॥
सुरत शब्द की जुगती भारी ।
सो भी मुझ से गई न कमाय ॥ २ ॥
मैं तो सब बिधि हीन अधीनी ।
चरन सरन गही तुम्हरी आय ॥ ३ ॥
जैसे बने मोहिँ लेव सुधारी ।
चरनन में लेव सुरत लगाय ॥ ४ ॥
राधास्वामी दयाल जीव हितकारी ।
जस तस देव मेरा काज बनाय ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६० ॥

गुरु प्यारे करें तेरी आज सहाय ॥टेक॥
क्यों घबरावे मन में प्यारी ।
गुरु परताप रहा हिये छाय ॥ १ ॥

सब विधि तेरा काज बनावें ।
तू उन चरनन प्रीत बढ़ाय ॥ २ ॥
संशय छोड़ करो बिस्वासा ।
जैसी बने तैसी जुगत कमाय ॥ ३ ॥
सतसँग कर उन सेवा धारो ।
प्रेमी जन से मेल मिलाय ॥ ४ ॥
अपनी दया से राधास्वामी प्यारे ।
इक दिन देंगे घर पहुँचाय ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६१ ॥

गुरु प्यारे से रलिया कर लो आज ॥टेक॥
भाग जगे सतसँग में आई।
भक्ति भाव का पाया साज ॥ १ ॥
सुरत सम्हार करो अभ्यासा ।
शब्द रहा तेरे घट में गाज ॥ २ ॥
प्रीत प्रतीत धार गुरु चरनन ।
आज बनाओ अपना काज ॥ ३ ॥
मन इंद्री के भोग बिसारो ।
छोड़ो जग का भय और लाज ॥ ४ ॥

गुरु की दया ले सुरत चढ़ावो।
पिंड अंड से छिन छिन भाज ॥ ५ ॥
सुन में जाय करो अस्नाना।
काल करम का छूटै बाज ॥ ६ ॥
राधास्वामी मेहर से आगे चालो।
चार लोक चढ़ भोगो राज ॥ ७ ॥

॥ शब्द ६२ ॥

गुरु प्यारे के सँग चलो महल अपने॥ टेक॥
कब लग मन सँग दुख सुख सहना।
छोड़ चलो यह जग सुपने ॥ १ ॥
गुरु के संग बाँध जुग चालो।
चरन कँवल में अब रचने ॥ २ ॥
सतसँग कर सब भरम निकारो।
विषय भोग दिन दिन तजने ॥ ३ ॥
गुरु का शब्द [illegible] हि [illegible]
घर की ओर [illegible] ने
जोत [illegible]
काल [illegible] से [illegible]

चंद्र मँडल लख गई गुफा में ।
मुरली धुन जहाँ लगी बजने ॥ ६ ॥
सत्त अलख और अगम के पारा ।
राधास्वामी चरन सुरत सजने ॥ ७ ॥

॥ शब्द ६३ ॥

गुरु प्यारे चरन पर सीस नवाय ॥ टेक ॥
मद और मोह काम को तज कर ।
सतसँग गुरु का करो बनाय ॥ १ ॥
करम भरम और टेक पुरानी ।
मन से सब को देव भुलाय ॥ २ ॥
गुरु का ध्यान धरो तुम मन में ।
सुरत शब्द में नित्त लगाय ॥ ३ ॥
सेवा कर निज भाग जगावो ।
दिन दिन प्रीत प्रतीत बढ़ाय ॥ ४ ॥
प्रेम सहित गुरु आरत धारो ।
हिये में नई नई उमँग जगाय ॥ ५ ॥
दया मेहर ले चढ़ो अधर में ।
घट में धुन झनकार सुनाय ॥ ६ ॥

सतगुरु दरस पाय सतपुर मैं ।
राधास्वामी चरन समाय ॥ ७ ॥

॥ शब्द ६४ ॥

गुरु प्यारे लगावैं तुझ को पार ॥ टेक ॥
कर बिश्वास गुरू का प्यारे ।
उनकी गत मत अगम अपार ॥ १ ॥
सतसँग कर सेवा कर उनकी ।
जुगत कमावो धर कर प्यार ॥ २ ॥
जगत जीव स्वारथ के मीता ।
मन से इनका सँग तज डार ॥ ३ ॥
सुरत लगाओ शब्द अधर मैं ।
सुन सुन धुन जग से होय न्यार ॥ ४ ॥
राधास्वामी तेरा काज बनावैं ।
चरन सरन उन हिरदे धार ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६५ ॥

गुरु प्यारे की सेवा लाग रहूँ ॥ टेक ॥
अचरज सतसँग मिला भाग से ।
प्रीत सहित गुरु वचन सुनूँ ॥ १ ॥

भेद पाय गुरु जुगत कमाऊँ ।
घट में नित धुन शब्द गुनूँ ॥ २ ॥
सतगुरु सेवा दुरलभ कहिये ।
उमँग उमँग मैं सेव करूँ ॥ ३ ॥
ध्यान धरत घट हुआ उजियारा ।
शब्द डोर गह गगन चढ़ूँ ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया मेहर मैं पाई ।
चरन सरन गह शांति धरूँ ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६६ ॥

गुरु प्यारे की मेहर कहूँ कस गाय ॥टेक॥
जगत संग मैं रही अजानी ।
चरनन में लिया आप बुलाय ॥ १ ॥
दया भरे मोहिं बचन सुनाये ।
मोह जाल से लिया छुड़ाय ॥ २ ॥
परमारथ की क़दर जनाई ।
धुन सँग सूरत दीन्ह लगाय ॥ ३ ॥
प्रेम धार घट भीतर उमँगी ।
अमृत रस पी रहूँ तृपताय ॥ ४ ॥

राधास्वामी दाता गुरू दयाला ।
मुझ सी अधम को दिया पार लगाय ॥५॥

॥ शब्द ६७ ॥

गुरु प्यारे से खेलो फाग रचाय ॥टेक॥
नर देह अजब मिली किरपा से ।
हित से भक्ती पंथ कमाय ॥ १ ॥
यह औसर फागुन ऋतु जानो ।
जीव का अपने काज बनाय ॥ २ ॥
प्रीत धार करो संग गुरू का ।
सेवा कर नई उमँग बढ़ाय ॥ ३ ॥
या बिधि होली खेलो गुरु से ।
प्रेम रंग घट माहिँ भराय ॥ ४ ॥
ध्यान धरो घट धुन को साधो ।
मन और सूरत गगन चढ़ाय ॥ ५ ॥
तन मन धन की धूल उड़ा कर ।
शब्द गुरू से भेटो जाय ॥ ६ ॥
बिरह अनुराग नवीन जगा कर ।
राधास्वामी प्रीतम लेव रिझाय ॥ ७ ॥

॥ शब्द ६८ ॥

गुरु प्यारे से होली खेलो आय ॥टेक॥
ऐसा फाग रचो मन मेरे ।
धरन गगन मैं धूम मचाय ॥ १ ॥
सखी सहेली सँग ले अपने ।
प्रेम रंग की बरखा लाय ॥ २ ॥
शब्द शोर होवत घट माहीं ।
राग रागिनी नई बिधि गाय ॥ ३ ॥
मन और सुरत उमँग कर चढ़ते ।
शब्द धुनन सँग केल कराय ॥ ४ ॥
भक्ति दान फगुआ लिया गुरु से ।
उमँग उमँग राधास्वामी गुन गाय ॥५॥

॥ शब्द ६९ ॥

गुरु प्यारे के सँग तू निज घर जाव ॥टेक॥
नर देह पाई सतगुरु भेटे ।
अब के पड़ा प्यारी तेरा दाव ॥ १ ॥
काल देस मैं दुक्ख घनेरा ।
इसको तज ऊपर चढ़ जाव ॥ २ ॥

अधर देस प्रीतम का डेरा ।
उनके चरन में लावो भाव ॥ ३ ॥
वा घर की गुरु गैल बतावें ।
मन और सूरत शब्द लगाव ॥ ४ ॥
धर परतीत कमावो जुगती ।
गुरु बल सूरत अधर चढ़ाव ॥ ५ ॥
शब्द गुरू के चरन परस के ।
सत्तपुरुष का दर्शन पाव ॥ ६ ॥
राधास्वामी मेहर से आगे चालो ।
धाम अनामी जाय समाव ॥ ७ ॥

॥ शब्द ७० ॥

गुरु प्यारे का सँग करो हे मन मीत ॥टेक॥
कुमत छोड़ गुरु संगत धारो ।
बचन सुनो उन देकर चीत ॥ १ ॥
दया करें गुरु संग लगावें ।
नित्त बढ़ावें तेरो प्रीत ॥ २ ॥
धुन रस घट में तोहि पिलावें ।
चरनन में देवें परतीत ॥ ३ ॥

मन माया से पीछा छूटे ।
धारै निरमल भक्ती रीत ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर से लैं अपनाई ।
निज घर जाय काल को जीत ॥ ५ ॥

॥ शब्द ७१ ॥

गुरू प्यारे से मिल घट कपट हटाय॥टेक॥
जब लग मन में दुचिता रहती ।
परमारथ की बूझ न पाय ॥ १ ॥
दुबिधा छोड़ करो सतसंगा ।
बचन सार रस पियो अघाय ॥ २ ॥
शब्द भेद जो गुरू बतावैं ।
धार हिये करो भजन बनाय ॥ ३ ॥
बिमल प्रकाश लखो घट अंतर ।
नइ नइ धुन झनकार सुनाय ॥ ४ ॥
लीला देख अजब मन माना ।
राधास्वामी सरन पड़ाय ॥ ५ ॥

॥ शब्द ७२ ॥

गुरू प्यारे से मिल तू मनमत त्याग॥टेक॥

भक्ति दान माँगो सतगुरु से ।
दीन होय गुरु चरनन लाग ॥ १ ॥
मेहर करें गुरु दे हैं जगाई ।
जुगन जुगन का सोया भाग ॥ २ ॥
उमँग जगाय करावें सतसँग ।
घट में सुनावें अनहद राग ॥ ३ ॥
अपना बल दे सुरत चढ़ावें ।
सहज छुड़ावें कलमल दाग़ ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर से कीन्ही न्यारी ।
सुरत रही सुन धुन में पाग ॥ ५ ॥

॥ शब्द ७३ ॥

गुरु प्यारे की दम दम शुकर गुज़ार ॥टेक॥
दया करी मोहिं संग लगाया ।
भेद दिया मोहिं घट का सार ॥ १ ॥
सुमत सिखाय छुड़ाई मनमत ।
जगत बासना दई निकार ॥ २ ॥
मन माया के बंधन काटे ।
करम धरम का कूड़ा टार ॥ ३ ॥

निज चरनन में प्रीत बढ़ाई ।
और दई परतीत सम्हार ॥ ४ ॥
शब्द संग सुत अधर चढ़ा कर ।
पहुँचाया राधास्वामी दरबार ॥ ५ ॥

॥ शब्द ७४ ॥

गुरु प्यारे की मौज रहो तुम धार ॥टेक॥
वे हर दम तेरी दया बिचारें ।
निस दिन रक्षा करें सम्हार ॥ १ ॥
हँगता ममता मूल और भरमा ।
मन के निकारें सबहि बिकार ॥ २ ॥
जिस में तेरी होय भलाई ।
स्वारथ और परमारथ सार ॥ ३ ॥
वैसी ही करें मौज दया से ।
दोऊ में हित मानो यार ॥ ४ ॥
चाहे मन माने या नाहीं ।
मौज गुरू की दया निहार ॥ ५ ॥
जिस बिधि राखें उस बिधि रहना ।
शुकर की रखना समझ बिचार ॥ ६ ॥

ऐसी समझ धार रहे मन में।
सो निरखे गुरु मेहर अपार ॥ ७ ॥
राधास्वामी समरथ और न कोई।
चरन पकड़ धर प्रेम पियार ॥ ८ ॥

॥ शब्द ७५ ॥

गुरु प्यारे की आरत करो बनाय ॥टेक॥
मन इन्द्री घट माहिँ समेटो।
दृष्टि जोड़ सुत चरन लगाय ॥ १ ॥
धुन की होत जहाँ झनकारा।
और बिमल परकाश दिखाय ॥ २ ॥
दिन दिन बढ़त प्रीत चरनन में।
उमँग उमँग गुरु जुगत कमाय ॥ ३ ॥
रस पावत घट में नित चालत।
सुन सुन धुन मन अति हरखाय ॥४॥
मेहर करी गुरु अधर चढ़ाया।
नभ में जोत रूप दरसाय ॥ ५ ॥
त्रिकुटि जाय गुरु शब्द समानी।
तिस परे मुरली बीन सुनाय ॥ ६ ॥

काल करम दोउ थक रहे मग में ।
माया भी सिर धुनत लजाय ॥७॥
राधास्वामी दया करी अब न्यारी ।
निज घर मुझको दिया पहुँचाय ॥८॥

॥ शब्द ७६ ॥

गुरु प्यारे का सतसँग करो बनाय ॥टेक॥
सहज सहज निरमल हुआ मनुआँ ।
दरशन कर हिये कँवल खिलाय ॥ १ ॥
प्रीत बसी घट में चरनन की ।
उमँग उमँग गुरु रूप धियाय ॥ २ ॥
सुन सुन बचन बढ़ा अनुरागा ।
भेद पाय सुत शब्द लगाय ॥ ३ ॥
साँचा नाम मिला निज घट में ।
दुरमत मन की गई नसाय ॥ ४ ॥
मगन हुई देख हंस बिलासा ।
राधास्वामी २ चहुँदिस गाय ॥ ५ ॥

॥ शब्द ७७ ॥

गुरु प्यारे के चरनन मचल रही ॥टेक॥

भोली बाली प्यारी सुरतिया ।
घट में दरशन माँग रही ॥ १ ॥
निज स्वरूप की सुन सुन महिमा ।
मन में अचरज करत रही ॥ २ ॥
प्रेम भरी धावत अब घट में ।
उमँग उमँग स्रुत अधर गई ॥ ३ ॥
गुरु स्वरूप निरखा त्रिकुटी में ।
सतपुर सतगुरु दरस दई ॥ ४ ॥
मेहर करी राधास्वामी गुरु प्यारे ।
निज चरनन में मेल लई ॥ ५ ॥

॥ शब्द ७८ ॥

गुरु प्यारे का सतसँग अमल अमोल ॥टेक॥
चित से बचन सुनो उर धारो ।
कब लग रहो तुम डावाँडोल ॥ १ ॥
शब्द कमाओ प्रेम भक्ति से ।
घट का दें गुरु परदा खोल ॥ २ ॥
धुन सँग चढ़ो अधर में प्यारी ।
माया के सब उलटें खोल ॥ ३ ॥

गुरु परताप करो यह करनी ।
सुफल होय जीवन अनमोल ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर से धुर पद पावे ।
अकह अपार अनाम अबोल ॥ ५ ॥

॥ शब्द ७८ ॥

गुरु प्यारे का सँग बड़भागी पाय ॥टेक॥
जिन सज्जन गुरु महिमा जानी ।
वे सतसंग करें नित आय ॥ १ ॥
परमारथ की क़दर जान कर ।
जग आसा सब दई हटाय ॥ २ ॥
मन इंद्री का सोधन कर के ।
राधास्वामी चरनन प्रेम जगाय ॥ ३ ॥
सुरत लगावें शब्द अधर में ।
घट में निस दिन आनँद पाय ॥ ४ ॥
जग का मोह न व्यापे उनको ।
दुख सुख में रहे चरन धियाय ॥ ५ ॥
प्रीत प्रतीत धार गुरु चरनन ।
सेवा कर लें गुरू रिझाय ॥ ६ ॥

मन इच्छा को रोक जुगत से।
मगन होय गुरु रज़ा कमाय ॥ ७ ॥
सुखी रहैं चरनन में हर दम।
राधास्वामी प्यारे हुए सहाय ॥ ८ ॥

॥ शब्द ८० ॥

गुरु प्यारे के सँग आनँद भारी ॥टेक॥
जग ब्योहार सुहावे नाहीं।
छोड़ दई कृत संसारी ॥ १ ॥
दरशन बचन भजन और सेवा।
यह करतूत लगी प्यारी ॥ २ ॥
मन और सुरत प्रेम रँग भीजैं।
सुन सुन अनहद झनकारी ॥ ३ ॥
उमँग उमँग अब चढ़त अधर में।
छिन छिन होय तन से न्यारी ॥ ४ ॥
गुरु सतगुरु पद परस दया से।
राधास्वामी चरन सीस धारी ॥ ५ ॥

॥ बचन १२ प्रेम प्रकाश भाग ३ ॥

॥ शब्द १ ॥

गुरु प्यारे के बैन रसीले, अमृत की खान ॥टेक॥
प्रेम भरे नित बचन सुनावें ।
लगे कलेजे बान ।
हुई घायल जान ॥ १ ॥
जगत मोह जंजाल छुड़ाया ।
खैंच धरे मन प्रान ।
गुरु चरनन आन ॥ २ ॥
शब्द भेद दिया घट का सारा ।
सुरत लगाई तान ।
चढ़ कर असमान ॥ ३ ॥
गुरु का रूप लखा त्रिकुटी में ।
सत्तपुरुष का धारा ध्यान ।
सतलोक ठिकान ॥ ४ ॥
आगे चल पहुँची धुर धामा ।
राधास्वामी अचरज दरस दिखान ।
मैं रही हैरान ॥ ५ ॥

॥ शब्द २ ॥

गुरु प्यारे के नैन रँगीले,
मेरा मन हर लीन ॥ टेक ॥
अद्भुत छबि निरखत नर नारी ।
बचन सुनत हुए दीन ।
मन धार यक़ीन ॥ १ ॥
सुन्दर रूप बसा नैनन में ।
दरस बिना तड़पत ग़मगीन ।
जस जल बिन मीन ॥ २ ॥
जब गुरु दरशन मिला भाग से ।
मगन हुई रस पियत अमीं ।
गुरु किरपा चीन ॥ ३ ॥
सतसँग कर गुरु सेवा लागी ।
निरमल हुइ मेरी सुरत मलीन ।
हुए अघ सब छीन ॥ ४ ॥
शब्द भेद दे सुरत चढ़ाई ।
राधास्वामी मेहर अनोखी कीन ।
हुई चरनन लीन ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३ ॥

गुरु प्यारे की चाल अनोखी,
जग से न्यारी ॥ टेक ॥
बाहरमुख जग का परमारथ ।
नक़ल से मेल मिलारी ।
नहीं असल सम्हारी ॥ १ ॥
अंतरमुख जो करते करनी ।
पिंड के पार न जारी ।
सतपद नहिँ पारी ॥ २ ॥
संत देश ऊँचे से ऊँचा ।
पिंड अंड ब्रह्मंड निहारी ।
तिस पार सिधारी ॥ ३ ॥
सुरत शब्द मारग समझावैं ।
मन और सूरत अधर चढ़ावैं ।
सुन धुन झनकारी ॥ ४ ॥
जो जिव राधास्वामी सरनी आये ।
मेहर दया से पार लगाये ।
हुए महा सुखियारी ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४ ॥

गुरु प्यारे का संग अमोला,
सुख का भंडार ॥ टेक ॥
जिन जिन संग करा हित चित से।
पाया उन घर भेद अपार।
पिया अमृत सार ॥ १ ॥
प्रेम प्रीत उन घट में जागी
राधास्वामी चरन उर धरे सम्हार।
हुआ हिये उजियार ॥ २ ॥
जगत भाव और भोग बासना।
मन से उनके दई निकार।
मल धोये झाड़ ॥ ३ ॥
निरमल होय सुरत अलगानी।
मगन हुई गुरु रूप निहार।
सुन धुन झनकार ॥ ४ ॥
नभ में होय गई त्रिकुटी में।
वहाँ से पहुँची सुन्न मँझार।
सुनी सारँग सार ॥ ५ ॥

मुरली बीन सुनी धुन दोई ।
पहुँची अलख पुरुष दरबार।
गई अगम के पार ॥ ६ ॥
आगे राधास्वामी धाम निहारा ।
मिला वहाँ आनंद अपार ।
हुआ जीव उबार ॥ ७ ॥

॥ शब्द ५ ॥

गुरु प्यारे का रँग चटकीला,
कभी उतरे नाहिँ ॥ टेक ॥
जिन पर मेहर करी गुरु प्यारे ।
सतसँग में उन लिया मिलाय ।
दई चरनन छाँह ॥ १ ॥
करम भरम से लीन्ह बचाई ।
निरमल कर उन लिया अपनाय ।
गई काल की दायँ ॥ २ ॥
प्रीत प्रतीत दई चरनन में ।
शब्द की महिमा दई बसाय ।
उन हिरदे माहिँ ॥ ३ ॥

शब्द सुनाय सुत गगन चढ़ाई ।
लीला देख सब रहे हरखाय ।
मिल गुरु गुन गाय ॥ ४ ॥
ऐसा रंग रँगा राधास्वामी ।
सब जिव चरन सरन में धाय ।
दृढ़ पकड़ी बाँह ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६ ॥

गुरु प्यारे का रँग अति निरमल,
कभी मैला न होय ॥ टेक ॥
सतसँग धारा नितही जारी ।
काल जाल और करम कटाय ।
दिये कलमल धोय ॥ १ ॥
हिरदे में नई प्रीत जगावें ।
चरनन में परतीत बढ़ावें ।
करम भरम दिये खोय ॥ २ ॥
जुगत बताय करावें करनी ।
मन सूरत धुन में धरनी ।
मिला आनँद मोहिं ॥ ३ ॥

शब्द शब्द का भेद सुनाया ।
धुर पद का मोहिं मरम लखाया ।
जहाँ एक न दोय ॥ ४ ॥
राधास्वामी सँग की महिमा भारी ।
मेहर दया पर जाउँ बलिहारी ।
सुत चरन समोय ॥ ५ ॥

॥ शब्द ७ ॥

गुरु प्यारे का देश अति ऊँचा,
कस पहुँचूँ धाय ॥ टेक ॥
बिन गुरु दया काज नहिं होई ।
सतसँग में अब बैठूँ जाय ।
चित चरन लगाय ॥ १ ॥
सुन सुन बचन सुरत मन माँजूँ
गुरु मूरत का ध्यान लगाय ।
घट ताकूँ जाय ॥ २ ॥
शब्द जुगत गुरु दीन्ह बताई ।
प्रेम सहित रहूँ ताहि कमाय ।
मन सुरत जमाय ॥ ३ ॥

गुरु बल सूरत अधर चढ़ाऊँ।
सहसकँवल सुनूँ घंटा जाय।
फिर गगन चढ़ाय ॥ ४ ॥
सुन्न और महासुन्न के पारा।
गुफा परे सत पद दरसाय।
धुन बीन सुनाय ॥ ५ ॥
उमँग जगाय चढी आगे को।
अलख अगम का दरस दिखाय।
तिस पार चलाय ॥ ६ ॥
राधास्वामी रूप निरख मगनानी।
महिमा वाकी को सके गाय।
मैं रही शरमाय ॥ ७ ॥

॥ शब्द ८ ॥

गुरु प्यारे का महल सुहावन,
कस देखूँ जाय ॥ टेक ॥
गुरु बिन कोई भेद न जाने
उनका सँग अब करूँ बनाय।
हिये उमँग जगाय ॥ १ ॥

सुन सुन देश की महिमा भारी ।
मन में दिन दिन प्रीत बढ़ाय ।
बिरह हिये रही छाय ॥ २ ॥
इंद्री भोग नहीं अब भावें ।
मन में रहे नित दरद समाय ।
पिया पीर सताय ॥ ३ ॥
बिन गुरु कौन दवा करे मेरी ।
मेहर से दें वे सुरत चढ़ाय ।
धुन शब्द सुनाय ॥ ४ ॥
बिमल बिलास लखे अंतर में ।
तब तन मन कुछ शांत धराय ।
घट पाट खुलाय ॥ ५ ॥
कँवल कँवल की लीला न्यारी ।
मेहर दया से निरखूँ जाय ।
अति आनँद पाय ॥ ६ ॥
बिनय करूँ राधास्वामी चरनन में ।
बेग देव मेरा काज बनाय ।
हिये दया उमगाय ॥ ७ ॥

॥ शब्द ८ ॥

गुरु प्यारे का मारग झीना,
  कोइ गुरुमुख जाय ॥ टेक ॥
मन इंद्री को रोक अँदर में ।
भोग बासना दूर हटाय ।
मन मान नसाय ॥ १ ॥
सतगुरु प्रेम भींज रहे निस दिन ।
नया नया भाव और उमँग जगाय ।
गुरु सेवा लाय ॥ २ ॥
होय हुशियार चलत गुरु मारग ।
घट में बिमल बिलास दिखाय ।
गुरु ध्यान धराय ॥ ३ ॥
तन मन धन चरनन पर वारत ।
मन और सूरत गगन चढ़ाय ।
घट शब्द जगाय ॥ ४ ॥
करम काट गुरु बल चली आगे ।
माया दल भी दूर पराय ।
दिया काल गिराय ॥ ५ ॥

ऐसी सुत गुरु चरन अधीनी ।
सूर होय सत शब्द समाय ।
धुन बीन बजाय ॥ ६ ॥
मेहर हुई सुत अधर सिधारी ।
राधास्वामी दिया निज घर पहुँचाय ।
लिया गोद बिठाय ॥ ७ ॥

॥ शब्द १० ॥

गुरु प्यारे चरन मन भावन ।
हिये राखूँ बसाय (छिपाय) ॥टेक॥
सुन सुन बचन गुरू प्यारे के
संशय भरम सब गये नसाय ।
मन भाव बढ़ाय ॥ १ ॥
चरन सरन की महिमा जानी ।
मन और सूरत रहे लुभाय ।
दृढ़ लगन लगाय ॥ २ ॥
चरन भेद ले धारा ध्याना ।
नित प्रति रस और आनँद पाय ।
निज भाग सराह ॥ ३ ॥

गुरु चरनन सम और न प्यारा ।
बारम्बार उन्हीं में धाय ।
मन सुत हरखाय ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर की क्या कहुँ महिमा ।
सहज लिया मोहिं चरन लगाय ।
सब बंद छुड़ाय ॥ ५ ॥

॥ शब्द ११ ॥

गुरु प्यारे की छबि मन मोहन
रही नैनन छाय ॥ टेक ॥
जब से मैं पाये गुरु प्यारे के दरशन ।
हिरदे में रही प्रीत समाय ।
मन अति अकुलाय ॥ १ ॥
बार बार दरशन को धावत ।
बिन दरशन रहे अति घबराय ।
कहीं चैन न पाय ॥ २ ॥
ऐसी दशा देख गुरु प्यारे ।
निज सतसँग में लिया मिलाय ।
घट प्रेम बढ़ाय ॥ ३ ॥

तन मन इंद्री सिथल हुए अब ।
दरशन रस ले रहे त्रिपताय ।
जग भाव भुलाय ॥ ४ ॥
गुरु स्वरूप अब बसा हिये में ।
हर दम गुरु का ध्यान धराय ।
कभी बिसर न जाय ॥ ५ ॥
प्रीत प्रतीत बढ़ी गुरु चरनन ।
गुरु सम जग में कोइ न दिखाय ।
रही महिमा गाय ॥ ६ ॥
राधास्वामी मेहर से घट पट खोला ।
धुन सँग सूरत अधर चढ़ाय ।
दई घर पहुँचाय ॥ ७ ॥

॥ शब्द १२ ॥

गुरु प्यारे का पंथ निराला
अति ऊँच ठिकान ॥ टेक ॥
वेद कतेब पार नहिँ पावें ।
जोगी ज्ञानी मरम न जान ।
पद ब्रह्म ठिकान ॥ १ ॥

तिरदेवा और दस औतारा।
पीर पैगम्बर वली सुलान।
गत संत न जान ॥ २ ॥
मुझ पर दया करी गुरु प्यारे।
सुरत शब्द का भेद बतान।
घट राह चलान ॥ ३ ॥
प्रेम प्रीत गुरु चरनन धारी।
धुन सँग मन और सुरत लगान।
चढ़ अधर अस्थान ॥ ४ ॥
राधास्वामी गत मत अति से भारी।
बिन किरपा नहिँ होय पहिचान।
कस पाय निशान ॥ ५ ॥

॥ शब्द १३ ॥

गुरु प्यारे की कर परतीती
होय जीव उबार ॥ टेक ॥
संशय भरम निकारो मन से।
कर सतसंग बढ़ावो प्यार
रहो नित हुशियार ॥ १ ॥

काम क्रोध मद लोभ बिकारा।
इन दूतन का सँग तज डार।
गुरु सीख सम्हार ॥ २ ॥
गुरु बल सील छिमा चित राखो।
और संतोष बिबेक बिचार।
अस दूतन टार ॥ ३ ॥
शब्द जुगत तुम नित्त कमाओ।
गुरु मूरत का ध्यान सम्हार।
घट देख बहार ॥ ४ ॥
मेहर करैं राधास्वामी दयाला।
सुरत चढ़ावैं धुन की लार।
जाय निज घर बार ॥ ५ ॥

॥ शब्द १४ ॥

गुरु प्यारे का धार भरोसा
करैं कारज पूर ॥ टेक ॥
सुरत शब्द की जुगत कमाओ
मेहर से घट मैं झलके नूर।
बाजे अनहद तूर ॥ १ ॥

बिरहन सुरत पाय घट भेदा ।
कार कमावत कर भ्रम चूर ।
तज मन्सा कूर ॥ २ ॥
सुन सुन धुन सूरत मगनानी ।
मस्त हुआ मन सूर ।
हुइ इच्छा दूर ॥ ३ ॥
राधास्वामी दृष्टि दया की डारी ।
काल करम रहे झूर ।
मिली जाय पद मूर ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर की क्या कहुँ महिमा।
पहुँच गई धुर धाम हजूर ।
हुइ चरनन धूर ॥ ५ ॥

॥ शब्द १५ ॥

गुरु प्यारे की जुगत कमाओ
मन धर कर प्यार ॥ टेक ॥
दीन होय कर सतसँग गुरु का ।
बचन सुनो चित चेत सम्हार ।
उर धारो सार ॥ १ ॥

संशय छोड़ प्रीत कर गुरु से ।
दिन दिन उन परतीत सम्हार ।
सब भरम निकार ॥ २ ॥
जब मन निरमल चित होय निश्चल ।
शब्द भेद दें सब का सार ।
गुरु किरपा धार ॥ ३ ॥
घेर घुमर घट में मन सूरत ।
शब्द सुनें चढ़ उलटी धार ।
लख बिमल बहार ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर से जाय अधर में ।
सुन्न और महासुन्न के पार ।
सत रूप निहार ॥ ५ ॥

॥ शब्द १६ ॥

गुरु प्यारे का कर दीदारा,
घट प्रीत जगाय ॥ टेक ॥
गुरु दरशन की महिमा भारी ।
छिन में कोटिन पाप नसाय ।
जिव काज बनाय ॥ १ ॥

बिरही जन कोई जानें रीती ।
जस दरपन में दरस दिखाय ।
हिये रूप बसाय ॥ २ ॥
ऐसी लगन लगावें जो जन ।
छिन छिन रहें गुरु चरन समाय ।
घट आनँद पाय ॥ ३ ॥
चरन भेद ले सुरत चढ़ावें ।
दरशन रस ले रहें त्रिपताय ।
धुन शब्द सुनाय ॥ ४ ॥
मेहर करें गुरु राधास्वामी प्यारे ।
इक दिन लें निज चरन लगाय ।
धुर घर पहुँचाय ॥ ५ ॥

॥ शब्द १७ ॥

गुरु प्यारे से प्रीत लगाना ।
मन सरधा लाय ॥ टेक ॥
जगत भोग सब जान असारा ।
इन से हट सतसंग समाय ।
गुरु बचन कमाय ॥ १ ॥

भूल भरम और करमा धरमा
इन से नहिँ कुछ काज सराय।
सब दूर बहाय ॥ २ ॥
उमँग सहित गुरु सेवा धारी।
मन और सुत धुन संग लगाय।
गुरु रूप धियाय ॥ ३ ॥
मेहर से घट मेँ मिले अनंदा।
दिन दिन प्रीत प्रतीत बढ़ाय।
नइ उमँग जगाय ॥ ४ ॥
दया करेँ गुरु सुरत चढ़ावेँ।
सहसकँवल लख त्रिकुटी धाय।
गुरु शब्द सुनाय ॥ ५ ॥
सुन मेँ जाय सुनी धुन सारँग।
सूरज सेत भँवर दरसाय।
सोहँग धुन गाय ॥ ६ ॥
सतगुरु रूप लखे सतपुर मेँ।
आगे राधास्वामी धाम दिखाय।
निज चरन समाय ॥ ७ ॥

॥ शब्द १८ ॥

गुरु प्यारे चरन में भाव,
लाओ मन से प्यारी ॥टेक ॥
जगत बड़ाई धोखा जानो ।
भोगन को बिष रूप पिछानो ।
इन से होय फिर दुख भारी ॥ १ ॥
गुरु सतसँग की महिमा जानो ।
सुन सुन बचन चित्त में आनो ।
इक दिन होय जग से न्यारी ॥ २ ॥
जो यह काम करो नहिँ अब के ।
माया संग रहो नित अटके ।
जनम जनम रहो दुखियारी ॥ ३ ॥
याते कहन हमारी मानो ।
गुरु चरनन में आरत ठानो ।
हित चित से सेवा धारी ॥ ४ ॥
मेहर से गुरु तोहि भेद लखावें ।
शब्द संग तेरी सुरत चढ़ावें ।
निरखे घट में उजियारी ॥ ५ ॥

सुन सुन धुन सुत घट में रीझे।
काल करम बल छिन छिन छीजे।
जावे गगन शिखर पारी ॥ ६ ॥
सत्त शब्द धुन सुन हरषानी।
अलख अगम की सुन लइ बानी।
मिल राधास्वामी हुइ सुखियारी ॥ ७ ॥

॥ शब्द १९ ॥

गुरु प्यारे का सुन्दर रूप,
निरखत मोह रही ॥ टेक ॥
जग ब्यौहार लगा सब फीका।
गुरु चरनन मन लागा नीका।
सतसँग कर मल धोय रही ॥ १ ॥
गुरु स्वरूप हिये माहिँ बसाना।
रैन दिवस उन धरती ध्याना।
शब्द में सुरत समोय रही ॥ २ ॥
हरख हरख घट सुनती बाजा।
भक्ति भाव का पाया साजा।
कुटिल कुमत सब खोय रही ॥ ३ ॥

प्रीत प्रतीत चरन में बढ़ती
शब्द संग सुत ऊपर चढ़ती।
माया सिर धुन रोय रही ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर से गइ दस द्वारे।
सत्त अलख और अगम के पारे।
निज चरनन सुत पोय रही ॥ ५ ॥

॥ शब्द ॥ २० ॥

गुरु प्यारे की लीला सार,
जग जिव नेक न जान ॥ टेक ॥
यह तो करम भरम में अटके।
लोक वेद में रहे फसान।
घर आदि भुलान ॥ १ ॥
गुरु भक्ती की चाल अनोखी।
प्रेमी जन के अति मन भान।
गुरु प्रेम जगान ॥ २ ॥
प्रेमी जन नित मन से जूझें।
इंद्रियन को रोकें घट आन।
माया बिघन हटान ॥ ३ ॥

जग जीवन से मेल न होवे ।
वे भोगन में रहे अटकान ।
रहे मन मत ठान ॥ ४ ॥
जन्म जन्म वे दुख सुख भोगें ।
चौरासी में रहें भरमान ।
कहिं चैन न पान ॥ ५ ॥
गुरुभक्तन की रीत निराली ।
गुरु चरनन नित प्रीत बढ़ान ।
सरबस वार धरान ॥ ६ ॥
मेहर दया राधास्वामी का पावें ।
छिन छिन घर की ओर चलान ।
लख शब्द निशान ॥ ७ ॥

॥ शब्द २१ ॥

गुरु प्यारे की सेवा धारो,
तज मन अभिमान ॥ टेक ॥
अस गुरुसंग भाग से पइये ।
सेवा कर उन बहुत रिझइये ।
तन मन कर कुरबान ॥ १ ॥

गुरु पूरे जब दया बिचारें।
करम भरम सब छिन में टारें।
दें भक्ती दान ॥ २ ॥
निज घट का गुरु भेद बतावें।
सुरत शब्द का जोग सिखावें।
लाय घट में ध्यान ॥ ३ ॥
दीन होय गुरु सतसँग करना।
मन और सुरत शब्द में धरना।
चढ़ अधर ठिकान ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर से सुरत चढ़ावें।
शब्द शब्द का धाम लखावें।
धुर पद दरसान ॥ ५ ॥

॥ शब्द २२ ॥

गुरु प्यारे से प्रीत बढ़ाओ,
तज मन का मान ॥ टेक ॥
मन में मान धार करे सतसँग।
सतगुरु की नहिं होय पहिचान।
घट तिमिर समान ॥ १ ॥

दीन अधीन होय करे भक्ती ।
तब कुछ घट में पाय निशान ।
बढ़े प्रेम निदान ॥ २ ॥
ता ते मान और कपट तियागो ।
गुरु चरनन में प्रीत लगान ।
परतीत जगान ॥ ३ ॥
तब गुरु होय प्रसन्न दया से ।
देवें घर का पता निशान ।
सुत अधर चढ़ान ॥ ४ ॥
प्रेम अंग ले सूरत साजी ।
राधास्वामी प्यारे हो गये राज़ी ।
घर जाय बसान ॥ ५ ॥

॥ शब्द २३ ॥

गुरु प्यारे से प्यार बढ़ाना,
सुन घट में धुन ॥ टेक ॥
बचन सुनो तुम समझ बूझ के ।
दरस करो तुम उमँग प्रेम से
नित गावो गुन ॥ १ ॥

मान मनी तज सतसँग करना ।
गुरु चरनन मैं नित चित धरना ।
सुमिर नाम निस दिन ॥ २ ॥
मन माया के भोग बिसरना ।
गुरु की आज्ञा सिर पर धरना ।
छाँट बचन चुन चुन ॥ ३ ॥
करम भरम का कूड़ा झाड़ा ।
गुरु स्वरूप अब लागा प्यारा ।
झाँक रहूँ छिन छिन ॥ ४ ॥
राधास्वामी प्यारे किरपा धारी ।
जगत जाल से किया मोहिँ न्यारी ।
मेल लिया चरनन ॥ ५ ॥

॥ शब्द २४ ॥

गुरु प्यारे के बचन अमोला,
उर धार रहूँ ॥ टेक ॥
निज घर का गुरु भेद जनाई ।
राधास्वामी महिमा अधिक सुनाई ।
हिये उमँग भरूँ ॥ १ ॥

सहज जोग सुत शब्द कहावा ।
सो गुरु मेहर से मोहिं समझावा ।
सुत तान रहूँ ॥ २ ॥
नित अभ्यास मैं करूँ सम्हारी ।
हरखूँ घट मैं निरख उजारी ।
गुरु सेव करूँ ॥ ३ ॥
प्रीत जगी अब मन मैं भारी ।
गुरु सम रक्षक कोइ न बिचारी ।
नित ध्यान धरूँ ॥४॥
दीन जान मो पै कीनी दाया ।
राधास्वामी प्यारे अंग लगाया ।
जस गाय रहूँ ॥ ५ ॥

॥ शब्द २५ ॥

गुरु प्यारे की सरन सम्हारो,
धर मन परतीत ॥ टेक ॥
बिना सरन कोइ बचे न भाई ।
सरन बिना कोइ घर नहिँ जाई ।
तज माया तीत ॥ १ ॥

॥ शब्द २६ ॥

गुरु प्यारे का दरस निहारत,
मेरा मन हुआ दीन ॥ टेक ॥
देख देख गुरु भक्ती रीती ।
प्रेमी जन की दृढ़ परतीती ॥
हुइ चरनन लीन ॥ १ ॥
मेहर हुई सतसँग में आई ।
बचन सुनत हिये प्रीत अब छाई ।
हुइ निपट अधीन ॥ २ ॥
भेद दिया गुरु राधास्वामी देशा ।
उमँग सहित लिया शब्द उपदेशा ।
मन धार यक़ीन ॥ ३ ॥
सुरत लगाय सुनूँ धुन काना ।
गुरुस्वरूप का धारूँ ध्याना ।
हुए कलमल छीन ॥ ४ ॥
सहज सहज सुत घट में चढ़ती ।
गुरुबिस्वास चित्त में धरती ।
रही दया घट चीन ॥ ५ ॥

जिन जिन सरन गही गुरु पूरे ।
उनही जाय लखा पद मूरे ।
ले संतन सीत ॥ २ ॥
जो तुम निज घर जाना चाहो ।
सतगुरु से ले जुगत कमाओ ।
कर सतुआँ सीत ॥ ३ ॥
दिन दिन चरनन प्रेम बढ़ाओ ।
तन मन धन गुरु भैंट चढ़ाओ ।
यही है भक्ती रीत ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया दृष्टि से हेरें ।
मन और सुरत दोउ तेरे घेरें ।
दे चरनन प्रीत ॥ ५ ॥
शब्द संग सुत अधर चढ़ावें ।
नभ लख गगन शिखर पहुँचावें ।
मन माया जीत ॥ ६ ॥
मुरली धुन सुन सतपुर धाई ।
अलख अगम के पार चढ़ाई ।
गाऊँ राधास्वामी गीत ॥ ७ ॥

॥ शब्द २६ ॥

गुरु प्यारे का दरस निहारत,
मेरा मन हुआ दीन ॥ टेक ॥
देख देख गुरु भक्ती रीती ।
प्रेमी जन की दृढ़ परतीती ॥
हुइ चरनन लीन ॥ १ ॥
मेहर हुई सतसँग में आई ।
बचन सुनत हिये प्रीत अब छाई ।
हुइ निपट अधीन ॥ २ ॥
भेद दिया गुरु राधास्वामी देशा ।
उमँग सहित लिया शब्द उपदेशा ।
मन धार यक़ीन ॥ ३ ॥
सुरत लगाय सुनूँ धुन काना ।
गुरुस्वरूप का धारूँ ध्याना ।
हुए कलमल छीन ॥ ४ ॥
सहज सहज सुरत घट में चढ़ती ।
गुरु बिस्वास चित्त में धरती ।
रही दया घट चीन ॥ ५ ॥

प्रेम प्रीत नइ हिये मैं जागी ।
उमँग उमँग सुत सतसँग लागी ।
तज चाह मलीन ॥ ६ ॥
राधास्वामी मेहर से लीन्ह उबारी ।
काल जाल से सुरत निकारी ।
मेरा कारज कीन ॥ ७ ॥

बचन १२ प्रेम प्रकाश भाग ४

॥ शब्द १ ॥

सतगुरु प्यारे ने दिखाई,
घट उजियारी हो ॥ टेक ॥
सतसँग करत प्रीत हिये जागी ।
मन और सुरत चरन मैं लागी ।
हुए सुखियारी हो ॥ १ ॥
जिन सतसँग की सार न जानी ।
माया संग रहे लिपटानी ।
रहे दुखियारी हो ॥ २ ॥

मेरी सुरत गुरू गगन चढ़ाई ।
भर भर पियत अमी जल लाई ।
हुई पनिहारी हो ॥ ३ ॥
सतगुरु प्रीत रीत अब जानी ।
छोड़ दई अब बिघन पिछानी ।
मत संसारी हो ॥ ४ ॥
राधास्वामी प्यारे दया कराई ।
दीन निरख मेरे हुए सहाई ।
किया भौ पारी हो ॥ ५ ॥

॥ शब्द २ ॥

सतगुरु प्यारे ने सुनाई,
घट झनकारी हो ॥ टेक ॥
दीन अधीन पड़ी गुरु चरना ।
हुए परसन्न दई निज सरना ।
करी दया भारी हो ॥ १ ॥
भेद सुना दिया शब्द उपदेसा ।
निज घर का दिया अजब सँदेसा ।
अगम अपारी हो ॥ २ ॥

मगन होय करती घट करनी ।
सुरत निरत दोउ धुन में धरनी ।
अधर सिधारी हो ॥ ३ ॥
घंटा संख और गरज सुनाई ।
सारँग बजी और मुरली सुहाई ।
हुइ बीन अधारी हो ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरन सुरत हुइ लीनी ।
प्रेम रंग की बरषा कीनी ।
भींज रही सारी हो ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३ ॥

सतगुरू प्यारे ने जनाया,
घट भेद अपारा हो ॥ टेक ॥
जग में भरमत बहु जुग बीते ।
माया संग रहे कर रीते ।
काहू न दीन्ह सहारा हो ॥ १ ॥
अब के सतगुरू मिले भाग से ।
शब्द सीख उन दई मेहर से ।
किया जीव उपकारा हो ॥ २ ॥

सुन सुन धुन घट में अब रीझूँ ।
प्रेम रंग तन मन में भीजूँ ।
हुआ आज उबारा हो ॥ ३ ॥
करम भरम का मिटा पसारा ।
त्रय तापन से हुआ छुटकारा ।
हुए दूर बिकारा हो ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर से अधर चढ़ाया ।
भौ सागर के पार कराया ।
मिला प्रीतम प्यारा हो ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४ ॥

सतगुरु प्यारे ने लखाया,
पिया देश नियारा हो ॥ टेक ॥
देस पिया का ऊँच से ऊँचा ।
संत बिना कोई वहाँ न पहुँचा ।
माया ब्रह्म के पारा हो ॥ १ ॥
जगत जीव करमन में अटके ।
बाहरमुख पूजा में भटके ।
रहे भौ वारा हो ॥ २ ॥

मुझ को सतगुरु मिले दया कर।
घट का भेद दिया किरपा कर।
लिया आप सुधारा हो ॥ ३ ॥
सुन सुन धुन सुत चढ़त अधर में।
त्रिकुटी होय गइ सुन्न नगर में।
लखा चन्द्र उजारा हो ॥ ४ ॥
मुरली सुन धुन बीन जगाई।
अलख अगम के पार चढ़ाई।
मिला राधास्वामी चरन अधारा हो॥५॥

॥ शब्द ५ ॥

सतगुरु प्यारे ने मिलाया,
प्रीतम प्यारा हो ॥ टेक ॥
बहु दिन जग में खोजत बीते।
पंडित भेष लखे मैं रीते।
कोइ जाने न वह घर न्यारा हो ॥ १ ॥
मेहर हुई धुर की गुरु मिलिया।
उन सँग मन और सुरत सम्हलिया।
भेद मिला धुन सारा हो ॥ २ ॥

उमँग सहित घट करी कमाई ।
धुन सँग मन और सुरत लगाई ।
लखा अचरज उजियारा हो ॥ ३ ॥
चढ़ चढ़ सुरत गई दस द्वारे ।
सतपुर सतगुरु दरस निहारे ।
गई अगम के पारा हो ॥ ४ ॥
मेहर हुई पहुँच धुर धामा ।
राधास्वामी चरन मिला बिस्रामा ।
संत का निज दरबारा हो ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६ ॥

सतगुरु प्यारे ने पिलाया,
प्रेम पियाला हो ॥ टेक ॥
प्रीत नवीन हिये में जागी ।
जगत मोह तज चरनन लागी ।
गुरु लीन्ह सम्हाला हो ॥ १ ॥
प्रीत प्रतीत मेरे हिये धर दीन्ही ।
मेहर दया अंतर में चीन्ही ।
गुरु कीन्ह निहाला हो ॥ २ ॥

उमँग उमँग अब घट मैं चाली ।
सुन सुन धुन सुत हुइ मतवाली ।
लखा गुरु रूप बिशाला हो ॥ ३ ॥
सुन्न शिखर होय गइ सतपुर मैं ।
अटल भक्ति पाय हुई मगन मैं ।
दइ सतपुरुष दयाला हो ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरनन आरत धारी ।
मेहर दया उन कीन्ही भारी ।
दिया निज धाम निराला हो ॥ ५ ॥

॥ शब्द ७ ॥

सतगुरु प्यारे ने जगाया,
सोता मनुआँ हो ॥ टेक ॥
बहु जुग बीते भूल भरम मैं
अटक रही नित करम धरम मैं ।
सहत रही मैं तपनुआँ हो ॥ १ ॥
गुरु दयाल मोहिँ खैंच बुलाई ।
सतसंगत मैं लीन्ह लगाई ।
भेद दिया घट धुनुआँ हो ॥ २ ॥

सेवा कर गुरु लीन्ह रिझाई ।
मेहर दया उन छिन छिन पाई ।
वार रही मन तनुआँ हो ॥ ३ ॥
घट मैं निस दिन करत कमाई ।
धुन डोरी गहसुरत चढ़ाई ।
दिन दिन बढ़त लगनुआँ हो ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर से सतपुर आई ।
काल करम बल सबहि नसाई ।
गये अहंकार मदनुआँ हो ॥ ५ ॥

॥ शब्द ८ ॥

सतगुरु प्यारे ने दया कर,
मोहिँ लीन्ह उबारी हो ॥ टेक ॥
जन्म जन्म भोगन मैं भूली ।
ऊँच नीच माया सँग झूली ।
रहि दुखियारी हो ॥ १ ॥
इस औसर गुरु सतसँग पाया ।
मेहर हुई मन चरन समाया ।
बचन गुरू उर धारी हो ॥ २ ॥

जग का रंग देख सब मैला ।
प्रेमी जन सँग कीन्हा मेला ।
भोग लगे सब खारी हो ॥ ३ ॥
उमँग उमँग सेवा को धाई ।
घेर फेर मन शब्द लगाई ।
हुई गुरु प्यारी हो ॥ ४ ॥
अधर चढ़त गइ दूवारे दस मैं ।
भीज रही सुत अमृत रस मैं ।
दूर हुए दुख सारी हो ॥ ५ ॥
सोहं मुरली धुन सुन पाई ।
बीन सुनी सतपुर मैं जाई ।
लखी गुरु लीला भारी हो ॥ ६ ॥
अलख अगम गइ सुरत प्रबीनी ।
राधास्वामी चरन हुई लौलीनी ।
हुइ सब से अब न्यारी हो ॥ ७ ॥

॥ शब्द ८ ॥

सतगुरु प्यारे ने मेहर से,
मेरा काज सँवारी हो ॥ टेक ॥

भरमत रही जक्त में सारी।
भोगन सँग सब पूँजी हारी।
दुख पाये मैं भारी हो ॥ १ ॥
जग का हाल देख बहु डरती।
जहँ तहँ खोज जतन का करती।
कोई न जनाया घर पारी हो ॥ २ ॥
हुई निरास सोच हुआ भारी।
तब गुरु प्यारे दया बिचारी।
आन मिले कर प्यारी हो ॥ ३ ॥
घट का भेद सार समझाई।
घर चलने की जुगत लखाई।
मेहर करी कुछ न्यारी हो ॥ ४ ॥
प्रेम प्रीत गुरु चरनन लागी।
जगत मोह तज सूरत जागी।
धुन सँग लागी तारी हो ॥ ५ ॥
उमँग उमँग स्रुत चालत घट में।
धुन घंटा सुन रही तिल पट में।
लखी जोत उजियारी हो ॥ ६ ॥

गुरु सतगुरु का दरशन कीना।
राधास्वामी चरन सरन हुइ लीना।
निरभय हुइ सुत प्यारी हो ॥ ७ ॥

॥ शब्द १० ॥

सतगुर प्यारे ने खिलाया,
निज परशाद निवाला हो ॥ टेक ॥
ले परशाद प्रीत हुइ भारी।
सतगुरु ने मोहिं आप सँवारी।
खोल दिया घट ताला हो ॥ १ ॥
करम भरम सब जड़ से तोड़ा।
जल पषान पूजन अब छोड़ा।
छोड़ा ईंट दिवाला हो ॥ १ ॥
सतगुरु ने मोहिं भेद जनाई।
धुन सँग सूरत अधर चढ़ाई।
झाँका गगन शिवाला हो ॥ ३ ॥
गुरु दयाल मेरे हुए सहाई।
मन माया की पेश न जाई।
थाका काल कराला हो ॥ ४ ॥

राधास्वामी धाम गई मैं सज के।
राधास्वामी चरन पकड़ लिये धज से।
उन कीन्हा मोहिं निहाला हो ॥ ५ ॥

॥ शब्द ११ ॥

सतगुरु प्यारे ने दृढ़ाया,
निज नाम पियारा हो ॥ टेक ॥
वह निज नाम है राधास्वामी नामा।
ऊँच से ऊँच है तिस का धामा।
कुल रचना का अधारा हो ॥ १ ॥
जहँ नहिं पारब्रह्म और माया।
काल करम नहिं और नहिं काया।
वह पद सब से न्यारा हो ॥ २ ॥
जहँ धुन नाम रसीली बोले।
सुन सुन सुत आनँद में फूले।
लख पद अपर अपारा हो ॥ ३ ॥
जहँ हंसन का सदा बिलासा।
पुरुष दरस बिन और न आसा।
तज दिये भोग असारा हो ॥ ४ ॥

मैं अति दीन पड़ी गुरु चरना ।
सब बल तज गही राधास्वामी सरना।
नहिं कोइ और सहारा हो ॥ ५ ॥

॥ शब्द १२ ॥

सतगुरु प्यारे ने जिताई,
काल से बाज़ी हो ॥ टेक ॥
भोगन सँग मैं बहु दुख पाये ।
जगत जाल में रही भरमाये ।
चेता न यह मन पाजी हो ॥ १ ॥
जब से सतगुरु सरना लीन्ही ।
घट का भेद मेहर कर दीन्ही ।
मधुर मधुर धुन गाजी हो ॥ २ ॥
सुरत चढ़ाय गगन पहुँचाई ।
काल बिघन सब दूर कराई ।
माया भी रही लाजी हो ॥ ३ ॥
जगत जीव सब माया चेरे ।
जन्में मरें सहें दुक्ख घनेरे ।
पंडित भेख और क़ाज़ी हो ॥ ४ ॥

मेहर से गुरु सेवा बन आई ।
सुन सुन धुन सुत अधर चढ़ाई ।
राधास्वामी हो गये राज़ी हो ॥ ५ ॥

॥ शब्द १३ ॥

सतगुरु प्यारे ने लखाया,
निज रूप अपारा हो ॥ टेक ॥
हद्द हद्द सब मत में गावें ।
बेहद रूप संत दरसावें ।
माया घेर के पारा हो ॥ १ ॥
रूप अरूप का भेद सुनावें ।
मायक रूप स्थिर न रहावें ।
वह निज रूप नियारा हो ॥ २ ॥
संतन निरमल देस जनाया ।
जहँ नहिँ काल करम और माया ।
वह पद सार का सारा हो ॥ ३ ॥
सत्तपुरुष जहँ सदा बिराजें ।
हंस मंडली अद्भुत राजें ।
करते प्रेम पियारा हो ॥ ४ ॥

जिन जिन यहँ गुरु भक्ती धारी ।
सो पहुँचे सतगुरु दरबारी ।
राधास्वामी चरन निहारा हो ॥ ५ ॥
संतन का भगवंत अविनाशी ।
भेद भक्ति जहँ वहँ परकाशी ।
सत्तपुरुष दरबारा हो ॥ ६ ॥
राधास्वामी धाम अनाम अपारा ।
जहँ नहिँ रंग रूप आकारा ।
अभेद भक्ति जहँ धारा हो ॥ ७ ॥
या बिधि जो कोइ कार कमावे ।
पिरथम गुरु भक्ती चित लावे ।
जग से हो जाय न्यारा हो ॥ ८ ॥
अंतर सतगुरु भक्ती साधे ।
सुरत शब्द मारग आराधे ।
सोई जाय भौ पारा हो ॥ ९ ॥
सत्तपुरुष का दरशन पावे ।
वहँ राधास्वामी चरन समावे ।
येही सत्त उधारा हो ॥ १० ॥

और मते सब काल पसारे ।
माया के कोइ जाय न पारे ।
करम भरम पच हारा हो ॥ ११ ॥
जो चाहो सच्चा उद्धारा ।
राधास्वामी मत धारो यह सारा ।
बारम्बार पुकारा हो ॥ १२ ॥

॥ शब्द १४ ॥

सतगुरु प्यारे ने लगाई,
बिरह करारी हो ॥ टेक ॥
सुन सुन महिमा प्रीतम प्यारे ।
और सोभा निज धाम अपारे ।
चाह उठी हिये भारी हो ॥ १ ॥
सतगुरु चरन हुइ दीन अधीनी ।
उमँग उमँग उन सेवा कीनी ।
मेहर दृष्टि मो पै डारी हो ॥ २ ॥
निज घर का मोहिँ भेद सुनाई ।
राह चलन की जुगत बताई ।
सुन धुन पिंड से न्यारी हो ॥ ३ ॥

प्रेम सहित स्रुत धुन मैं लागी ।
शब्द शब्द सुन हुइ अनुरागी ।
तन मन गुरु पै वारी हो ॥ ४ ॥
तीन लोक के हो गइ पारा ।
दयाल देस संतन दरबारा ।
राधास्वामी चरन निहारी हो ॥ ५ ॥

॥ शब्द १५ ॥

सतगुरु प्यारे ने जगाया,
अचरज भागा हो ॥ टेक ॥
बहु दिन सोई मोह नींद मैं ।
मन सँग भरमी जुगन जुगन मैं ।
धर भोगन मैं रागा हो ॥ १ ॥
सतगुरु मिले मोहिँ बचन सुनाये ।
सतसंगत मैं लीन्ह लगाये ।
बढ़त चरन अनुरागा हो ॥ २ ॥
ध्यान धरत तन मन हुआ निश्चल ।
भजन करत मेरा चित हुआ निरमल ।
जगत मोह अब त्यागा हो ॥ ३ ॥

गुरु चरनन में प्रीत बढ़ावत ।
सँशय तज परतीत दृढ़ावत ।
मनुआँ धुन रस पागा हो ॥ ४ ॥
मेहर करी राधास्वामी गुरु प्यारे ।
तीन लोक के किया मोहिँ पारे ।
सहज प्रेम रँग लागा हो ॥ ५ ॥

॥ शब्द १६ ॥

सतगुरु प्यारे ने सिखाई,
भक्ती रीती हो ॥ टेक ॥
सब जिव भूल रहे जग माहीँ ।
बिन गुरु को घर भेद सुनाई ।
को लावे परतीती हो ॥ १ ॥
जब गुरु मिलैँ भाग से पूरे ।
करम भरम सब होवैँ दूरे ।
चरनन मेँ दें प्रीती हो ॥ २ ॥
सतसँग कर नित प्रीत बढ़ाना ।
सेवा कर नइ उमँग जगाना ।
छूटे जग बिपरीती हो ॥ ३ ॥

शब्द भेद दे सुरत चढ़ावैं ।
भौसागर के पार पहुँचावैं ।
काल करम दल जीती हो ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरन मिला बिसरामा ।
दूर हुए सब अर्थ और कामा ।
हुइ सुफल उमरिया बीती हो ॥ ५ ॥

॥ शब्द १७ ॥

सतगुरु प्यारे ने छुड़ाई,
आवागवन की डोरी हो ॥ टेक ॥
सतसँग मैं मोहिँ सार बुझाया ।
निज घर का सब भेद सुनाया ।
करम भरम किये दूरी हो ॥ १ ॥
गुरु स्वरूप का धारा ध्याना ।
धुन सँग किया ब्रह्मण्ड पयाना ।
श्याम कंज दल फोड़ी हो ॥ २ ॥
काल करम बहु अटक लगाये ।
माया भी नये चरित्र दिखाये ।
गुरु बल उन मुख मोड़ी हो ॥ ३ ॥

त्रिकुटी जाय सुनी गुरु बानी ।
सतपुर सतगुरु रूप पिछानी ।
अलख अगम स्रुत जोड़ी हो ॥ ४ ॥
राधास्वामी निज किरपा धारी ।
सुरत हुई उन चरनन प्यारी ।
कुल जग से अब तोड़ी हो ॥ ५ ॥

॥ शब्द १८ ॥

सतगुरु प्यारे ने मिटाया,
काल कलेशा हो ॥ टेक ॥
दया करी मोहिं निकट बुलाया ।
राधास्वामी चरन प्रतीत दृढ़ाया ।
भेद दिया निज देसा हो ॥ १ ॥
माया काल की हद्द लखाई ।
करम भरम सब दूर कराई ।
दिया शब्द उपदेशा हो ॥ २ ॥
मेहर का बल दे सुरत चढ़ाई ।
घट में बिमल बिलास दिखाई ।
हट गये राग और द्वेषा हो ॥ ३ ॥

जनम मरन की त्रास नसाई ।
तीन लोक के पार पहुँचाई ।
जहँ नहिं ब्रह्म महेशा हो ॥ ४ ॥
सत्त अलख और अगम निहारे ।
मिल गये राधास्वामी पुरुष अपारे ।
पूरन धनी धनेशा हो ॥ ५ ॥

॥ शब्द १९ ॥

सतगुरु प्यारे ने सुनाई,
अचरज बानी हो ॥ टेक ॥
भरमत रही जगत में बहु दिन ।
देवी देव करत रही पूजन ।
पाइ न घर की निशानी हो ॥ १ ॥
बेद शास्त्र और सिम्रित पुराना ।
तौरेत अंजील और कुराना ।
गुरु बिन भरम कहानी हो ॥ २ ॥
सतगुरु मिले मेहर से आई ।
भेद सुनाय जुगत बतलाई ।
शब्द सुनूँ अस्मानी हो ॥ ३ ॥

घट में अद्भुत लीला दरसे ।
मन और सुरत चरन जाय परसे ।
गुरु स्वरूप पहिचानी हो ॥ ४ ॥
गुरु की दया ले चाली आगे ।
पहुँची जहाँ बीन धुन जागे ।
सतगुरु रूप दिखानी हो ॥ ५ ॥
परम पुरुष राधास्वामी प्यारे ।
उन चरनन में रहूँ सदा रे ।
आदि अनादि ठिकानी हो ॥ ६ ॥
राधास्वामी धाम की महिमा भारी ।
सब रचना तिस के आधारी ।
सुरत शब्द की खानी हो ॥ ७ ॥

॥ शब्द २० ॥

सतगुरु प्यारे ने दिखाई,
गगन अटारी हो ॥ टेक ॥
जग परमारथ संग भुलानी ।
तीरथ बर्त रही लिपटानी ।
करम चढ़ाये भारी हो ॥ १ ॥

निज घर का गुरु पता बताई ।
पिया मिलन की गैल लखाई ।
सुरत शब्द मत धारी हो ॥ २ ॥
सतसँग करत भरम सब भागे ।
कर अभ्यास सुरत मन जागे ।
शब्द सुना झनकारी हो ॥ ३ ॥
गुरु चरनन में बाढ़ी प्रीती ।
सुरत शब्द की हुई परतीती ।
त्रिकुटी ओर सिधारी हो ॥ ४ ॥
गुरु स्वरूप गगना में देखा ।
काल करम का मिट गया लेखा ।
सुरत हुई गुरु प्यारी हो ॥ ५ ॥
सुन की धुन सुन सुरत चढ़ाई ।
मन माया से खूँट छुड़ाई ।
हंसन सँग करी यारी हो ॥ ६ ॥
मान सरोवर किये अशनाना ।
सत्तपुरुष का धारा ध्याना ।
राधास्वामी काज सुधारी हो ॥ ७ ॥

॥ शब्द २१ ॥

सतगुरु प्यारे ने दिलाया,
शब्द में भावा हो ॥ टेक ॥
शब्द ने पिरथम करी पुकारा ।
शब्द ने चहुँ दिस किया उजारा ।
वही सब रचन रचावा हो ॥ १ ॥
आदि पुकार सुने जो कोई ।
देस संत का पावे सोई ।
शब्द हि देत बुलावा हो ॥ २ ॥
शब्दहि फैल रहा चहुँ देशा ।
शब्द शब्द सुन करो प्रवेशा ।
शब्दहि पार लगावा हो ॥ ३ ॥
शब्द भेद बड़भागी पावें ।
शब्द संग वे सुरत चढ़ावें ।
शब्दहि शब्द मिलावा हो ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर से दिया घट भेदा ।
सुन सुन शब्द मिटे कर्म खेदा ।
नित गुरु महिमा गावा हो ॥ ५ ॥

॥ शब्द २२ ॥

सतगुरु प्यारे ने गिराया,
काल कराला हो ॥ टेक ॥
सुन सुन महिमा सतसँग केरी ।
दरशन कर हुई चरनन चेरी ।
गुरु लीन सम्हाला हो ॥ १ ॥
नाद की महिमा गुरु मोहिँ सुनाई ।
जस उतपत्ति हुई सब गाई ।
लखा गुरु देश निराला हो ॥ २ ॥
ता के नीचे काल पसारा ।
माया ब्रह्म और तिरगुन धारा ।
सब रचना दुख साला हो ॥ ३ ॥
गुरु ने निकसन जुगत बताई ।
शब्द भेद दे सुरत लगाई ।
लखा जोत जमाला हो ॥ ४ ॥
त्रिकुटी होय गई दस द्वारे ।
भँवर गुफा सतलोक निहारे ।
मिले पुरुष दयाला हो ॥ ५ ॥

काल बिघन गुरु दूर कराये।
मन माया भी रहे मुरझाये।
गुरु कीन्ह निहाला हो ॥ ६ ॥
पुरुष दया कर अंग लगाई।
बल अपना दे अधर चढ़ाई।
जहँ राधास्वामी तेज जलाला हो ॥७॥

॥ शब्द २३ ॥

सतगुरु प्यारे ने नचाया,
मनुआँ नटवा हो ॥ टेक ॥
जुगन जुगन से जग में बहता।
भोग बासना सँग दुख सहता।
झाँका औघट घटवा हो ॥ १ ॥
जग ब्योहार लगा अब साँचा।
कुल मालिक का भेद न जाँचा।
भूला घर की बटवा हो ॥ २ ॥
सतगुरु संत मिले किरपा से।
भेद दिया उन मोहिं दया से।
मन हुआ चरनन लटवा हो ॥ ३ ॥

मन रहा खेल कला ज्यों नट की ।
ख़बर लेत सुत चढ़ सर तट की ।
सुनत रही धुन छटवा हो ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया गई सुत सतपुर ।
अलख अगम फिर मिले परम गुरु ।
काज किया मेरा झटवा हो ॥ ५ ॥

॥ शब्द २४ ॥

सतगुरु प्यारे ने बसाई,
उजड़ी बाड़ी हो ॥ टेक ॥
जग सँग भूल गई सतनामा ।
मन में बसत क्रोध और कामा ।
डूब रहि सारी हो ॥ १ ॥
गुरु दयाल मोहिँ जब से भेंटे ।
काल करम माया रही ऐंठे ।
भेद मिला सत करतारी हो ॥ २ ॥
सील छिमा चित माहिँ बसानी ।
काल करम से खूँट छुड़ानी ।
सुरत शब्द मत धारी हो ॥ ३ ॥

मन और सुरत मगन हुए सुन धुन।
पाप और पुन्न मोक्ष हुए छिन छिन।
प्रेम धार घट जारी हो ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरन बसे अब हिय में।
प्रेम बढ़त दिन दिन अब जिय में।
गुरु भी पार उतारी हो ॥ ५ ॥

॥ शब्द २५ ॥

सतगुरु प्यारे ने सिँचाई,
प्रेम कियारी हो ॥ टेक ॥
जब से मैं सतगुरु दरशन पाये।
चितवन में दइ प्रीत जगाये।
सुरत हुई गुरु प्यारी हो ॥ १ ॥
दिन दिन प्रीत बढ़त हिये अंतर।
रटत रहूँ निस दिन गुरु मंतर।
हुइ गुरु नाम अधारी हो ॥ २ ॥
चित्त रहे गुरु चरन समाना।
गुरु स्वरूप हिये माहिँ बसाना।
निरख रही उजियारी हो ॥ ३ ॥

सतगुरु संग लगा मोहिं प्यारा।
करम भरम हुए दूर असारा।
सुन अनहद झनकारी हो ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरन प्रेम बढ़ा भारी।
तन मन धन सब उन पर वारी।
हुइ दरशन मतवारी हो ॥ ५ ॥

॥ शब्द २६ ॥

सतगुरु प्यारे ने खिलाई,
घट फुलवारी हो ॥ टेक ॥
शब्द भेद ले लगी सुत घट में।
धुन के फूल खिले तिल पट में।
झाँकी कँवल कियारी हो ॥ १ ॥
धुन घंटा और संख सुनाई।
सूरज चाँद अनेक दिखाई।
चढ़ गइ गगन अटारी हो ॥ २ ॥
सुन्न मँडल का ताला खोला।
शब्द सेत धुन सारँग बोला।
जहँ अमी सरोवर भारी हो ॥ ३ ॥

आगे चल गइ भँवर अस्थाना ।
सेत सूर जहँ नूर दिखाना ।
मुरली सँग लगी तारी हो ॥ ४ ॥
आगे लखा अचरज उजियारा ।
सत्त अलख और अगम निहारा ।
राधास्वामी चरन बलहारी हो ॥ ५ ॥

॥ शब्द २७ ॥

सतगुरु प्यारे ने सँवारी,
मेरी सुरत निमानी हो ॥ टेक ॥
तज अहंकार गई गुरु पासा ।
बचन सुनत मन हुआ हुलासा ।
प्रेम प्रीत की खानी हो ॥ १ ॥
कर सतसंग हुआ मन निरमल ।
बढ़ा अनुराग चित्त हुआ निश्चल ।
रोम रोम हरखानी हो ॥ २ ॥
गुरु स्वरूप का धारा ध्याना ।
सुरत लगाय सुनी धुन ताना ।
यही गुरु ज्ञान बखानी हो ॥ ३ ॥

चढ़ चंद सुरत गई दस द्वारे ।
काल बिघन सब दूर निकारे ।
गुरु की मेहर पिछानी हो ॥ ४ ॥
राधास्वामी लिया मोहिँ अंग लगाई,
मेहर से दिया सब काज बनाई ।
पहुँची अधर ठिकानी हो ॥ ५ ॥

॥ शब्द २८ ॥

सतगुरु प्यारे ने सुधारा,
मनुआँ अनाड़ी हो ॥ टेक ॥
दया करी सतसँग में खींचा ।
बचन सुनाय अधिक मन भींचा ।
भोग तरंग निकारी हो ॥ १ ॥
सेवा करत बढ़ा अनुरागा ।
सोता मन सुन सुन धुन जागा ।
लखी घट जोत उजारी हो ॥ २ ॥
गुरु की दया ले गई सुत आगे ।
गगन ओर जहँ ओअं जागे ।
हुइ गुरु शब्द अधारी हो ॥ ३ ॥

वहाँ से चल पहुँची सतपुर में।
सतगुरु प्यारे मिले अधर में।
गति मति अगम अपारी हो ॥ ४ ॥
गुरु प्यारे मोहिं आप सुधारी।
अलख अगम के पार किया री।
राधास्वामी चरन निहारी हो ॥ ५ ॥

॥ शब्द २९ ॥

सतगुरु प्यारे ने खिलाई,
अब के नइ होरी हो ॥ टेक ॥
काम क्रोध को मार हटावा।
सील छिमा हिये माहिं बसावा।
लोभ मोह सिर फोड़ी हो ॥ १ ॥
मान ईरखा भी दइ त्यागी।
मन हुआ जग से सहज बैरागी।
गुरु चरनन सुत जोड़ी हो ॥ २ ॥
प्रेम रंग घट माहिं भरावा।
पच इंद्री पिचकार बनावा।
गुरु पर भर भर छोड़ी हो ॥ ३ ॥

दिन दिन प्रीत बढ़त गुरु चरना ।
उमँग उमँग हिये धारी सरना ।
जग से अब सुत मोड़ी हो ॥ ४ ॥
राधास्वामी दृष्टि मेहर की कीन्ही ।
प्रेम दात मोहिं निज कर दीन्ही ।
कुल जग नाता तोड़ी हो ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३० ॥

सतगुरु प्यारे ने मचाई,
जग बिच होरी हो ॥ टेक ॥
हेला मार कहा जीवन को ।
सतसँग कर रोको तन मन को ।
निज घर सुरत बहोरी हो ॥ १ ॥
प्रेम प्रीत का रँग बरसाया ।
शब्द गुरू सँग फाग खिलाया ।
गुन गुलाल घट घोरी हो ॥ २ ॥
पाँच दूत को मार पछाड़ा ।
तीन गुनों का कूड़ा टारा ।
काल करम बल तोड़ी हो ॥ ३ ॥

सुन में जाय फिर फाग रचाया ।
हंसन संग अबीर उड़ाया ।
धूम मची नहिँ थोड़ी हो ॥ ४ ॥
सतपुर जाय हुई सुत निर्मल ।
अलख अगम को निरखा चढ़ चल ।
राधास्वामी चरनन जोड़ी हो ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३१ ॥

सतगुरु प्यारे ने निभाई,
खेप हमारी हो ॥ टेक ॥
नइया मोर बहत मँझधारा ।
गुरु बिन कौन लगावे पारा ।
वही जीव हितकारी हो ॥ १ ॥
सतगुरु दीनदयाल हमारे ।
मेहर करी मोहिँ लीन्ह सम्हारे ।
भौ सागर पार उतारी हो ॥ २ ॥
बचन सुना दई अगम निशानी ।
सुरत शब्द मारग दरसानी ।
सुत गगना ओर सिधारी हो ॥ ३ ॥

लख लख जोत सूर और चंदा।
तोड़ अंड फोड़ा ब्रह्मंडा।
भँवरगुफा धुन धारी हो ॥ ४ ॥
मेहर हुई लखिया सत नूरा।
अलख अगम की हो गइ धूरा।
राधास्वामी काज सँवारी हो ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३२ ॥

सतगुरु प्यारे ने लजाये,
माया ब्रह्म खिलाड़ी हो ॥ टेक ॥
दीन होय जो सरनी आये।
तिन जीवन को लिया अपनाये।
भेद दिया उन भारी हो ॥ १ ॥
कर अभ्यास बढ़ी हिये प्रीती।
सुरत शब्द की हुइ परतीती।
सहज गये भौ पारी हो ॥ २ ॥
जिन सतगुरु से किया अहंकारा।
उनका हुआ नहिं जीव गुज़ारा।
रहे माया दर के भिखारी हो ॥ ३ ॥

याते चेत करो सब कोई ।
बिन गुरु सरन उबार न होई ।
क्यौं नर देही हारी हो ॥ ४ ॥
राधास्वामी सतगुरु दीनदयाला ।
सब जीवन की करैं प्रतिपाला ।
जिन गुरु भक्ती धारी हो ॥ ५ ॥
करम जाल सब देहिँ कटाई ।
पाप पुन्न सब सहज नसाई ।
माया बाज़ी हारी हो ॥ ६ ॥
राधास्वामी निज घर भेद लखावैं ।
सुरत चढ़ाय अधर पहुँचावैं ।
काल रहा झक मारी हो ॥ ७ ॥

॥ शब्द ३३ ॥

सतगुरु प्यारे ने बसाई,
हिये भक्ति करारी हो ॥ टेक ॥
सुन सुन बचन नसे सब भरमा ।
दूर हुए सब कंटक कर्मा ।
शब्द संग लगी तारी हो ॥ १ ॥

अभ्यास करत हिये बढ़त अनंदा ।
द्रोह मोह का काटा फंदा ।
घूम चली दस द्वारी हो ॥ २ ॥
नभ मैं निरखा जोत सरूपा ।
त्रिकुटी जाय लखा गुरु रूपा ।
सुन मैं चंद्र उजारी हो ॥ ३ ॥
भँवरगुफा सोहं धुन पाई ।
मधुर बाँसरी बजे सुहाई ।
सुनी बीना झनकारी हो ॥ ४ ॥
अलख अगम करी मेहर नियारी ।
राधास्वामी चरन प्रीत बढ़ी भारी ।
अचरज दरस निहारी हो ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३४ ॥

सतगुरु प्यारे ने निकारे,
मन के बिकारा हो ॥ टेक ॥
सतसँग मैं गुरु लीन्ह लगाई ।
बचन सुना मेरी समझ बढ़ाई ।
मेहर से दीन्ह सहारा हो ॥ १ ॥

अपने चरन की प्रीत बसाई ।
सुरत शब्द की राह बताई ।
भेद दिया घट सारा हो ॥ २ ॥
कर अभ्यास मलिनता नासी ।
घट में शब्द किया परकासी ।
सुरत चढ़ी नौ पारा हो ॥ ३ ॥
पाँच रंग निरखे तत सारा ।
चमक बीजली चंद्र निहारा ।
फोड़ा तिल का दूवारा हो ॥ ४ ॥
गुरु पद लख निरखा सत सूरा ।
अलख अगम का पाया नूरा ।
राधास्वामी धाम निहारा हो ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३५ ॥

सतगुरु प्यारे ने हटाये,
बिघन अनेका हो ॥ टेक ॥
परमारथ की सुध जब लीन्ही ।
उमँग सहित गुरु सेवा कीन्ही ।
धर मन में गुरु टेका हो ॥ १ ॥

जग जिव देख ऐंठ रहे मन में ।
निंद्या कर कर फूलैं तन में ।
जानैं न अंत का लेखा हो ॥ २ ॥
माया बिघन अनेक हटाये ।
संसे भरम सब दूर कराये ।
काटी करम की रेखा हो ॥ ३ ॥
सतगुरु दया करूँ क्या बरनन ।
भेद दिया मोहिँ राधास्वामी चरनन ।
धुर पद अगम अलेखा हो ॥ ४ ॥
वा घर भेद कोई नहिँ जाने ।
जोगी ज्ञानी भरम भुलाने ।
पंडित शेख और भेषा हो ॥ ५ ॥
मेहर से गुरु मोहिँ जुगत बताई ।
धुन में मन और सुरत लगाई ।
शब्द तेज घट देखा हो ॥ ६ ॥
राधास्वामी नाम हिये बिच धारा ।
रूप अनूप का ध्यान सम्हारा ।
अचरज दरशन पेखा हो ॥ ७ ॥

॥ शब्द ३६ ॥

सतगुरु प्यारे ने मेहर से,
दिया भक्ती दाना हो ॥ टेक ॥
सुरत अजान जगत में बहती ।
करम भरम सँग दुख सुख सहती ।
मिला न ठौर ठिकाना हो ॥ १ ॥
तीरथ बर्त नेम आचारा ।
बाचक ज्ञान बिबेक सम्हारा ।
निज घर भेद न जाना हो ॥ २ ॥
संत दयाल मिले मोहिं जबही ।
घर का भेद दिया उन तबही ।
भजन भक्ति और ध्याना हो ॥ ३ ॥
बचन सुना परतीत बढ़ाई ।
घट परचे दे प्रीत जगाई ।
हिये में उमँग समाना हो ॥ ४ ॥
मन और सुरत लगे घट धुन में ।
गुरु मारग रहे चलत अपन में ।
राधास्वामी धाम निशाना हो ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३७ ॥

सतगुरु प्यारे ने चुकाया,
काल का क़रज़ा हो ॥ टेक ॥
मेहर से मोहिं सतसँग में खींचा ।
भक्ती पौद लगा गुरु सींचा ।
काटे बिघन और हरजा हो ॥ १ ॥
दया गुरु परख बढ़त परतीती ।
सेव करत जागत नइ प्रीती ।
बढ़त मेरा दिन दिन दरजा हो ॥ २ ॥
शब्द का मारग दीन्ह लखाई ।
सुत मेरी धुन सँग दीन्ह मिलाई ।
आज घट गगना गरजा हो ॥ ३ ॥
भरम गुरु मेट दिये मेरे सारे ।
करम भी काट दिये अति भारे ।
काल भी डर से लरजा हो ॥ ४ ॥
राधास्वामी कीन्ह जगत उपकारा ।
चरन सरन दे जीव उबारा ।
तार दई सब परजा हो ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३८ ॥

सतगुरु प्यारे ने चिताये,
जीव घनेरे हो ॥ टेक ॥
सब जिव भरम रहे जग माहीँ
भोगन संग अधिक लिपटाईँ ।
पड़े अँधेरे हो ॥ १ ॥
सतगुरु हेला मार सुनावैं ।
घट मैं घर की राह लखावैं ।
चेतो याहि उजेरे हो ॥ २ ॥
काल शिकारी मग मैं ठाढ़ा ।
बिघन अनेक लगावत भारा ।
गुरु सँग भाग सवेरे हो ॥ ३ ॥
गुरु उपदेश धार लो मन मैं ।
शब्द संग चढ़ चलो गगन मैं ।
मत कर देर अबेरे हो ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया सेव बन आई ।
सुन सुन धुन सुत अधर चढ़ाई ।
पाय गई पद नेड़े हो ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३९ ॥

सतगुरु प्यारे ने छुड़ाया,
जग ब्योहार असारा हो ॥ टेक ॥
मेहर दया गुरु कस कहुँ गाई ।
सतसँग मेँ मोहिँ खैंच लगाई ।
भेद दिया घट सारा हो ॥ १ ॥
ध्यान धरत गुरु छबि दरसानी ।
शब्द सुनत मन हुआ अकामी ।
सुरत चली गुरु लारा हो ॥ २ ॥
जोत सरूप लखा नभपुर मेँ ।
गुरु दरशन पाया त्रिकुटी मेँ ।
भौजल पार उतारा हो ॥ ३ ॥
सुन मेँ जाय सरोवर न्हाई ।
हंसन संग मिलाप बढ़ाई ।
निरखा चंद्र उजारा हो ॥ ४ ॥
मुरली बीन सुनी धुन दोई ।
अलख अगम पद परसे सोई ।
राधास्वामी धाम निहारा हो ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४० ॥

सतगुरु प्यारे ने बजाई,
प्रेम सुरलिया हो ॥ टेक ॥
सुन सुन धुन मोहित हुइ मन में ।
प्रेम बढ़ा मेरे रगन रगन में ।
जागी बिरह बिकलिया हो ॥ १ ॥
सतसँग महिमा कस कहुँ गाई ।
शब्द जुगत कस करूँ बड़ाई ।
हरे बिकार सकलिया हो ॥ २ ॥
बिरह अगिन हिये भड़कन लागी ।
बिन पिया दरस चित्त बैरागी ।
काम न देत अकलिया हो ॥ ३ ॥
सतगुरु प्यारे दया उमगाई ।
दरशन दे मेरी प्यास बुझाई ।
बरसत प्रेम बदलिया हो ॥ ४ ॥
जग जिव गुरु महिमा नहिँ जानें ।
मन मत अपनी फिर फिर ठानें ।
अटके जाय नकलिया हो ॥ ५ ॥

प्रेम भक्ति की सार न जानी।
भोगन माहिँ रहे अटकानी।
फिर फिर काल निगलिया हो ॥ ६ ॥
मो को सतगुरु लिया अपनाई।
चरन अमी रस नित्त पिलाई।
दिन दिन होत मँगलिया हो ॥ ७ ॥
सतगुरु दया गई भौ पारा।
सुन्न शब्द की सुनी पुकारा।
झाँका सेत कँवलिया हो ॥ ८ ॥
वहँ से सुरत अधर को धाई।
सत्तपुरुष धुन बीन सुनाई।
पहुँची सत धाम अमलिया हो ॥ ९ ॥
राधास्वामी दया बना मम काजा।
अलख अगम का लखा समाजा।
अचल में जाय मचलिया हो ॥ १० ॥

॥ शब्द ४१ ॥

सतगुरु प्यारे ने सुनाई,
जुगत निराली हो ॥ टेक ॥

सुन गुरु बचन हुई परतीती ।
गुरु ने सिखाई भक्ती रीती ।
लीन्हा मोहिं सम्हाली हो ॥ १ ॥
सतसंग करत भाव बढ़ा दिन दिन ।
प्रीत लगी अब राधास्वामी चरनन ।
खुल गया भेद दयाली हो ॥ २ ॥
उमँग उठी सेवा की भारी ।
तन मन धन गुरु चरनन वारी ।
हो गइ आज निहाली हो ॥ ३ ॥
शब्द भेद गुरु दीन्ह जनाई ।
धुन सँग सूरत उमँग लगाई ।
निरखा रूप जमाली हो ॥ ४ ॥
मन इच्छा गुरु दीन्ह सुलाई ।
काल करम बल सबहि नसाई ।
बिघन बिकार निकाली हो ॥ ५ ॥
मेहर से दिया गुरु खेत जिताई ।
सरन धार गुरु चरन समाई ।
मिट गई ख़ाम ख़याली हो ॥ ६ ॥

सतगुरु सुरत सिँगार कराया।
राधास्वामी प्यार से गोद बिठाया।
नित घट होत दिवाली हो ॥ ७ ॥
दरशन कर मेरी गति हुइ कैसी।
मीन मगन होय जल में जैसी।
दूर हुए दुख साली हो ॥ ८ ॥
प्यारे राधास्वामी गुन कस कह गावा।
संत रूप धर काज बनावा।
अटल जोत घट बाली हो ॥ ९ ॥
आओ रे आओ जिव सरनी आओ।
राधास्वामी चरनन प्रेम बढ़ाओ।
छूटे सबहि बेहाली हो ॥ १० ॥
मेहर करें राधास्वामी गुरु प्यारे।
छिन छिन तुमको लेहिँ उबारे।
गति पावो आज मराली हो ॥ ११ ॥

॥ शब्द ४२ ॥

सतगुरु प्यारे ने खुलाया,
घट प्रेम ख़ज़ाना हो ॥ टेक ॥

मेहर दृष्टि मेरे सतगुरु डाली।
सुरत शब्द सुन घट में चाली।
मन हुआ आज निमाना हो ॥ १ ॥
रूप अनूप देख हिये माहीं।
सुरत निरत दोउ घट घिर आईं।
मन हुआ प्रेम दिवाना हो ॥ २ ॥
मद और मोह अहँगता त्यागी।
भक्ति नवीन हिये में जागी।
गुरु पै बल बल जाना हो ॥ ३ ॥
गुरु छबि मोहिं लगी अति प्यारी।
बार बार चरनन पर वारी।
सुध बुध सब बिसराना हो ॥ ४ ॥
मेहर दया ले चढ़ी गगन में।
गुरु बतियाँ सुन हुई मगन मैं।
काल और करम हिराना हो ॥ ५ ॥
सुन में जा हुइ हंसन प्यारी।
अमी धार जहँ हर दम जारी।
पी पी अमी अघाना हो ॥ ६ ॥

भँवरगुफा जाय लागी ताड़ी।
धुन मुरली जहँ बजत करारी।
छूटा आना जाना हो ॥ ७ ॥
सतपुर सतगुरु दरस दिखानी।
बीन सुनत सुत हुइ मस्तानी।
अचरज खेल खिलाना हो ॥ ८ ॥
अलख अगम के पार ठिकाना।
राधास्वामी दरस दिखाना।
चरनन माहिँ समाना हो ॥ ९ ॥

॥ शब्द ४३ ॥

सतगुरु प्यारे ने सिँगारी,
सुरत रँगीली हो ॥ टेक ॥
जग मैं सुरत रही मेरी अटकी।
करम भरम मैं बहु बिधि भटकी।
गह रही टेक हठीली हो ॥ १ ॥
बचन सुनाय गढ़त गुरु कीन्ही
घट का भेद मेहर कर दीन्ही।
धुन शब्द सुनाई रसीली हो ॥ २ ॥

सुन सुन धुन सुत नभ पर धाई ।
गगन फोड़ गई सुन में छाई ।
हो गइ आज छबीली हो ॥ ३ ॥
बिघन सबहि गुरु दूर कराई ।
काल करम दोउ रहे लजाई ।
माया भई शरमीली हो ॥ ४ ॥
सुन्न शिखर पर चढी सुत बिरहन ।
भँवरगुफा धुन पड़ी अब सरवन ।
छोड़ दिया मठ नीली हो ॥ ५ ॥
सतपुर जाय किया अब बासा ।
हंस करें जहँ नित्त बिलासा ।
सुनी धुन बीन सुरीली हो ॥ ६ ॥
यहँ से सूरत अधर चढ़ाई ।
राधास्वामी दरस पाय हरखाई ।
हो गई आज सजीली हो ॥ ७ ॥

॥ शब्द ४४ ॥

सतगुरु प्यारे ने पढ़ाई,
घट की पोथी हो ॥ टेक ॥

जगत भाव में रही भुलानी ।
बाहर मुख जुगती रही कमानी ।
किरत करी सब थोथी हो ॥ १ ॥
जब से सतगुरु संग लगाई ।
सार बचन मोहिं दिये समझाई ।
जाग उठी सुत सोती हो ॥ २ ॥
सतसँग करत बिकार घटाती ।
घट धुन में नित सुरत लगाती ।
दिन दिन कलमल धोती हो ॥ ३ ॥
गुरु चरनन बढ़ता अनुरागा ।
जग भोगन से चित बैरागा ।
धुन में सूरत पोती हो ॥ ४ ॥
दया हुई सुत नभ पर चढ़ती ।
घंटा और संख धुन सुनती ।
निरख रही घट जोती हो ॥ ५ ॥
बंक नाल धस त्रिकुटी धाई ।
काल करम दोउ रहे मुरझाई ।
माया सिर धुन रोती हो ॥ ६ ॥

सत्त पुरुष के चरनन लागी।
राधास्वामी धुन सँग सूरत पागी।
चली प्रेम क्रियारी बोती हो ॥ ७ ॥

॥ शब्द ४५ ॥

सतगुरु प्यारे ने सुनाई,
प्रेमा बानी हो ॥ टेक ॥
सुन सुन बचन प्रेम भरा मन मैं।
फूली नाहिँ समाऊँ तन मैं।
हरख हरख हरखानी हो ॥ १ ॥
मन और सुरत सिमट कर आये।
गुरु मूरत हिये मैं दरसाये।
हुई चरनन मस्तानी हो ॥ २ ॥
छिन छिन मन अस उमँग उठाई।
दरशन रस ले रहूँ अघाई।
चरनन पर कुरबानी हो ॥ ३ ॥
बिन दरशन मोहिँ चैन न आवे।
सुमिर सुमिर पिया जिया घबरावे।
भावे अन्न न पानी हो ॥ ४ ॥

बिनय सुनो राधास्वामी प्यारे ।
चरनन में मोहिं राखो सदा रे ।
तुम समरथ पुरुष सुजानो हो ॥ ५ ॥

वचन १२ प्रेम प्रकाश भाग ५

॥ शब्द १ ॥

अरी हे सहेली प्यारी, प्रीतम दरस
दिखादे, जियरा बहु तड़पे ॥ टेक ॥
काल करम बहु पेच लगाये ।
बिन दरशन मैं रहूँ घबराये ।
मनुआँ नित तरसे ॥ १ ॥
जब जब प्रीतम छबि चित लाऊँ ।
नैनन से जल धार बहाऊँ ।
हियरा बहु धड़के ॥ २ ॥
प्रीतम पीर सतावत निस दिन ।
बिन सतसंग दुखित रहे तन मन ।
भाली ज्यों खड़के ॥ ३ ॥

जो कोइ प्रीतम महिमा गावे ।
लीला और बिलास सुनावे ।
मनुआ अति हरखे ॥ ४ ॥
जब राधस्वामी का दरशन पाऊँ ।
उमँग उमँग मैं नित गुन गाऊँ ।
घट आनँद बरसे ॥ ५ ॥

॥ शब्द २ ॥

अरी हे सुहावन आली, प्रीतम ख़बर सुना दे, मनुआँ नित भटके ॥ टेक ॥
जब से मैं बिछड़ी स्वामी प्यारे से ।
जगत माहिँ बँध रहि तन मन से ।
बिरहं घर की खटके ॥ १ ॥
जब लग गुरु का संग न पावे ।
घर की ओर उलट कस जावे ।
जगत मोह झटके ॥ २ ॥
दया होय सतगुरु आय मेलेँ ।
घर का भेद सुना सुत पेलेँ।
घट धुन सँग लटके ॥ ३ ॥

मिल गुरु से अब लगन बढ़ाऊँ ।
ध्यान धरत घट शब्द जगाऊँ ।
रही री नाम रट के ॥ ४ ॥
राधास्वामी धाम ओर सुत दौड़ी ।
सुन सुन शब्द हुई घट पोढ़ी ।
चली गुरु सँग गठ के ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३ ॥

अहो हे दयाला सतगुरु, मेरी सुरत
चढ़ा दो, जग में तपन घनेरी ॥ टेक ॥
सारी बैस जगत सँग बीती ।
फल नहिँ मिला रही कर रीती ।
दिन दिन फँसियाँ अँधेरी ॥ १ ॥
सतगुरु मिले भाग मेरा जागा ।
संसे भरम सब छिन में भागा ।
दृढ़ कर चरन गहे री ॥ २ ॥
शब्द भेद दे किया निहाला ।
बचन सुना काटा जम जाला ।
घट शब्द सुने री ॥ ३ ॥

सुन सुन धुन मेरा मन हुआ लीना ।
घट मैं दरशन सतगुरु चीना ।
आनँद आज लये री ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर से अधर चढ़ाया ।
अद्भुत सुख घट मैं दिखलाया ।
सब दुख दूर टलेरी ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४ ॥

अहो मेरे प्यारे सतगुरु, प्रेम दान मोहिँ दीजे, दुख सुख बहु भरमावत ॥ टेक ॥
दया करी मोहिँ संग लगाया ।
मारग का मोहिँ भेद जनाया ।
घट शब्द जगावत ॥ १ ॥
प्रेम बिना मन होय न सूरा ।
सँसे भरम नहिँ होवत दूरा ।
धुन रस नहिँ पावत ॥ २ ॥
याते सतगुरु दया बिचारो ।
प्रेम दान मोहिँ देव कर प्यारो ।
सूरत अधर चढ़ावत ॥ ३ ॥

शब्द शब्द धुन सुन रस पावत ।
अधर जाय निज भाग जगावत ।
गुरु गुन उमँगत गावत ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर से पहुँची सुन में ।
वहँ से चल लागी सत धुन में ।
सतपुर बीन सुनावत ॥ ५ ॥
अलख लोक जाय डाला डेरा ।
अगम लोक जाय किया बसेरा ।
राधास्वामी धाम दिखावत ॥ ६ ॥
राधास्वामी चरन जाय लिपटानी ।
प्रेम बढ़ा अब कहाँ समानी ।
आनँद बरना न जावत ॥ ७ ॥

॥ शब्द ५ ॥

अहो मेरे प्यारे सतगुरु, अचरज शब्द सुना दो, धुन में सुत अटके ॥ टेक ॥
काल करम मोहिं अति भरमाते ।
मन इंद्री बहु बिघन लगाते ।
भोगन में भटके ॥ १ ॥

दया करो मेरे सतगुरु प्यारे ।
मेहर से लो मोहिं आज सम्हारे ।
जगत भाव झटके ॥ २ ॥
दिन दिन प्रीत बढ़े तुम चरनन ।
काट देव बंधन तन मन धन ।
सुरत अधर सटके ॥ ३ ॥
सुन सुन धुन नभ ऊपर धावे ।
गगन जाय धुन गरज सुनावे ।
सुन में जाय मटके ॥ ४ ॥
धुन मुरली और बीन बजावे ।
अलख अगम धुन अधिक सुहावे ।
रही राधास्वामी रटके ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६ ॥

अहो मेरे प्यारे सतगुरु, अमृत धार
बहा दो, तन मन सुत भींजे ॥ टेक ॥
प्रेम बिना सब करनी फीकी ।
नेकहु मोहिं न लागे नीकी ।
घट धुन रस दीजे ॥ १ ॥

मैं हूँ नीच अधम नाकारा ।
तुम चरनन का लीन्ह सहारा ।
मोहिं अपना कीजे ॥ २ ॥
दीन अधीन पड़ा तुम द्वारे ।
तुम बिन को मेरी दया बिचारे ।
मोहिं सरना लीजे ॥ ३ ॥
तुम समरथ क्यों देर लगावो ।
दरशन दे मेरी सुरत चढ़ावो ।
आयु छिन छिन छीजे ॥ ४ ॥
प्रेम भंडार तुम्हारे भारी ।
मेहर से खोलो गगन किवाड़ी ।
मन और सुत रीझे ॥ ५ ॥
आवो रे जीव सरन में आवो ।
संतगुरु से अब प्रीत लगावो ।
अमृत रस पीजे ॥ ६ ॥
राधास्वामी मेरा काज सँवारा ।
खोला आदि शब्द भंडारा ।
सुत धुन संग सीझे ॥ ७ ॥

॥ शब्द ७ ॥

अरी हे सहेली प्यारी, जुड़ मिल गुरु
गुन गावो, उनकी मेहर अपारी ॥ टेक॥
भरम रही थी बहु बिधि जग में ।
अटक रही थी जहँ तहँ मग में ।
उन सीधी राह दिखा री ॥ १ ॥
प्यार किया मोहिँ संग लगाया ।
घट का भेद अजब समझाया ।
जुगती सहज बता री ॥ २ ॥
धर हिये ध्यान लखा गुरु रूपा ।
सुन सुन शब्द तजा भौ कूपा ।
हियरे हरख बढ़ा री ॥ ३ ॥
दया करी घट प्रीत बढ़ाई ।
सोता मनुआँ लीन जगाई ।
सूरत अधर चढ़ा री ॥ ४ ॥
को सके अस सतगुरु गुन गाई ।
को जाने उन अधिक बड़ाई ।
अबला जीव उबारी ॥ ५ ॥

जनम जनम का मारा पीटा ।
जोन जोन मैं काल घसीटा
मेहर से लीन्ह बचा री ॥ ६ ॥
मैं गुरु प्रीतम लेत मनाई ।
छिन छिन राधास्वामी चरन धियाई ।
उन कीन्हा मोर उपकारी ॥ ७ ॥

॥ शब्द ८ ॥

अरी हे सहेली प्यारी, गुरु सँग फाग
रचावो, मिला औसर भारी ॥ टेक ॥
ऋतु फागुन अब आन मिली है ।
गुरु प्यारे से प्रीत ठनी है ।
चूके मत अब प्यारी ॥ १ ॥
प्रेम रंग घट माँट भरावो ।
गुरु पै छिड़क छिड़क हुलसावो ।
निरखो सोभा न्यारी ॥ २ ॥
सुरत अबीर मलो चरनन मैं ।
प्रीत प्रतीत धरो निज मन मैं ।
तन मन धन देव वारी ॥ ३ ॥

सेवा कर गुरु लेव रिझाई ।
प्रेमी जन सँग आरत गाई ।
देखो अजब बहारी ॥ ४ ॥
अस औसर नहिँ बारम्बारा ।
गुरु चरनन करो प्रेम अधारा ।
जग भय लाज बिसारी ॥ ५ ॥
गुरु भक्ती की महिमा भारी ।
जाने जो जिन जुगत सम्हारी ।
प्रेम रँग भीँजे सारी ॥ ६ ॥
परम गुरू मेरे प्रीतम प्यारे ।
राधास्वामी यह सब खेल खिला रे ।
उन पर जाउँ बलिहारी ॥ ७ ॥

॥ शब्द ९ ॥

अरी हे सहेली प्यारी, हिल मल गुरु सँग चालो, मग मेँ काल का पहरा ॥टेक॥
माया जग मेँ जाल बिछाई ।
भोग दिखा लिया जीव फँसाई ।
दुख सुख पात घनेरा ॥ १ ॥

बिन गुरु नहिँ कोई बंदी छोड़ा।
वे काटैं बल काल कठोरा।
उन सँग बाँधो बेड़ा ॥ २ ॥
गुरु चरनन लाओ प्रीत घनेरी।
छूट जाय चौरासी फेरी।
कर दें आज निबेड़ा ॥ ३ ॥
बचन सार उन चित दे सुनना।
सुन सुन फिर नित मन में गुनना ॥
छूटे मेरा तेरा ॥ ४ ॥
गुरु उपदेश लेव भ्रम भंगा।
गुरु रक्षा लेव अपने संगा।
चलो घर आज सबेरा ॥ ५ ॥
शब्द डोर गह घट में चढ़ना।
गुरु स्वरूप को अगुआ रखना।
बिघन न आवे नेड़ा ॥ ६ ॥
चढ़ चल पहुँचो सहसकँवल में।
गुरु स्वरूप लख गगन मँडल में।
निरखो चंद्र उजेरा ॥ ७ ॥

मुरली धुन चढ़ गुफा सम्हारी ।
धुन बीना सुनी तिस परे न्यारी ।
किया सतपुर डेरा ॥ ८ ॥
अलख अगम की चढ़ गई घाटी ।
राधास्वामी दर की हो गई भाटी ।
किया निज धाम बसेरा ॥ ६ ॥

॥ शब्द १० ॥

अरी हे पड़ोसिन प्यारी, कोई जतन बतादो, कस मिलै प्रीतम प्यारा ॥टेक॥
बिरह अगिन नित भड़कत तन में ।
पिया की पीर नित खटकत मन में ।
सहत रहूँ दुख भारा ॥ १ ॥
कोई बैद मिलैं जब भारी ।
रोग बूझ दें दवा बिचारी ।
तब कुछ पाऊँ सहारा ॥ २ ॥
सतगुरु ऐसे बैद कहावें ।
प्रीतम से वे तुरत मिलावें ।
दे निज चरन अधारा ॥ ३ ॥

चलो पड़ोसिन गुरु ढिंग जावें।
बिनती कर निज काज बनावें।
छोड़ें जग अँधियारा ॥ ४ ॥
सतगुरु हैं वे दीनदयाला।
मेहर से छिन में करें निहाला।
अस होय जीव गुज़ारा ॥ ५ ॥
प्रेम प्रीत गुरु चरनन लावें।
आरत कर उन बहुत रिझावें।
तन मन चरनन वारा ॥ ६ ॥
भेद सुनावें अति से भारी।
प्रीतम आपहि गुरु तन धारी।
करते जीव उबारा ॥ ७ ॥
कर पहिचान लिपट रहें चरनन।
प्रीत प्रतीत बढ़ावें छिन छिन।
तज सब भरम पसारा ॥ ८ ॥
राधास्वामी धाम से सतगुरु आवें।
जीव दया वे हिये बसावें।
उन गति अगम अपारा ॥ ९ ॥

भाग उदय हुए आज हमारे।
मिल गये राधास्वामी प्रीतम प्यारे।
लखा निज रूप नियारा ॥ १० ॥
आओ पड़ोसन गाओ बधाई।
राधास्वामी महिमा अगम अथाई।
दम दम शुकर बिचारा ॥ ११ ॥

॥ शब्द ११ ॥

अरी हे सुहागन हेली, तू बड़ भागन भारी,
तोहि मिल गये निज भरतारा ॥ टेक ॥
तू करे आनँद प्रीतम साथा।
चरनन में तेरा मन रहे राता।
तोहि मिल गये गुरु दातारा ॥ १ ॥
मैं पड़ी आय यहाँ भूल भरम में।
अटक रही थोथे करम धरम में।
भेद न पाया सच करतारा ॥ २ ॥
अब करो मदद मेरी तुम मिल कर।
सतगुरु पै ले चलो दया कर।
वे करें मेहर अपारा ॥ ३ ॥

दुख सुख सहत रहूँ मैं भारी।
बिन प्रीतम मैं रहूँ दुखारी।
गुरु मोहिं देहिं सहारा ॥ ४ ॥
प्रीतम का मोहिं भेद बतावैं।
मिलने की मोहिं जुगत लखावैं।
मिले घट शब्द अधारा ॥ ५ ॥
गुरु स्वरूप हिये माहिं धियाऊँ।
मेहर पाय सुत अधर चढ़ाऊँ।
निरखूँ बिमल बहारा ॥ ६ ॥
अस करनी कर मिलूँ पिया से।
राधास्वामी चरन पकड़ हिया जिया से।
पहुँचूँ धुर दरबारा ॥ ७ ॥
सतगुरु दृष्टि मेहर की कीन्ही।
चरन सरन मोहिं निज कर दीन्ही।
छिन में काज सँवारा ॥ ८ ॥
सुरत चढ़ाय अधर पहुँचाई।
घट में राधास्वामी दरस दिखाई।
हुआ अब जीव उधारा ॥ ९ ॥

॥ शब्द १२ ॥

अरी हे सहेली प्यारी, गुरु बिन कौन उतारे, मोहिँ भौ सागर पारा ॥ टेक॥
गुरु ही मात पिता पति प्यारे।
गुरु ही सच समरथ करतारे।
गुरु मेरे प्रान अधारा ॥ १ ॥
जग मेँ फैल रहा तम भारी।
करमन मेँ भरमे जिव सारी।
गुरु बिन घोर अँधियारा ॥ २ ॥
बचन सुना गुरु समझ बढ़ावेँ।
घट मेँ शब्द भेद दरसावेँ।
निरखे अजब उजारा ॥ ३ ॥
याते गुरु सँग जोड़ो नाता।
मन रहे उन चरनन मेँ राता।
गुरु बिन नहिँ और सहारा ॥ ४ ॥
चरन सरन गुरु दृढ़ कर गहना।
आज्ञा उनकी सिर पर धरना।
ले शब्द का मारग सारा ॥ ५ ॥

घट मैं निस दिन करो कमाई ।
धुन सँग सूरत अधर चढ़ाई ।
काल से होय छुटकारा ॥ ६ ॥
राधास्वामी परम गुरू दातारे ।
या विधि जीव को लेहिँ उबारे ।
उन चरनन धरो प्रेम पियारा ॥ ७ ॥

॥ शब्द १३ ॥

अरी हे सहेली प्यारी, घट मैं शब्द जगाओ, शब्दहि करे निरवारा ॥टेक॥
सतगुरु खोज पड़ो उन चरना ।
सुन सुन बचन चित्त मैं धरना ।
वे तोहि लेहिँ सुधारा ॥ १ ॥
शब्द भेद गुरु देहिँ बताई ।
धुन मैं मन और सुरत लगाई ।
सुन अनहद झनकारा ॥ २ ॥
गुरु चरनन मैं प्रीत बढ़ाना ।
उमँग सहित नित शब्द कमाना ।
घट मैं होत उजारा ॥ ३ ॥

मन माया के बिघन हटाओ ।
गुरु बल सूरत अधर चढ़ाओ ।
निरखो अजब बहारा ॥ ४ ॥
राधास्वामी सूरत लीन्ह सिँगारी ।
तब भौसागर पार सिधारी ।
अस हुआ सहज उधारा ॥ ५ ॥

॥ शब्द १४ ॥

अरी हे सहेली प्यारी, चेत करो
सतसंगा, छूटे कलमल दागा ॥ टेक ॥
बिन सतसँग भरम नहिँ भागे ।
शब्द गुरू में प्रीत न जागे ।
छूटे नहिँ मति कागा ॥ १ ॥
याते गुरु उपदेश सम्हारो ।
प्रीत प्रतीत चरन में धारो ।
तब सतसँग रँग लागा ॥ २ ॥
ध्यान धरत मन होत अनंदा ।
शब्द सुनत कटते जम फंदा ।
भाग उदय होय जागा ॥ ३ ॥

जग ब्योहार अब नेक न भावे ।
गुरु चरनन मन छिन छिन धावे ।
दिन दिन बढ़त अनुरागा ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर से लिया अपनाई ।
निज चरनन में सुरत लगाई ।
काल देश अब त्यागा ॥ ५॥

॥ शब्द १५ ॥

अरी हे सहेली प्यारी, गुरु का ध्यान सम्हारो, मन मुखता सहज नसावे ॥टेक॥
सतसँग कर बढ़ा भाव गुरू में ।
प्रीत लगी अब चरन गुरू में ।
नित दरशन को धावे ॥ १ ॥
गुरु सूरत हिये माहिँ बसानी ।
छिन छिन गुरु के पास रहानी ।
नइ नइ उमँग उठावे ॥ २ ॥
सेवा को लोचे मन छिन छिन ।
प्रेम बढ़त गहिरा अब दिन दिन ।
गुरु बिन कछु ना सुहावे ॥ ३ ॥

ध्यान धरत मन चढ़े अकाशा ।
देखे घट में बिमल बिलासा ।
शब्दा रस पी त्रिपतावे ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर से सूरत जागे ।
धुन डोरी गह घर को भागे ।
चरनन माहिँ समावे ॥ ५ ॥

॥ शब्द १६ ॥

अरी हे सहेली प्यारी, गुरू की महिमा भारी, धर उन चरनन प्यारा ॥ टेक ॥
गुरू पूरे सतपुर के बासी ।
उन सँग पावे सहज बिलासी ।
सहज करैं भौ पारा ॥ १ ॥
गुरू पूरे हितकारी साँचे ।
उन सँग जले न जग की आँचे ।
सब बिधि लेहिँ सुधारा ॥ २ ॥
दीनदयाल है नाम गुरू का ।
दृढ़ कर पकड़ो चरन गुरू का ।
कर उन नाम अधारा ॥ ३ ॥

सतगुरु घर की बाट लखावैं ।
बल अपना दे सुरत चढ़ावैं ।
शब्द सुनावैं सारा ॥ ४ ॥
मारग मैं गुरु पद दरसावैं ।
सत्तपुरुष का रूप लखावैं ।
पहुँचे राधास्वामी धाम अपारा ॥ ५ ॥

॥ शब्द १७ ॥

अरी हे सहेली प्यारी, जग है विष का खाना, यासे रहो हुशियारा ॥ टेक ॥
माया ने रचे भोग बिलासा ।
घेरे जीव दिखाय तमाशा ।
जाल बिछाया भारा ॥ १ ॥
मन इच्छा सँग जीव मलीना ।
रोग सोग और दुख सुख सहना ।
करम भार सिर डारा ॥ २ ॥
कुल कुटुम्ब और भाई बिरादर ।
स्वारथ सँग सब करते आदर ।
बिन धन देंय न सहारा ॥ ३ ॥

याते चेत चलो मेरे भाई ।
गुरु बिन नहिँ कोइ और सहाई ।
उन चरनन मैं लाओ प्यारा ॥ ४ ॥
गुरु से शब्द का ले उपदेशा ।
कर अभ्यास तजो यह देशा ।
राधास्वामी नाम का कर आधारा ॥५॥

॥ शब्द १८ ॥

अरी हे सहेली प्यारी, प्रेम की दौलत भारी, छिन छिन भक्ति कमाओ ॥टेक॥
भक्ति बिना सब बिरथा करनी ।
थोथा ज्ञान ध्यान चित धरनी
यह नहिँ मुक्ति उपाओ ॥ १ ॥
प्रेम बिना कोई जाय न पारा ।
पहुँचे नहिँ सतगुरु दरबारा ।
क्यों बिरथा बैस गँवाओ ॥ २ ॥
ऐसा प्रेम गुरू से पावे ।
जो कोई उनकी कार कमावे ।
उन चरनन पर सीस नवाओ ॥ ३ ॥

दीन ग़रीबी धारो मन मैं।
प्रीत बसाओ तुम निज मन मैं।
घट मैं शब्द जगाओ ॥ ४ ॥
दया मेहर से सुरत चढ़ावैं।
धुर पद मैं वे ले पहुँचावैं।
राधास्वामी चरन समाओ ॥ ५ ॥

॥ शब्द १९ ॥

अरी हे सहेली प्यारी, दूत बिरोधी भारी, गुरु बल इनको मारो ॥ टेक ॥
काम क्रोध और मोह और लोभा।
मद और मान बड़ाई सोभा।
इन से सब कोई हारो ॥ १ ॥
गुरु की दया ले इन से लड़ना।
सुरत शब्द ले ऊपर चढ़ना।
या बिधि इनको टारो ॥ २ ॥
जब लग घट मैं घाट न बदले।
मन और सुरत रहैं यहाँ गदले।
फिर फिर भरमैं वारो ॥ ३ ॥

जिस पर मेहर गुरू की होई ।
पार जाय निरमल होय सोई ।
काल जाल से न्यारो ॥ ४ ॥
डरत रहो बैरियन से भाई ।
राधास्वामी चरन ओट गहो आई ।
सहज करें निरवारो ॥ ५ ॥

॥ शब्द २० ॥

अरी हे सहेली प्यारी, गुरु की सरन सम्हारो, काज करें वे पूरा ॥ टेक ॥
सरन धार चरनन में धाओ ।
ध्यान लाय सुत अधर चढ़ाओ ।
बाजे अनहद तूरा ॥ १ ॥
प्रीत प्रतीत धरो गुरु चरनन ।
करम भरम सब कीन्हे मरदन ।
गुरु बल मन हुआ सूरा ॥ २ ॥
सूर होय गगनापुर धावत ।
गुरु को पल पल माहिं रिझावत ।
निरखत अद्भुत नूरा ॥ ३ ॥

काल करम से नाता छूटा।
जगत पसार लगा सब झूठा।
खोजत चली पद पूरा ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर करी अब मुझ पर।
सहज पहुँचाय दिया मोहिं धुर घर।
हुई उन चरनन धूरा ॥ ५ ॥

॥ शब्द २१ ॥

अरी हे सहेली प्यारी, यह जग रैन
का सुपना, करो काज सबेरा ॥ टेक ॥
भोग बिलास जगत के काँचे।
खोज करो तुम सतगुरु साँचे।
उन सँग बाँधो बेड़ा ॥ १ ॥
ले उपदेश करो अभ्यासा।
राधास्वामी चरनन बाँधो आसा।
मत कर बहुत अबेरा ॥ २ ॥
गुरु स्वरूप का धर हिये ध्याना।
दिन दिन प्रीत प्रतीत बढ़ाना।
मिटे चौरासी फेरा ॥ ३ ॥

तन मन से सुत होकर न्यारी ।
गुरु की दया ले अधर सिधारी ।
गगन मँडल किया डेरा ॥ ४ ॥
सतगुरु ध्यान धरत फिर चाली ।
धुन बीना सुन हुई निहाली ।
किया राधास्वामी धाम बसेरा ॥ ५ ॥

॥ शब्द २२ ॥

अरी हे सहेली प्यारी, हँगता बैरन भारी, दीन ग़रीबी धारो ॥ टेक ॥
जब लग मन में मान समाना ।
घट अंतर में दख़ल न पाना ।
मद और मोह बिसारो ॥ १ ॥
बिना दीनता दया न पावे ।
बिना दया नहिँ शब्द समावे ।
जाय न भौ के पारो ॥ २ ॥
नीच निकाम जान अपने को ।
निपट अजान मान अपने को ।
तब पाय मेहर अपारो ॥ ३ ॥

अस घट प्रेम गुरू का जागे।
झीनी सुरत चरन में लागे।
सुन अनहद झनकारो ॥ ४ ॥
सुन सुन शब्द गगन को धावे।
वहँ से सतपुर जाय समावे।
राधास्वामी चरन निहारो ॥ ५ ॥

॥ शब्द २३ ॥

अरी हे सहेली प्यारी, मन से क्यों तू हारे, गुरु हैं तेरे सहाई ॥ टेक ॥
राधास्वामी को तुम समरथ मानो।
प्रीत प्रतीत चरन में आनो।
काल से लेहिँ बचाई ॥ १ ॥
दृढ़ कर उनकी सरन सम्हारो।
हान लाभ जग कुछ न बिचारो।
घट में प्रेम जगाई ॥ २ ॥
राधास्वामी तेरी दया बिचारें।
काल बिघन वे सबही टारें।
मन से खूँट छुड़ाई ॥ ३ ॥

मेहर से घट में दरस दिखावें।
शब्द शब्द धुन अजब सुनावें।
सूरत अधर चढ़ाई ॥ ४ ॥
गुरु पद परस अधर को धावे।
सत्तपुरुष का दरशन पावे।
राधास्वामी धाम लखाई ॥ ५ ॥

॥ शब्द २४ ॥

अरी हे सहेली प्यारी, क्यों न सुने
गुरु बैना, वे हैं बंदी छोड़ा ॥ टेक ॥
सतसँग कर उन सहित पिरीती।
बचन सुनो हिये धर परतीती।
छिन छिन बंधन तोड़ा ॥ १ ॥
भूल भरम तेरा सबहि मिटावें।
घट में धुन सँग सुरत लगावें।
सुन ले अनहद घोरा ॥ २ ॥
छिन छिन वे तेरी करें सफ़ाई।
अटक भटक सब देहिँ तुड़ाई।
मन इच्छा मुख मोड़ा ॥ ३ ॥

घट मैं अचरज दरस दिखावैं।
मन और सूरत अधर चढ़ावैं।
मारैं काल कठोरा ॥ ४ ॥
राधास्वामी अपनी मेहर करावैं।
तब घट मैं अस मौज दिखावैं।
स्रुत निज चरनन जोड़ा ॥ ५ ॥

॥ शब्द २५ ॥

अरी हे सहेली प्यारी, क्या सोवे जग माहीं, जाग चलो घर अपने ॥ टेक ॥
बिन गुरु दया कोई नहिँ जागे।
मेहर बिना नहिँ घट मैं लागे।
अटके जग सुपने ॥ १ ॥
गुरु पूरे का जो सँग पावे।
करम भरम तज घट मैं धावे।
घर की ओर भजने ॥ २ ॥
याते सतसँग सतगुरु धारो।
सुरत शब्द अभ्यास सम्हारो।
सँग मन माया तजने ॥ ३ ॥

गुरु सँग प्रीत बढ़ाओ दिन दिन ।
धुन में सुरत लगाओ छिन छिन ।
चरनन में पकने ॥ ४ ॥
दीन होय गहो राधास्वामी सरना ।
राधास्वामी नाम हिये में धरना ।
चरनन में रचने ॥ ५ ॥

वचन १३ प्रेम तरंग भाग पहिला

॥ शब्द १ ॥

मेरे हिये में बजत बधाई ।
संत सँग पाया रे ॥ १ ॥
ढूँढ़ फिरी जग में बहुतेरा ।
भेद कहीं नहिँ पाया रे ॥ २ ॥
संत मता अति ऊँचा गहिरा ।
बेद कतेब न जाना रे ॥ ३ ॥
बड़ भागी कोइ बिरले प्रेमी ।
तिनको मरम जनाया रे ॥ ४ ॥

राधास्वामी मेहर से जीव उबारैं।
उन महिमा अगम अपारा रे ॥ ५ ॥

॥ शब्द २ ॥

मेरे धूम भई अति भारी।
दरस राधास्वामी कीन्हा रे ॥ १ ॥
भाग जगे मेरे धुर के सजनी।
आज रूप रस लीन्हा रे ॥ २ ॥
कौन कहे महिमा अब उनकी।
जिन प्रेम दान गुरु दीन्हा रे ॥ ३ ॥
सुखी भया अब तन मन सारा।
हुइ गुरु चरन अधीना रे ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरन रही लिपटानी।
अमृत हर दम पीना रे ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३ ॥

राधास्वामी छबि निरखत मुसकानी।
तन मन सुध बिसरानी रे ॥ १ ॥
बिन दरशन कल नाहिँ पड़त है।
भावे न अन्न न पानी रे ॥ २ ॥

देखत रहूँ री रूप गुरु प्यारा ।
छिन छिन मन हरखानी रे ॥ ३ ॥
दया करी गुरु दीनदयाला ।
हुइ जग से अलगानी रे ॥ ४ ॥
लिपट रहूँ हर दम चरनन से ।
राधास्वामी जान पिरानी रे ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४ ॥

सुन सुन महिमा गुरु प्यारे की ।
हुई मैं दरस दिवानी रे ॥ १ ॥
धाय धाय चरनन मैं धाई ।
परगट रूप दिखानी रे ॥ २ ॥
मोहित हुई अचरज छबि निरखत ।
तन मन सुद्ध भुलानी रे ॥ ३ ॥
बार बार बल जाऊँ चरन पर ।
कस गुन गाऊँ बखानी रे ॥ ४ ॥
राधास्वामी जान जान के जानाँ ।
उन चरनन लिपटानी रे ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५ ॥

कस प्रीतम से जाय मिलूँ मैं।
कोई जतन बताओ रे ॥ १ ॥
तड़प रही मैं बिन पिया प्यारे।
कोई दरस दिखाओ रे ॥ २ ॥
रैन दिवस मोहिं चैन न आवे।
किस बिधि करूँ उपाओ रे ॥ ३ ॥
बिरह अगिन नित सुलगत भड़कत।
प्रेम धार बरसाओ रे ॥ ४ ॥
राधास्वामी दयाल दरस देव अबकी।
तन मन शांत धराओ रे ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६ ॥

भाग चलो जग से तुम अब के।
सतसँग में मन दीजो रे ॥ १
इंद्री भोग त्याग देव मन से।
चरन सरन गुरु लीजो रे ॥ २ ॥
ले उपदेश करो अभ्यासा।
सुरत शब्द रँग भीँजो रे ॥ ३ ॥

प्रीत प्रतीत सहित गुरु सेवा ।
तन मन धन से कीजो रे ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरन बसाय हिये में ।
नित्त सुधा रस पीजो रे ॥ ५ ॥

॥ शब्द ७ ॥

गुरु सतसंग करो तन मन से ।
बचन सुनत नित जागो रे ॥ १ ॥
मोह नींद में बहु दिन सोये ।
अब गुरु चरनन लागो रे ॥ २ ॥
ले उपदेश शब्द का गुरु से ।
घट अंतर में झाँको रे ॥ ३ ॥
उमँग अंग ले जोड़ दृष्टि को ।
गुरु स्वरूप को ताको रे ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया निरख निज हिय में ।
जग से छिन छिन भागो रे ॥ ५ ॥

बचन १३ प्रेम तरंग भाग दूसरा

॥ शब्द १ ॥

राधास्वामी दीनदयाला, मेरे सद
किरपाला, मोहिँ कीन्ह निहाला रे ।
राधास्वामी ३, प्यारे राधास्वामी रे ॥१॥
राधास्वामी परम उदारा, मेरे अति
दातारा, मोहिँ लीन्ह उबारा रे ।
राधास्वामी ३, प्यारे राधास्वामी रे ॥२॥
राधास्वामी प्रान पियारे, मेरी आँखों
के तारे, मेरे जग उजियारे रे ।
राधास्वामी ३, प्यारे राधास्वामी रे ॥३॥
राधास्वामी लीन्ह सुधारा, मेरे मन को
सँवारा, मेरा किया उपकारा रे ।
राधास्वामी ३, प्यारे राधास्वामी रे ॥४॥
राधास्वामी शब्द जनाई, मेरी सुरत
चढ़ाई, मोहिँ चरन लगाई रे ।
राधास्वामी ३, प्यारे राधास्वामी रे ॥५॥

॥ शब्द २ ॥

राधास्वामी संग लगाई, मोहिँ बचन सुनाई, हिये प्रीत बढ़ाई रे।
राधास्वामी ३, प्यारे राधास्वामी रे ॥१॥

राधास्वामी सेवा धारी, उन नैन निहारी, हिये भई उजियारी रे।
राधास्वामी ३, प्यारे राधास्वामी रे ॥२॥

राधास्वामी भेद बताया, घट शब्द सुनाया, सोता मनुआँ जगाया रे।
राधास्वामी ३, प्यारे राधास्वामी रे ॥३॥

मन उँमगत चाला, घट देख उजाला, लखा रूप दयाला रे।
राधास्वामी ३, प्यारे राधास्वामी रे ॥४॥

त्रिकुटी घन गाजा, सुन सारँग बाजा, मुरली धुन साजा रे।
राधास्वामी ३, प्यारे राधास्वामी रे

सतपुर माहिँ धावत, धुन बीन सुनावत,
करी सतगुरु आरत रे।
राधास्वामी ३, प्यारे राधास्वामी रे ॥६॥
लख अलख स्वरूपा, मिल अगम कुल-
भूपा, गई धुर धाम अनूपा रे।
राधास्वामी ३, प्यारे राधास्वामी रे ॥७॥
राधास्वामी रूप निहारा, हुआ आनँद
भारा, सब काज सँवारा रे।
राधास्वामी ३, प्यारे राधास्वामी रे ॥८॥

॥ शब्द ३ ॥

परम पुरुष प्यारे राधास्वामी,
धर संत स्वरूपा, जग आये री।
राधास्वामी ३, प्यारे राधास्वामी रे ॥१॥
करी मेहर घनेरी, जिव भाग जगेरी,
दल काल दलेरी, मुख माया मोड़ी रे।
राधास्वामी ३, प्यारे राधास्वामी रे ॥२॥

दिया घर का सँदेसा, किया शब्द उपदेसा,
मेटा सबही अँदेसा, तज काल कलेसा रे।
राधास्वामी ३, प्यारे राधास्वामी रे ॥३॥
मगन हुई सुन सतगुरु बचना, नित चरन
सरन में पकना, भोग जग सबही तजना रे।
राधास्वामी ३, प्यारे राधास्वामी रे ॥४॥
सुर्त शब्द लगाऊँ, गुरु रूप धियाऊँ,
मन चरनन लाऊँ,
नित राधास्वामी गाऊँ रे।
राधास्वामी ३, प्यारे राधास्वामी रे ॥५॥

॥ शब्द १९ ॥

चहुँदिस धूम मची, सतगुरु अब आये,
जग जीव जगाये, उन लिया अपनाई रे।
राधास्वामी ३, प्यारे राधास्वामी रे ॥१॥
राधास्वामी परम हितकारी, अस
लीला धारी, जो जिव दीन दुखारी,
उन लेहैं उबारी रे।
राधास्वामी ३, प्यारे राधास्वामी रे ॥२॥

जम काल लजाई, माया रही मुरझाई,
कुछ पेश न जाई, सब करम नसाई रे।
राधास्वामी ३, प्यारे राधास्वामी रे ॥३॥
हुआ जीव उबारा, मिटा भर्म पसारा,
घर काल उजाड़ा, हुआ सत उजियारा रे।
राधास्वामी ३, प्यारे राधास्वामी रे ॥४॥
राधास्वामी महिमा भारी,
कस गाऊँ पुकारी, मैं बाल अनाड़ी,
उन सरन अधारी रे।
राधास्वामी ३, प्यारे राधास्वामी रे ॥५॥

॥ शब्द ५ ॥

प्यारे लागें री मेरे दातार।
सतगुरु प्यारे लागें ॥ १ ॥
प्यारे लागें री कुल करतार।
सतगुरु प्यारे लागें ॥ २ ॥
प्यारे लागें री प्रेम भँडार।
सतगुरु प्यारे लागें ॥ ३ ॥

प्यारे लागें री अकह अपार ।
सतगुरु प्यारे लागें ॥ ४ ॥
प्यारे लागें री प्रान अधार ।
सतगुरु प्यारे लागें ॥ ५ ॥
प्यारे लागें री मेरे दिलदार ।
सतगुरु प्यारे लागें ॥ ६ ॥
प्यारे लागें री परम उदार ।
सतगुरु प्यारे लागें ॥ ७ ॥
प्यारे लागें री अपर अपार ।
सतगुरु प्यारे लागें ॥ ८ ॥
प्यारे लागें री अधर अधार ।
सतगुरु प्यारे लागें ॥ ९ ॥
प्यारे लागें री अमी भंडार ।
सतगुरु प्यारे लागें ॥ १० ॥
प्यारे लागें री संत अवतार ।
सतगुरु प्यारे लागें ॥ ११ ॥
प्यारे लागें री मेरे रछपाल ।
सतगुरु प्यारे लागें ॥ १२ ॥

प्यारे लागैं री मेरे किरपाल ।
सतगुरु प्यारे लागैं ॥ १३ ॥
प्यारे लागैं री दीनदयाल ।
सतगुरु प्यारे लागैं ॥ १४ ॥
प्यारे लागैं री अमल अरूप ।
सतगुरु प्यारे लागैं ॥ १५ ॥
प्यारे लागैं री शब्द स्वरूप ।
सतगुरु प्यारे लागैं ॥ १६ ॥
प्यारे लागैं री मोहन रूप ।
सतगुरु प्यारे लागैं ॥ १७ ॥
प्यारे लागैं री सुन्दर रूप ।
सतगुरु प्यारे लागैं ॥ १८ ॥
प्यारे लागैं री आनँद रूप ।
सतगुरु प्यारे लागैं ॥ १९ ॥
प्यारे लागैं री हैरत रूप ।
सतगुरु प्यारे लागैं ॥ २० ॥
प्यारे लागैं री सत्त सरूप ।
सतगुरु प्यारे लागैं ॥ २१ ॥

प्यारे लागैं री अगम अनाम ।
सतगुरु प्यारे लागैं ॥ २२ ॥
प्यारे लागैं री अचरज धाम ।
सतगुरु प्यारे लागैं ॥ २३ ॥
प्यारे लागैं री अचरज नाम ।
सतगुरु प्यारे लागैं ॥ २४ ॥
प्यारे लागैं री भौ तारन ।
सतगुरु प्यारे लागैं ॥ २५ ॥
प्यारे लागैं री जीव उबारन ।
सतगुरु प्यारे लागैं ॥ २६ ॥
प्यारे लागैं री मन मोहन ।
सतगुरु प्यारे लागैं ॥ २७ ॥
प्यारे लागैं री काल बिडारन ।
सतगुरु प्यारे लागैं ॥ २८ ॥
प्यारे लागैं री माया टारन ।
सतगुरु प्यारे लागैं ॥ २९ ॥
प्यारे लागैं री जान पिरान ।
सतगुरु प्यारे लागैं ॥ ३० ॥

प्यारे लागें री प्रेम निधान।
सतगुरु प्यारे लागें ॥ ३१ ॥
प्यारे लागें री जग तारन।
सतगुरु प्यारे लागें ॥ ३२ ॥
प्यारे लागें री हे रंगीले।
सतगुरु प्यारे लागें ॥ ३३ ॥
प्यारे लागें री हे छबीले।
सतगुरु प्यारे लागें ॥ ३४ ॥
प्यारे लागें री हे रसीले।
सतगुरु प्यारे लागें ॥ ३५ ॥
प्यारे लागें री अचल अडोल।
सतगुरु प्यारे लागें ॥ ३६ ॥
प्यारे लागें री अगम अतोल।
सतगुरु प्यारे लागें ॥ ३७ ॥
प्यारे लागें री अमल अमोल।
सतगुरु प्यारे लागें ॥ ३८ ॥
प्यारे लागें री जीव हितकारी
सतगुरु प्यारे लागें ॥ ३९ ॥

प्यारे लागें री पूरन धनी ।
सतगुरु प्यारे लागें ॥ ४० ॥
प्यारे लागें री अंतर जामी ।
सतगुरु प्यारे लागें ॥ ४१ ॥
प्यारे लागें री अगम अगाध ।
सतगुरु प्यारे लागें ॥ ४२ ॥
प्यारे लागें री अलख अथाह ।
सतगुरु प्यारे लागें ॥ ४३ ॥
प्यारे लागें री सर्व समरथ ।
सतगुरु प्यारे लागें ॥ ४४ ॥
प्यारे लागें री अबल की ओट ।
सतगुरु प्यारे लागें ॥ ४५ ॥
प्यारे लागें री प्यारे परबीन ।
सतगुरु प्यारे लागें ॥ ४६ ॥
प्यारे लागें री मेरे प्रीतम ।
सतगुरु प्यारे लागें ॥ ४७ ॥
प्यारे लागें री गहिर गँभीर ।
सतगुरु प्यारे लागें ॥ ४८ ॥

प्यारे लागेँ री बंदी छोड़ ।
सतगुरु प्यारे लागेँ ॥ ४९ ॥
प्यारे लागेँ री मात पिता ।
सतगुरु प्यारे लागेँ ॥ ५० ॥

बचन १३ प्रेम तरंग भाग तीसरा

॥ कजली ॥

॥ शब्द १ ॥

कैसे गाऊँ गुरु महिमा,
अति अगम अपार ॥ टेक ॥
गुरु प्यारे मेरे राधास्वामी दाता ।
उन के चरन पर जाउँ बलिहार ॥ १॥
राधास्वामी मेहर से अंग लगाया ।
काल जाल से लिया है निकार ॥ २॥
शब्द भेद दे सुरत चढ़ाई ।
घंटा संख सुनी धुन सार ॥ ३ ॥
लाल सूर लख चंद्र निहारा ।
मुरली सुन धुन बीन सम्हार ॥ ४ ॥

राधास्वामी चरन परस मगनानी ।
पहुँच गई अब धुर दरबार ॥ ५ ॥

॥ शब्द २

कैसे मिलूँ री पिया से,
चढ़ गगन गली ॥ टेक ॥
रैन अँधेरी और बाट अनेड़ी । कोइ
संग न साथी कहाँ जाऊँ री अली ॥१॥
खोज करो गुरु दीन दयाला ।
जोगी ज्ञानी रहे तली ॥ २ ॥
शब्द भेद ले सुरत चढ़ाओ ।
निरखो नभ चढ़ जोत बली ॥ ३ ॥
त्रिकुटी जाय सुनो अनहद धुन ।
सुन में हंसन संग रली ॥ ४ ॥
सत्तपुरुष का रूप निरख कर ।
राधास्वामी चरनन जाय मिली ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३ ॥

कैसे चलूँ री अधर चढ़
सुन नगरी ॥ टेक ॥

मन मेरा चंचल चित्त मलीना ।
गैल कठिन कस धरूँ पगरी ॥ १ ॥
गुरु दयाल बिन कौन सहाई ।
उनके चरन मैं रहूँ लगरी ॥ २ ॥
वे दयाल जब दया बिचारें ।
तब सुत चढ़े अधर डगरी ॥ ३ ॥
काल करम को दूर हटावें ।
और निकारें माया मगरी ॥ ४ ॥
सहसकँवल चढ़ त्रिकुटी धाई ।
सुन मैं हंसन सँग पगरी ॥ ५ ॥
मुरली धुन सुन आगे चाली ।
महाकाल भी रहा थक री ॥ ६ ॥
पुरुष दया ले अधर सिधारी ।
राधास्वामी चरन माहिँ जकड़ी ॥ ७ ॥

॥ शब्द ४ ॥

कैसे गहूँ री सरन गुरु
बिन परतीत ॥ टेक ॥

मन इंद्री भोगन में अटके ।
नेक न छोड़ँ जग की प्रीत ॥ १ ॥
बचन सुनत और फिर बिसरावत ।
चित्त न धारें भक्ती रीत ॥ २ ॥
काल करम मोहिं नित भरमावें ।
बिन गुरु दया इन्हें कस जीत ॥ ३ ॥
मेहर करें सतगुरु जब अपनी ।
दूर हटावें सभी अनीत ॥ ४ ॥
हे राधास्वामी अब दया बिचारो ।
मेरे हिये में बसाओ चरन पुनीत ॥५॥

॥ शब्द ५ ॥

काहे री चरन गुरु
भूली री सुरतिया ॥ टेक ॥
बिन गुरु चरन आसरा नाहीं ।
क्यों नहिं उन उर धारो री सुरतिया ॥१॥
चेत सुनो अब सतसँग बचना ।
प्रीत लाय उन मानो री सुरतिया ॥२॥

सेवा कर आरत कर गुरु की ।
सत्तपुरुष सम जानो री सुरतिया ॥ ३ ॥
दरशन कर उनका हित चित से ।
दृष्टि जोड़ सुत तानो री सुरतिया ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरन सरन बल हिये धर ।
काल करम को जारो री सुरतिया ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६ ॥

करो री सुरत गुरु चरन अधारा ॥ टेक ॥
गुरु सम कोइ हितकारी नाहीं ।
उनकी दया का लेओ री सहारा ॥ १ ॥
बचन सुनाय सुधारें तुझ को ।
भेद बतावें धुर दरबारा ॥ २ ॥
घर चालन की जुगत बतावें ।
सुरत शब्द का मारग सारा ॥ ३ ॥
भक्ती रीत सिखावें तुझ को ।
जगत जाल से करें नियारा ॥ ४ ॥
परम पुरुष राधास्वामी चरनन में ।
मेहर से दें तोहि प्रेम करारा ॥ ५ ॥

॥ शब्द ७ ॥

खोजो री शब्द घर सुरत पियारी ॥टेक॥
मिल गुरु से लो भेद शब्द का ।
धुन अनहद नित घट में जारी ॥ १ ॥
सुन सुन धुन मन उगलत जग को ।
इंद्रियन से सुत होवत न्यारी ॥२॥
घट में अजब बिलास दिखाना ।
मगन हुई पाय आनँद भारी॥३॥
गुरु की दया ले चढ़त अधर में।
सुन्न परे धुन सोहँग धारी॥४॥
सत्त अलख और अगम निरख कर।
राधास्वामी चरनन सूरत वारी ॥५॥

॥ शब्द ८ ॥

लागोरे चरन गुरु जीव अनाड़ी॥टेक॥
करम धरम में कब लग पचना ।
तीरथ मूरत कब लग जारी ॥१ ॥
या में फल पावो नहिँ नेका।
घर जाने की गैल भुलारी ॥ २ ॥

जनम मरन से छुटना चाहो ।
तो सतगुरु की सरन सम्हारी ॥ ३ ॥
मेहर करैं गुरु बचन सुनावैं ।
मन और सूरत लेहिँ सुधारी ॥ ४ ॥
निज घर का दें भेद सुनाई ।
सुरत शब्द की जुगत बता री ॥ ५ ॥
बिरह जगाय चलो अब घट में
सुन सुन धुन हिये बढ़त पियारी ॥६॥
राधास्वामी सरन धार हिये अंतर ।
सहज चलो सतगुरु दरबारी ॥७॥

बचन १३ प्रेम तरंग भाग चौथा

॥ शब्द १ ॥

मैं गुरु प्यारे के चरनौं की दासी ॥टेक॥
नित उठ दरशन करूँ उमँग से ।
हार चढ़ाऊँ अपने गुरु सुख रासी ॥१॥
मत्था टेक लेउँ परशादी ।
करम भरम सब होते नासी ॥ २ ॥

प्रीत बढ़त गुरु चरनन निस दिन ।
जग से रहती सहज उदासी ॥ ३ ॥
शब्द कमाई करूँ प्रेम से ।
मगन होय रहुँ नित गुरु पासी ॥४॥
राधास्वामी मेहर से काज बनावो ।
दीजे मोहिँ निज चरन बिलासी ॥ ५ ॥

॥ शब्द २ ॥

मैं पड़ी अपने गुरु प्यारे की सरना ॥टेक॥
मेहर करी गुरु भेद बताया ।
सुरत शब्द में निस दिन भरना ॥ १ ॥
गुरु के चरन पकड़ हित चित से ।
भौसागर से सहजहि तरना ॥ २ ॥
गुरु का बल सँग लेकर अपने ।
मन माया से छिन छिन लड़ना ॥ ३ ॥
जगत जाल जंजाल जार कर ।
गगन ओर धुन सुन सुन चढ़ना ॥ ४ ॥
राधास्वामी बल अब धार हिये में ।
काल करम से काहे को डरना ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३ ॥

मैं हुई सखी अपने प्यारे की प्यारी ॥टेक॥
सेवा में नित हाज़िर रहती ।
हरख हरख नित रूप निहारी ॥ १ ॥
दरशन शोभा क्योंकर बरनूँ ।
छबि पर जाउँ छिन२ बलिहारी ॥ २ ॥
मेहर भरी दृष्टी जब डारी ।
भूल गई तन मन सुध सारी ॥३॥
कस गुन गाउँ अपने गुरु प्यारे के ।
तन मन धन उन चरनों पै वारी ॥४॥
राधास्वामी प्यारे से यही बर माँगूँ ।
चरनन में रहूँ लीन सदा री ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४ ॥

जब से मैं देखा राधास्वामी का मुखड़ा ॥टेक॥
मोहित हुई तन मन सुध भूली ।
छोड़ दिया सब जग का झगड़ा ॥ १ ॥
राधास्वामी छबि छा गई नैनन में ।
नहीं सुहावे मोहिं अब कोइ रगड़ा ॥२॥

निత बिलास करूँ दरशन का ।
भर भर प्रेम हुआ मन तकड़ा ॥ ३ ॥
मेहर हुई सुत चढ़त अधर में ।
छोड़ चली अब काया छकड़ा ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर करी अब भारी ।
छिन छिन मन चरनन में जकड़ा ॥५॥

॥ शब्द ५ ॥

राधास्वामी छबि मेरे हिये बस गई री ॥टेक॥
राधास्वामी शोभा क्योंकर गाऊँ ।
नैन कँवल दृष्टी जोड़ दई री ॥ १ ॥
दरस रूप रस बरनूँ कैसे ।
नर देह मेरी आज सुफल भई री ॥२॥
नित नित ध्याय रहूँ गुरु रूपा ।
घट में आनँद बिमल लई री ॥ ३ ॥
बिन प्रीतम बहु जन्म बिताये ।
और बिपता बहु भाँत सही री ॥ ४ ॥
अब मोहिं राधास्वामी मिले भाग से ।
चरन लगाय निज सरन दई री ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६ ॥

मन हुआ मेरा गुरु चरनन में लीना ॥टेक॥
जग से हट सतसँग में लागी ।
भक्ती दान गुरू मोहिं दीन्हा ॥ १ ॥
शब्द संग में सुरत लगाऊँ ।
मगन होय नित धुन रस पीना ॥ २ ॥
सेवा कर नई उमँग जगाऊँ ।
में हुइ अपने गुरु चरनन की रीना ॥३॥
बिन दरशन मोहिं कल न पड़त है ।
तड़फ रहूँ जैसे जल बिन मीना ॥४॥
राधास्वामी प्यारे मेरे प्रान अधारे ।
मेहर से उन मेरा कारज कीन्हा ॥ ५ ॥

॥ शब्द ७ ॥

आज मैं पाई सरन गुरु पूरे ॥ टेक॥
गुरु चरनन मिल हुई बड़भागी ।
बाजे घट में अनहद तूरे ॥ १ ॥
जगत भाव भय लज्या त्यागी ।
मन कायर हुआ घट में सूरे ॥ २ ॥

सुन सुन धुन अब चढ़त अधर में ।
जोत जगमगी झलकत नूरे ॥ ३ ॥
त्रिकुटी जाय ॐ धुन पाई ।
काल और करम रहे दोउ झूरे ॥ ४ ॥
अक्षर धुन सुन आगे चाली ।
तज दिया देश अब माया कूड़े ॥ ५ ॥
मुरली सुन धुन बीन सम्हारी ।
मगन हुई लख सत पद सूरे ॥ ६ ॥
प्रेम भँडार लखा अब भारी ।
मिल गये राधास्वामी चरन हज़ूरे ॥ ७ ॥
राधास्वामी महिमा अति से भारी ।
सुरत हुई उन चरनन धूरे ॥ ८ ॥

॥ शब्द ८ ॥

आज मैं पाया दरस गुरू प्यारे ॥टेक॥
दरशन कर हिये होत हुलासा ।
बचन सुनत भ्रम मिट गये सारे ॥ १ ॥
अचरज महिमा सतसँग देखी ।
गुरू उपदेश लिया उर धारे ॥ २ ॥

ध्यान धरत सुत घेरी घट में।
गगन ओर चढ़ती धुन लारे ॥ ३ ॥
मेहर हुई सुत अधर चढ़ाई।
तीन लोक के हो गइ पारे ॥ ४ ॥
राधास्वामी दयाल की महिमा भारी॥
कोटन जीव लिये उन तारे ॥ ५ ॥

वचन १३ प्रेम तरंग भाग पाँचवाँ

॥ शब्द १ ॥

धुर धाम नियार।
लखे कोइ गुरु मुख जाय ॥ १ ॥
गुरु प्रीत सम्हार।
करे नित सेवा धाय ॥ २ ॥
गुरु रूप निहार।
ध्यान धर हिये रस पाय ॥ ३ ॥
गुरु चरन अधार।
सुरत जाय शब्द समाय ॥ ४ ॥
नई उमँग जगाय।
चरन राधास्वामी परसे आय ॥ ५ ॥

॥ शब्द २ ॥

कैसे उतरूँ पार ।
भौ सागर का चौड़ा फाट ॥ १ ॥
कस होवे जीव उबार ।
गुरु बिन कौन लखावे बाट ॥ २ ॥
सतसँग कर आज सम्हार ।
तब मिलें भेद गुरु घाट ॥ ३ ॥
गुरु चरनन धारो पियार ।
तब घट का खुले कपाट ॥ ४ ॥
शब्दा रस लेव सम्हार ।
राधास्वामी भरें सुरत का माट ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३ ॥

गुरु चरनन प्यार ।
लाओ मन मेरे उमँग से ॥ १ ॥
गुरु आरत धार ।
सन्मुख होय प्रेम अँग से ॥ २ ॥
सुन घट धुन सार ।
निकसो जाल उचँग से ॥ ३ ॥

घट देख बहार।
रँग जाय सुत गुरु रँग से ॥ ४॥
राधास्वामी सरन सम्हार।
जीते काल निहँग से ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४ ॥

गुरु ले पहिचान।
काज करैं तेरा छिन में ॥ १ ॥
वोही हैं पुरुष सुजान।
प्रगट हुए अब के तन में ॥ २ ॥
तू सेव चरन धर प्यार।
मत सोच करो कुछ मन में ॥ ३ ॥
धुन भेद सुनावैं तोहि।
और सुरत चढ़ावैं गगन में ॥ ४॥
राधास्वामी धरिया नाम।
सुमिरो धर ध्यान अपन में ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५ ॥

बिमल चित जोड़ रही।
घट शब्द गुरू धर प्यार ॥ टेक ॥

सुन सुन धुन अब होत मगन मन।
छोड़त किरत असार ॥१॥
गुरु सतसंगी प्यारे लागें।
नेक न भावे जग ब्योहार ॥ २ ॥
बचन सुनत मन कँवल खिलाना।
दरशन कर घट होत उजार ॥ ३ ॥
सुरत चढ़ाय गई नभपुर में।
वहँ से पहुँची गगन मँझार ॥ ४ ॥
राधास्वामी किरपा धारी।
मोसी अधम को लिया उबार ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६ ॥

जगत बिच भूल पड़ी।
जिव कैसे के उतरे पार ॥ १ ॥
मन माया का ज़ोर घनेरा।
जीव निबल कस करे सम्हार ॥ २ ॥
अनेक भोग खैंचें वाहि चहुँ दिस।
भरम रहा इंद्रियन की लार ॥ ३ ॥

कुटँब जगत का बंधन भारी ।
कस निकसे जिव हुआ लाचार ॥ ४ ॥
बिना दया सतगुरु पूरे के ।
कभी न जग से होय उबार ॥ ५ ॥
वे दयाल जब जुगत बतावें ।
आप होयँ इसके रखवार ॥ ६ ॥
मन इंद्री तब सीधे चालें ।
जुगत कमावें हिये धर प्यार ॥ ७ ॥
तब निरमल होय चढ़े अधर में ।
राधास्वामी चरन निहार ॥ ८ ॥

॥ शब्द ७ ॥

बिकल जिया तरस रहा ।
मोहिं दरस दिखा दो जी ॥ टेक ॥
त्रय तापन सँग तप रही सारी ।
चरन अमी पिला दो जी ॥ १ ॥
इंद्रियन सँग नित भरमत डोले ।
सोता मनुआँ जगा दो जी ॥ २ ॥

जुगन जुगन से बिछड़ी चरन से।
अभी पिया से मिला दो जी ॥ ३ ॥
शब्द जुगत तुम दीन्ह बताई।
घट कपट हटा दो जी ॥ ४ ॥
राधास्वामी प्यारे गुरू हमारे।
मोहिं पार लगा दो जी ॥ ५ ॥

॥ शब्द ८ ॥

मैं तो आय पड़ी परदेस।
गैल कोइ घर की बता दीजो रे ॥१॥
मन इन्द्री सँग बहु दुख पाये।
भेद सुख घर का जना दीजो रे ॥ २ ॥
हे गुरु समरथ बन्दी छोड़ा।
मोहिँ चरनौँ में आज लगा लीजोरे ॥३॥
डरत रहूँ नरकन के दुख से।
मोहिँ जम से आप बचा लीजो रे ॥४॥
शब्द रूप तुम्हरा अगम अपारा।
सोई मोहिँ लखा दीजो रे ॥ ५ ॥

जुगत तुम्हार कमाऊँ उमँग से ।
शब्द में सुरत समा दीजो रे ॥ ६ ॥
राधास्वामी सतगुरु प्यारे ।
काज मेरा पूरा बना दीजो रे ॥ ७ ॥

॥ शब्द ९ ॥

गुरु दरशन बिन चैन न आवे ।
मैं कौन उपाय करूँ ॥ १ ॥
काल करम बहु बिघन लगाये ।
कैसे उनको दूर करूँ ॥ २ ॥
मोर जतन कोइ पेश न जावे ।
अब चरनन में बिनय करूँ ॥ ३ ॥
हे सतगुरु मोहिं दरस दिखाओ ।
निस दिन तुम्हरे बचन सुनूँ ॥ ४ ॥
बिन सतसँग कुछ काज न सरिहै ।
सतसँग में चित जोड़ धरूँ ॥ ५ ॥
शब्द अभ्यास सम्हार मेहर से ।
सुरत गगन में नित्त भरूँ ॥ ६ ॥

राधास्वामी प्यारे दया बिचारो ।
मैं अब तुम्हरी सरन पड़ूँ ॥ ७ ॥

॥ शब्द १० ॥

उमँग मन फूल रहा ।
गुरु दरशन पाया री ॥ १ ॥
तड़प तड़प मोहिँ बहु दिन बीते ।
आज मेरा भाग जगाया री ॥ २ ॥
दृष्टि तनी रहती गुरु छबि पर ।
मनुआँ चरन समाया री ॥ ३ ॥
प्रीत बढ़त छिन छिन अब हिये में ।
जग ब्योहार भुलाया री ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर करी अब भारी ।
मोहिँ नीच को लिया अपनाया री ॥५॥

॥ शब्द ११ ॥

मगन मन केल करत ।
घट धुन सँग लागा री ॥ १ ॥
गुरु चरनन में प्रीत बढ़ावत ।
करम भरम सब भागा री ॥ २ ॥

जन्म जन्म माया सँग भूला।
मेहर से अब के जागा री ॥ ३ ॥
अस औसर मिले सतगुरु आई।
उन दीन्ह जगाय मेरा भागा री ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया काज हुआ पूरा।
उन सँग खेलूँ फागा री ॥ ५ ॥

॥ शब्द १२ ॥

दरस पाय मन बिगस रहा।
गुरु लागे प्यारे री ॥ १ ॥
बार बार छबि पर बल जाऊँ।
चरन सीस पर धारे री ॥ २ ॥
कौन बस्तु गुरु आगे राखूँ।
तन मन धन सब वारे री ॥ ३ ॥
क्या मुख ले मैं महिमा गाऊँ।
उन गत मत अगम अपारे री ॥ ४ ॥
जीव पड़े चौरासी भोगें।
गुरु बिन कौन उबारे री ॥ ५ ॥
मेरा भाग जगा किरपा से।

मोहिं जग से कीन्ह नियारे री ॥ ६ ॥
राधास्वामी मेहर से जुगत बताई ।
धुन सुन गई दसवें द्वारे री ॥ ७ ॥

वचन १३ प्रेम तरंग भाग छठवाँ

॥ शब्द १ ॥

चरन गुरु ध्यावो री ।
तज जग भय त्रास ॥ टेक ॥
मन अज्ञानी भरम भुलाना ।
फिर फिर चाहत जग में बास ॥ १ ॥
बिन सतसंग समझ नहिं आवे ।
या ते कर गुरु संग निवास ॥ २ ॥
नाम जपत नित शुधता बाढ़े ।
राधास्वामी नाम सुमिर हर स्वाँस ॥३॥
सतगुरु चरन ध्यान धर घट में ।
निरखे अचरज प्रेम बिलास ॥ ४ ॥
दिन दिन मन में बढ़त अनंदा ।
उमँग उमँग करता अभ्यास ॥ ५ ॥

गुरु की दया परखता छिन छिन।
खेलत रहे नित चरनन पास ॥ ६ ॥
राधास्वामी चरन ओट अब धारी।
पाप पुन्न दोउ हो गये नास ॥ ७ ॥

॥ शब्द २ ॥

सरन गुरु धार री धर दृढ़ परतीत ॥टेक॥
उमँग अंग ले करो साध सँग।
बचन सुनो तुम देकर चीत ॥ १ ॥
जग ब्योहार जान सब मिथ्या।
जग जिव सब स्वारथ के मीत ॥ २ ॥
इन से हट मन चरनन जोड़ो ॥
हित से धारो भक्ती रीत ॥ ३ ॥
तन मन इंद्री सब दुखदाई।
बुध और विद्या सबहि अनीत ॥ ४ ॥
बिन सतगुरु कोइ भेद न पावे।
मिल अब उनसे कारज कीत ॥ ५ ॥
प्रीत प्रतीत धार गुरु चरनन।
गुरु बल काल करम को जीत ॥ ६ ॥

मौज निहार करो सब काजा।
मन में धारो गुरु की नीत ॥ ७ ॥
प्रेम अंग ले ध्यान सम्हारो।
चरन अनंद लेव धर प्रीत ॥ ८ ॥
अस अभ्यास करो तुम निस दिन।
गुरु रँग भीँज रहो तज भीत ॥ ९ ॥
आस भरोस धार गुरु चरनन।
त्याग देव जग की बिपरीत ॥ १० ॥
गुरु भक्तन की चाल अनोखी।
धारो रल मिल गुरु संगीत ॥ ११ ॥
घट में परखो अपन उधारा।
गाओ निस दिन राधास्वामी गीत ॥१२॥

॥ शब्द ३ ॥

हठीला मनुआँ माने न बात ॥ टेक ॥
अपनी ओछी समझ न त्यागे।
सतसँग बचन न चित्त समात ॥ १ ॥
बारम्बार जक्त सँग लिपटे।
भोगन में रहे सदा भुलात ॥ २ ॥

जग को सत्त जान कर पकड़ा ।
निज करता की सुद्ध न लात ॥ ३ ॥
साध गुरू सँग प्रीत न करता ।
जग जीवन सँग मेल मिलात ॥ ४ ॥
हित का बचन दया कर बोलैं ।
यह मूरख परतीत न लात ॥ ५ ॥
जग बंधन हित चित से चाहे ।
छूटन की नहिँ सुनता बात ॥ ६ ॥
ऐसे मूरख मन के मौजी ।
फिर फिर जग मैं भटका खात ॥ ७ ॥
जो चाहैं यह जीव गुज़ारा ।
तो सतगुरु का पकड़ैं हाथ ॥ ८ ॥
राधास्वामी चरन बसाय हिये मैं ।
भेद पाय फिर सरन समात ॥ ९ ॥

॥ शब्द ४ ॥

कठोरा मनुआँ सुनै न बैन ॥ टेक ॥
जगत भोग मैं रहे भुलाना ।
घट अंतर की परखे न सैन ॥ १ ॥

दम दम दुखी बिकल रहे तन में।
नहिँ पावे सुख चैन ॥ २ ॥
साध गुरू बहु बिधि समझावें।
नहिँ माने उन कहन ॥ ३ ॥
करम धरम में निस दिन खपता।
पाप और पुन्न भार सिर लेन ॥ ४ ॥
जब लग सतसँग संत न पावे।
खुले नहीँ कभी हिरदे नैन ॥ ५ ॥
नाम बिना उद्धार न होवे।
राधास्वामी नाम सुमिर दिन रैन ॥ ६ ॥
राधास्वामी सरन गहो मेरे प्यारे।
छूटे काल करम का देन ॥ ७ ॥

॥ शब्द ५ ॥

मूरख मनुआँ भोग न छोड़े।
याहि कस समझाऊँ री ॥ १
बहु बिधि याहि समझौती दीन्ही।
देख भोग ललचाऊँ री ॥ २ ॥

भोग करे बहु बिधि दुख पावे।
फिर फिर मैं पछताऊँ री ॥ ३ ॥
बिन गुरु कौन करे मेरी रक्षा।
उन चरनन मैं धाऊँ री ॥ ४ ॥
मेहर करें या मन को सम्हालें।
तब निज घर मैं जाऊँ री ॥ ५ ॥
सतसँग करूँ बचन उर धारूँ।
शब्द मैं सुरत लगाऊँ री ॥ ६ ॥
राधास्वामी सतगुरु दीन दयाला।
मैं तो तुमहीं नित्त मनाऊँ री ॥ ७ ॥

॥ शब्द ६ ॥

हे प्यारे मनुआँ, नेक लगा दे कान ॥टेक॥
खट पट में क्यों अट पट बरते।
झट पट गुरु की कर पहिचान ॥ १ ॥
शब्द भेद लेकर तू उन से।
सुरत लगा दे धुन में तान ॥ २ ॥
बिना शब्द उद्धार न होगा।
यह निश्चै कर साँची मान ॥ ३ ॥

या ते धुन में चित्त लगाओ ।
गुरु की दया संग ले आन ॥ ४ ॥
सुन सुन धुन घट मिले अनंदा ।
सुरत चढ़ावो अधर ठिकान ॥ ५ ॥
राधास्वामी चरनन बाँध निशाना ।
अलख अगम के पार बसान ॥ ६ ॥

बचन १३ प्रेम तरंग भाग साँतवाँ

॥ शब्द १ ॥

जागी है उमँग मेरे हिये में ।
गुरु सतगुरु आरती करूँ मैं ॥ १ ॥
महिमा सुन सुन बढ़ा पियारा ।
गुरु चरन कँवल मिला अधारा ॥ २ ॥
दृष्टी जोड़ूँ दरस गुरू मैं ।
नित प्रीत सहित बचन सुनूँ मैं ॥ ३ ॥
ले शब्द भेद नित करूँ अभ्यासा ।
देखूँ घट में बिमल तमाशा ॥ ४ ॥

गुरु स्वरूप धर हिये धियाना ।
हैरत मैं रहूँ निरख के शाना ॥ ५ ॥
चरनन मैं गुरु के मन हुआ लीन ।
हरखत रहे नित्त जैसे जल मीन ॥ ६ ॥
जो जीव चरन मैं गुर के लागे ।
मन और सुरत उन्हीं के जागे ॥ ७ ॥
जग देखा काल का पसारा ।
माया ने उपाये भोग सारा ॥ ८ ॥
जीवन लिया जाल मैं फँसाई ।
निज घर की बाट दी छिपाई ॥ ९ ॥
दुख भोगैं दाद को न पावैं ।
बाहर कोइ जाल से न जावैं ॥ १० ॥
मम भाग उदय हुआ है भारी ।
सतगुरु मेरी आप सुध सम्हारी ॥ ११ ॥
चरनौं मैं मुझे लिया बुलाई ।
सतसँग मैं मुझे लिया लगाई ॥ १२ ॥
निज भेद सुनाय मेहर कीन्ही ।
निज चरन सरन की दात दीन्ही ॥ १३ ॥

मुझ दीन का काज खुद बनाया ।
घट में धुन सँग अधर चढ़ाया ॥ १४ ॥
गुन गाउँ मैं प्यारे गुरु के हर दम ।
जपता रहूँ राधास्वामी दम दम ॥ १५ ॥

॥ शब्द २ ॥

सुनी मैं महिमा सतसँग सार ।
जगा मेरे हिये में गहिरा प्यार ॥ १ ॥
खोजता आया गुरु के पास ।
बचन सुन हुआ चरन बिस्वास ॥ २ ॥
दरस गुरु आनँद बरना न जाय ।
सुरत मन छिन छिन रहे लुभाय ॥ ३ ॥
कहूँ क्या सोभा सतसँग गाय ।
प्रेम रहा सब के हिरदे छाय ॥ ४ ॥
निरख अस लीला उमँगा मन ।
पड़ा अब निज कर गुरु चरनन ॥ ५ ॥
बचन गुरु लागे अति प्यारे ।
मनन कर सार हिये धारे ॥ ६ ॥

प्रेम अब दिन दिन रहा उँमगाय ।
हिये में नइ परतीत जगाय ॥ ७ ॥
उठत अब हिये में नित्त उमंग ।
करूँ मैं निस दिन सतगुरु संग ॥ ८ ॥
सेव गुरु करता उमँग जगाय ।
गुरू परताप रहा हिये छाय ॥ ९ ॥
मेहर से दीन्हा शब्द उपदेश ।
सुनाया निज घर का संदेश ॥ १० ॥
सुरत मन धावत घर की ओर ।
पकड़ कर घट में धुन की डोर ॥ ११ ॥
ध्यान गुरु धरत मिला आनंद ।
कटे सब करम भरम के फंद ॥ १२ ॥
करूँ मैं नित अभ्यास सम्हार ।
गुरू की मेहर लखूँ हर बार ॥ १३ ॥
शब्द रस पियत रहूँ घट माहिँ ।
बसूँ मैं गुरु चरनन की छाँह ॥ १४ ॥
आरती गुरु सन्मुख धारूँ ।
चरन पर तन मन धन वारूँ ॥ १५ ॥

करी राधास्वामी मेहर बनाय।
दिया मेरा बेड़ा पार लगाय ॥ १६ ॥
गाऊँ गुन राधास्वामी बारम्बार।
हुआ मोहिँ चरन सरन आधार ॥१७॥

॥ शब्द ३ ॥

परम गुरु राधास्वामी प्यारे जगत में
देह धर आये, शब्द का देके उपदेशा,
हंस जिव लीन्ह मुकताये ॥ १ ॥
किया सतसंग नित जारी, दया जीवों
पै की भारी, करम और भरम गये सारे,
जीव चरनों में घिर आये ॥ २ ॥
भक्ति का आप दे दाना, दिया जीवन
को सामाना, देख हुआ काल हैराना
रही माया भी मुरझाये ॥ ३ ॥
बढ़ा कर चरन में प्रीती, दई घट शब्द
परतीती, काल और करम को जीती,
सुरत मन उलट कर धाये ॥ ४ ॥

जोत लख सूर निरखा री, परे सत शब्द परखारी, अलख और अगम पेखारी, चरन राधास्वामी परसाये ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४ ॥

आज गुरु आये जीव उबारन ।
आरत उन के सन्मुख वारन ॥ १ ॥
दीन हीन हिये थाल सजावन ।
बिरह अनुराग की जोत जगावन ॥२॥
चरन कँवल गुरु प्रेम बढ़ावन ।
दृढ़ परतीत हिये बिच लावन ॥ ३ ॥
सुरत शब्द में नित्त लगावन ।
नभ की ओर सुरत मन धावन ॥ ४ ॥
धुन घंटा और संख बजावन ।
अद्भुत रूप जोत दरसावन ॥ ५ ॥
त्रिकुटी जाय सुरत हुइ पावन ।
हंसन संग मानसर न्हावन ॥ ६ ॥
भँवरगुफा मुरली धुन गावन ।
सतपुर सुनी धुन बीन सुहावन ॥ ७ ॥

राधास्वामी चरन धियावन।
मेहर दया उन छिन छिन पावन ॥८॥

॥ शब्द ५ ॥

नौ द्वारन में सब कोइ बरते।
दसवाँ निरखे बिरला कोय ॥ १ ॥
जिन को मेहर से सतगुरु भेंटे।
तिन जाना यह मारग गोय ॥ २ ॥
भेद पाय उन जुगत कमाई।
निस दिन सूरत शब्द समोय ॥ ३ ॥
घंटा संख सुनत घट चाली।
गरज मृदंग सुनी धुन दोय ॥ ४ ॥
माया काल बहु दाव चलाये।
गुरु बल लीन्ही सूरत धोय ॥ ५ ॥
निरमल होय गई दस द्वारे।
गुफा परे निरखा पद सोय ॥ ६ ॥
राधास्वामी प्यारे दया करी अब।
चरनन में लई सुरत मिलोय ॥ ७ ॥

बचन १४ प्रेम लहर भाग पहिला

॥ शब्द १ ॥

ठुमक चढ़त सुरत अधर,
सुन सुन घट धुनियाँ ॥ टेक ॥
मन इंद्री सब उठे जाग, सतगुरु के
चरन लाग, जगत भोग छोड़ राग,
गगन ओर चलियाँ ॥ १ ॥
श्याम कंज द्वार तोड़, ऊपर को चली
दौड़, घंटा संख सुनत शोर,
जोत रूप लखियाँ ॥ २ ॥
गगन गरज सुनत चली, ररंकार धुन
संग मिली, बेद कतेब सब रहे तली,
काल करम दलियाँ ॥ ३ ॥
महासुन्न अंध घोर, मुरली धुन करत
शोर, बीन सुनी सतपुर की ओर,
पुरुष गोद पलियाँ ॥ ४ ॥
वहँ से भी गई पार, अलख अगम धुन
सम्हार, राधास्वामी पद निहार,

चरन सरन लरियाँ ॥ ५ ॥

॥ शब्द २ ॥

आज हुआ मन मगन मोर ।
सुन सुन गुरु बतियाँ ॥ टेक ॥
राधास्वामी महिमा अपार । सुरत शब्द जुगत सार । करम धरम दिये निकार। गुरु चरनन रतियाँ ॥ १ ॥
गुरु स्वरूप लाय ध्यान । धुन में सुत धरी तान । मन के दिये तोड़ मान, काल जाल कटियाँ ॥ २ ॥
मन और सुरत अधर धाय, नभ द्वारा दिया तोड़ जाय । जोत रूप रहा जगमगाय, बंकनाल धसियाँ ॥ ३ ॥
त्रिकुटी मिरदँग बजाय, सारँग सँग रही गाय, मुरली धुन गुफा सुनाय, सत्त रूप लखियाँ ॥ ४ ॥
राधास्वामी सतगुरु दयाल, कीन्हा मोहिं अब निहाल, अलख अगम के पार चाल, चरन अंबु छकियाँ ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३ ॥

बिरहन सुत तजत भोग।
गुरु चरनन रतियाँ ॥ टेक ॥
सतसँग कर सुत उठी जाग, जगत फिरत फीकी लाग, परमारथ का मिला भाग, धारा सत मतियाँ ॥ १ ॥
मन चित से हुई दीन, गुरु सँग प्रेम भाव कीन्ह। सुरत शब्द जोग लीन्ह। सुनती गुरु बतियाँ ॥ २ ॥
सुन सुन धुन मगन होत, घट में प्रगटी अलख जोत, अमृत का खुला सोत, पी पी तिरपतियाँ ॥ ३ ॥
घुमड़ घुमड़ गरजत गगन, मन माया होवत दमन, सूर चाँद तारा खिलन, निरखत हरखतियाँ ॥ ४ ॥
सुन में सुत हुई सार, महासुन भेदाँ निहार, मुरली धुन गुफा सम्हार,

लख सत्तपुरुष गतियाँ ॥ ५ ॥
अलख अगम के पार देख, राधास्वामी पद अलेख, जहँ नहिं रूप रंग रेख, धुर पद परसतियाँ ॥ ६ ॥

॥ शब्द ४ ॥

प्रेमी सुत उमँग२, गुरु सनमुख आई॥टेक॥
भाव भक्ति हिये धार, करम धरम भरम टार, भोग बासना तुरत जार। ले सतगुरु सरनाई ॥ १ ॥
सतसँग में नित्त जाग, गुरु चरनन बढ़त लाग, परमारथ का जगत भाग, गुरु की दया पाई ॥ २ ॥
शब्द जोग नित कमाय, मन और सुरत अधर धाय, घट में आनन्द पाय। दिन दिन मगनाई ॥ ३ ॥
तिल का लिया ताला तोड़, घट में अब मचा शोर, काल करम का घटा ज़ोर, गुरु पद परसाई ॥ ४ ॥

बेनी अश्नान कीन्ह, मुरली धुन सुनी
बीन, राधास्वामी चरन हुई दीन,
छिन छिन बल जाई ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५ ॥

प्रेमी जन बिकल मन।
गुरु दरशन चाहत ॥ टेक ॥
सुन सुन सतसँग बिलास, चित में रहे
नित उदास, माँगत गुरु सँग निवास,
बार बार धावत ॥ १ ॥
दरशन पाय मगन होत, आनँद का
मानो खुला सोत, कलमल के सब दाग़
धोत, प्रेम प्रीत लावत ॥ २ ॥
तन मन धन गुरु पै वार, भोग बासना
तजत झाड़, शब्द भेद ले अपार,
गुरु गुन नित गावत ॥ ३ ॥
घट में दरशन सार पाय, शब्द शोर
सुनत जाय, गुरु सतगुरु पद परस
धाय, मन में हरखावत ॥ ४ ॥

चढ़ चढ़ सुत हुई सार। आगे को क़दम धार। राधास्वामी पद सोभा अपार। निरख निरख मुसक्यावत ॥५॥

॥ शब्द ६ ॥

खोजी जन सरस मन,
सुन सुन गुरु बचना ॥ टेक ॥

कुल मालिक की ख़बर पाय, मारग का सब भेद गाय। सहज जुगत दई जनाय, घट धुन में रचना ॥ १ ॥

घट घट में सुरत सार, शब्द ही सच्चा करतार, दोउ मिल उलट चढ़ें पार, धुर पद जाय लखना ॥ २ ॥

सतसँग के बचन धार, गुरु चरनन में लाय प्यार, राधास्वामी सरन सम्हार, जग से छिन छिन हटना ॥ ३ ॥

गुरु स्वरूप ध्यान लाय, मन और सुरत अधर धाय, शब्द शोर घट में सुनाय, सहज सहज चलना ॥ ४ ॥

सतगुरु मोहिँ कीन्हा निहाल। काल करम का काटा जाल। राधास्वामी पद पूरन दयाल। चढ़ चढ़ जाय मिलना ॥५॥

॥ शब्द ७ ॥

चंचल चित चपल मन।
नित जग मैं भरमावत ॥ टेक ॥
भक्ती की गहो रीत। संतन का लेव सीत। जग मैं कोइ नाहिँ मीत।
धोखा क्यौं खावत ॥ १ ॥
प्रेमी जन सँग मेल लाय। सतसँग मैं तुम बैठो जाय। छिन छिन राधास्वामी नाम गाय। अस करम नसावत ॥ २ ॥
मानो गुरु सीख सार। चरनन मैं लाओ अधिक प्यार। गुरु ध्यान धरो चित सम्हार। छिन छिन रस पावत ॥ ३ ॥
शब्द का ले उपदेश सार। संसय भरम देव निकार। सूरत धुन सँग पियार।
नित अधर चढ़ावत ॥ ४ ॥

नित नेम से करूँ भजन सार। प्यारे राधास्वामी सरन सम्हार। उन चरनन को रहूँ निहार। दूजा कोइ और न भावत ५

॥ शब्द ८ ॥

आवो रे जीव आवो आज,
गहो राधास्वामी सरना ॥ टेक ॥

आज ही निज करो काज। छोड़ो कुल जग की लाज। भक्ति भाव लाय साज। चरनन चित धरना ॥ १ ॥

सतसँग करो चित से चेत। गुरु चरनन में लाओ हेत। राधास्वामी छिन छिन दया लेत। सुत शब्द माहिँ भरना ॥२॥

मन और सुरत उठे जाग। नभ द्वारे से निकल भाग। घट में सुन सुन शब्द राग। बहुर अधर चढ़ना ॥ ३ ॥

गगन और सुरत तान। त्रिकुटी धुन सुनी कान। गुरु के चरन परस आन। मन माया हरना ॥ ४ ॥

तिरबेनी अश्नान कर। मगन होय
सुत चढ़ी अधर। सत्त शब्द ध्यान धर।
भौ सागर तरना ॥ ५ ॥
अलख अगम के पार जाय। प्यारे
राधास्वामी दरस पाय। छिन छिन रहे
उन महिमा गाय। चरन सरन पड़ना ॥६॥

॥ शब्द ९ ॥

मन इंद्री आज घट में रोक।
गुरु मारग चलना ॥ टेक ॥
गुरु चरनन में लाय प्यार। राधास्वामी
धाम की आस धार। काल करम के
बिघन टार। गुरु की गोद पलना ॥ १ ॥
सतसँग के बचन सार। चेत सुनो और
हिये में धार। घट में चलो सतगुरु की
लार। मन माया दलना ॥ २ ॥
जगत भाव और मोह त्याग। भोगन
में तजो राग। सँग सतगुरु तू खेल
फाग। क्यों जग भाटी जलना ॥ ३ ॥

शब्द जुगत नित कमाय । गुरु स्वरूप ध्यान लाय । राधास्वामी चरन सरन ध्याय । गुरु चरनन रलना ॥ ४ ॥
श्याम सेत घाट पार । सेत सूर लख उजार । सत्त अलख अगम निहार । राधास्वामी से मिलना ॥ ५ ॥

॥ शब्द १० ॥

मन इन्द्री को घट में घेर,
गुरु जुगत कमावो ॥ टेक ॥
तीसर तिल में दृष्टि जोड़ । मन की गुनावन देव छोड़ । घट में सुन शब्द शोर । मन सुरत लगावो ॥ १ ॥
गुरु स्वरूप अगुवा बनाय। सहसकँवल-दल पहुँचो धाय । धुन घंटा और संख गाय । गगन ओर धावो ॥ २ ॥
त्रिकुटी सुन गरज धुन । चंद्र रूप लख जाय सुन । मुरली धुन पड़ी सरवन । सतपुरुष ध्यान लावो ॥ ३ ॥

राधास्वामी कीन्ही दया अपार। काल और महाकाल रहे हार। काट दिये सब करम झाड़। हरदम उन गुन गावो ४

वहँ से भी चली सुरत। अलख अगम जाय किया निरत। चरनन पर सीस धरत। राधास्वामी पद पावो ॥ ५ ॥

॥ शब्द ११ ॥

मनुआँ क्यों सोचे नाहिँ,
जग में दुख भारी ॥ टेक ॥

जल्दी से उठ चेत जाग। सतसँग में तू जाव भाग। सतगुरु के चरन लाग। तज करम धरम सारी ॥ १ ॥

जग में कोइ नाहिँ मीत। सतसँग में धरो चीत। गुरु भक्ती की धार रीत। मत भरमे प्यारी ॥ २ ॥

सुरत शब्द उपदेश सार। गुरु से ले धर के प्यार। गुरु स्वरूप ध्यान धार, निरखो घट उजियारी ॥ ३ ॥

पिरथम लख जोत सार । निरखो फिर सूरज उजार । चंद्र रूप सुन में निहार। धुन मुरली धारी ॥ ४ ॥
सत्त अलख अगम निहार । सूरत अब हुई सार । राधास्वामी पद निरखा अपार । चरनन बलिहारी ॥ ५ ॥

॥ शब्द १२ ॥

प्यारी ज़रा कर बिचार,
यहाँ सदा नहीं रहना ॥ टेक ॥
इक दिन देह होत पात । छूटे कुल कुटम्ब नात । आज ही सुन निज घर की बात । क्यों जम के दंड सहना ॥१॥
सतसँग में तुम बैठो जाय । सतगुरु की सरन आय । भक्ति भाव साज लाय । सीस चरन देना ॥ २ ॥
सुरत शब्द जुगत धार । गुरु चरनन में लाय प्यार । निरखो घट में बहार नित रस ही लेना ॥ ३ ॥

सेवा कर सतगुरु रिझाय। मेहर दया उन परख आय। घट में रहे नित हरख छाय। सुरत शब्द गहना ॥ ४॥
श्याम सेत के जाय पार। सुन धुन मुरली बीन सार। राधास्वामी प्रीतम चरन निहार। सुनती निज बैना ॥ ५ ॥

॥ शब्द १३ ॥

मन रे क्यों माने नाहिं,
जग सँग क्या लेना ॥ टेक ॥
या जग के सकल भोग। जानो सब असाध रोग। इस्थिर कोइ नाहिं होग। गुरु चरनन चित देना ॥ १ ॥
धन सम्पत और कुल कुटम्ब। स्वारथ के सबहि संग। भक्ती में करें भंग। इन सँग नहिं बहना ॥ २॥
सतसँग की क़दर जान। सतगुरु सँग करो आन। सहज सहज कर पिछान। सीस चरन देना ॥ ३ ॥

शब्द जुगत यह सब का सार। नित्त कमाओ घर के प्यार। घट में लख बिमल बहार। नित्त मगन रहना ॥ ४ ॥
राधास्वामी सरन धार। परखो उन दया अपार। भौजल के जाव पार। फिर दुख सुख नहिँ सहना ॥ ५ ॥

॥ शब्द १४ ॥

मन रे चल गुरु के पास,
घर का भेद लीजे ॥ टेक ॥
यह जग है काल देस। सच्चे सुख का नहीँ लेस। घर चल धारो हंस भेस। प्रेम रंग भीँजे ॥ १ ॥
वह घर है अगम अपार। सतगुरु की चलो लार। तन मन देव चरनोँ पै वार। नित्त भक्ति कीजे ॥ २ ॥
अबही करो सतसंग सार। भूल भरम सब देव निकार। जल्दी कर नहिँ देर धार। नित काया छीजे ॥ ३ ॥

गुरु का आदि उपदेश मान। चरनन में अब लाव ध्यान। सूरत घट धुन लगान। अमृत रस पीजे ॥ ४ ॥

चढ़ चढ़ सुत गई पार। बीन बाँसरी धुन सम्हार। पहुँची राधास्वामी धाम अपार। हरख हरख रीझे ॥ ५ ॥

॥ शब्द १५ ॥

चल री सुत गुरु के देस,
धर हिये अनुरागा ॥ टेक ॥

सतगुरु के जाव पास। देखो सतसँग बिलास। छोड़ो अब जग की आस। चित धर बैरागा ॥ १ ॥

शब्द का ले उपदेश सार। घट में सुन धुन झनकार। गुरु स्वरूप ध्यान धार। काम क्रोध त्यागा ॥ २ ॥

लख जग का ब्योहार असार। स्वारथ के सबहि यार। मन हुआ इनसे बेज़ार। गगन ओर भागा ॥ ३ ॥

नभ में लख जोत अजूब। त्रिकुटी गुरु का स्वरूप। सुन में खिला चंदा अनूप। सोहँग शब्द जागा ॥ ४ ॥

सत्तपुरुष का दरस पाय। अलख अगम को परसा जाय। राधास्वामी धाम की ओर धाय। चरन सरन लागा ॥ ५ ॥

॥ शब्द १६ ॥

प्यारी क्यौं सोच करे,
प्यारे राधास्वामी तेरे सहाई ॥ टेक॥

जब से गुरु दरस पाय। सतसँग में लगी धाय। बचन रहे उन चित समाय। गही राधास्वामी सरनाई ॥ १ ॥

सतसँग की निरखत बहार। दिन दिन हिये में बढ़त प्यार। करम धरम दिये निकार। घट होत सफ़ाई ॥ २ ॥

सुरत शब्द अभ्यास सार। नित कमावत यही कार। मन के गये सब विकार। गुरु की दया पाई ॥ ३ ॥

सतगुरु हुए अब दयाल। घट मैं सुनाई धुन रसाल। काल करम का काटा जाल। सुरत अधर जाई ॥ ४ ॥
बेनी अश्नान कर। सतपद लखा चढ़ अधर। राधास्वामी चरनन ध्यान धर। निज घर मैं आई ॥ ५ ॥

वचन १४ प्रेम लहर भाग दूसरा

॥ शब्द १ ॥

चलो प्रेम सभा से मिलो री सखी। जहँ राधास्वामी गुन नित गाय रहे ॥ टेक॥
भक्ती रीत जनाय खोलकर।
शब्द की महिमा सुनाय रहे ॥ १ ॥
प्रेमी जन जहँ हिल मिल चालैं।
गुरु चरनन चित लाय रहे ॥ २ ॥
तन मन धन गुरु चरनन वारत।
नइ नइ उमँग जगाय रहे ॥ ३ ॥
प्रीत प्रतीत बढ़ावत दिन दिन।
नइ नइ सेवा लाय रहे ॥ ४ ॥

गुरु को पल पल माहिँ रिझावत।
राधास्वामी चरन समाय रहे ॥ ५ ॥

॥ शब्द २ ॥

चलो घट मैं दौरा करो री सखी।
जहँ अनहद बाजे बाज रहे ॥ टेक ॥
नैनन मैं तुम जाय बसो। फिर पचरंगी फुलवार लखो। तिल खिड़की को खोल धसो। जहँ घंटा संख नित गाज रहे १
जोत उजार लखत सुत चाली। बंक परे धुन गगन सम्हाली। गुरु स्वरूप लख हुई निहाली। जहँ सूर चंद बहु लाज रहे २
सुन धुन मैं अब सुरत धरो। जहँ तिरबेनी अश्नान करो। हंसन से चित हरख मिलो। जहँ अनेक अखाड़े साज रहे ।३।
भँवर गुफा मुरली धुन गाओ। सुन २ बीन सत्तपुर धाओ। हंसन संग आरती लाओ। जहँ सतगुरु संत बिराज रहे॥४॥

महासुन्न परे लख भँवरगुफा ।
सतपुर सत दरस निहारा री ॥ ६ ॥
अलख अगम के पार लखा ।
राधास्वामी धाम नियारा री ॥ ७ ॥

॥ शब्द ४ ॥

सतगुरू के मुख सेहरा चमकीला ।
अचरज शोभा देत सखी ॥ १ ॥
फूल गूँथ कर प्रेमन लाईं ।
महक सुगँध सब लेत सखी ॥ २ ॥
आरत कर सब मगन हुए ।
अब तन मन देते भैंट सखी ॥ ३ ॥
सूर किया गुरु खेत जिताया ।
काल को डाला रेत सखी ॥ ४ ॥
राधास्वामी दयाल दया की भारी ।
सहज मिला पद सेत सखी ॥ ५ ॥

राधास्वामी दया बना सब काजा,
पूरन भक्ति मिला अब साजा।
काल और महाकाल रहे लाजा,
करम धरम सब दाज रहे ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३ ॥

निज घट में खोज पिया को सखी।
क्यों भरमे जगत उजाड़ा री ॥ टेक ॥
सतगुरु से ले घट भेद सही।
कर सतसँग उन का सारा री ॥ १ ॥
तन मन और इंद्री रोक चलो।
धर सतगुरु चरनन प्यारा री ॥ २ ॥
धुन घट में सुन सुन अधर चढ़ो।
जहँ बहती निरमल धारा री ॥ ३ ॥
कल मल धोय हुई सुत निरमल।
लखती जोत उजारा री ॥ ४ ॥
बंक पार धुन गगन सुनी।
सुन्न में जाय निरख बहारा री ॥ ५ ॥

सुन और महासुन पारा। चढ़ी सुरत पकड़ धुन धारा। राधास्वामी धाम निहारा। जहँ अचरज खेल खिलो री॥५॥

॥ शब्द २ ॥

चलो आज गुरु दरबारा।

जहँ होवत सहज उधारा॥ टेक॥

मैं करम धरम भरमानी। भेषन मैं रही भुलानी। गुरु महिमा नेक न जानी। जो करें जीव निस्तारा॥ १॥

धुर दया हुई जब मुझ पर। गुरु भेदी मिलिया आकर। उन महिमा कही जना कर। गुरु चरन करो आधारा॥ २॥

सतगुरु फिर किरपा धारी। दिया भेद मोहिं निज सारी। सुत शब्द जुगत अति भारी। समझाई करके प्यारा॥३॥

मन उमँग सहित घट लागा। सुन शब्द बढ़ा अनुरागा। जग से हुआ चित बैरागा। गुरु रूप हिये मैं धारा॥४॥

बचन १४ प्रेम लहर भाग तीसरा

होली

॥ शब्द १ ॥

चल देखिये सतसँग में,
जहाँ निरमल फाग रचो री ॥टेक॥
सतगुरु जहँ बचन सुनावें । प्रेमी जन सुन हरखावें। दरशन की शोभा निरखत। मन में गुरु भाव बढ़ो री ॥ १ ॥
भक्ती रँग बरसत छिन छिन। हिये प्रेम बढ़त अब दिन दिन। गुरु पै सब वारत तन मन । धन २ गुरु शोर मचो री ॥२॥
काल अपने खेल खिलावे । जीवन को सद भरमावे । गुरु निकट न आने पावे। घर इसका आज तजो री ॥ ३ ॥
ले सुरत शब्द उपदेशा । घट धुन में करो प्रवेशा । अस छूटे काल कलेशा । गुरु पद जाय दरस तको री ॥ ४ ॥

सुन और महासुन पारा । चढ़ी सुरत पकड़ धुन धारा । राधास्वामी धाम निहारा। जहँ अचरज खेल खिलो री ।५।

॥ शब्द २ ॥

चलो आज गुरु दरबारा ।
जहँ होवत सहज उधारा ॥ टेक ॥
मैं करम धरम भरमानी। भेषन में रही भुलानी । गुरु महिमा नेक न जानी । जो करें जीव निस्तारा ॥ १ ॥
धुर दया हुई जब मुझ पर । गुरु भेदी मिलिया आकर। उन महिमा कही जना कर । गुरु चरन करो आधारा ॥ २ ॥
सतगुरु फिर किरपा धारी। दिया भेद मोहिं निज सारी । स्रुत शब्द जुगत अति भारी । समझाई करके प्यारा ॥३॥
मन उमँग सहित घट लागा। सुन शब्द बढ़ा अनुरागा । जग से हुआ चित बैरागा । गुरु रूप हिये में धारा ॥४॥

दरशन की उठी अभिलाषा। चल आई सतगुरु पासा। सतसँग का देख बिलासा। सुन सुन गुरु बचन सम्हारा ॥ ५ ॥
क्या महिमा सतसँग गाऊँ। या सम कोइ जतन न पाऊँ। मन के सब भरम हटाऊँ। गुरु अस्तुत करूँ सँवारा ॥६॥
गुरु निरख दीनता मेरी। करी मुझ पर मेहर घनेरी। मैं हुई उन चरनन चेरी। तन मन धन गुरु पर वारा ॥ ७ ॥
मन हुआ प्रेम रस माता। गुरु सेव करत दिन राता। जग जीवन सँग नहिँ भाता। अब मिल गया सतसँग सारा ॥८॥
गुरु ध्यान धरत मन मगना। धुन सुनत चढ़त सुत गगना। सतसँग में निस दिन जगना। मिला राधास्वामी सरन सहारा ९
गुरु चरनन बिनती धारी। मोहिँ लीजे बेग सुधारी। अपना कर दया बिचारी। भौजल के पार उतारा ॥ १० ॥

बल काल करम का तोड़ो। सूरत निज चरनन जोड़ो। माया के परदे फोड़ो। हरखूँ लख धाम नियारा ॥ ११ ॥

राधास्वामी सतगुरु प्यारे। तुम गत मत अगम अपारे। मैं जिऊँ तुम नाम अधारे। दम दम तुम चरन निहारा ॥ १२ ॥

॥ शब्द ३ ॥

चलो सतगुरु घाट सखी री।
लेव मन और सुरत धुलाई ॥टेक॥

जहँ प्रेम की बरखा भारी। सतसँग जल नितही जारी। सब कलमल धोवत आ री। घट द्वारा लेत खुलाई ॥ १ ॥

सतसँग कर करो गुरु सेवा। लो उन से घट का भेवा। छोड़ो सब देवी देवा। इक राधास्वामी इष्ट बँधाई ॥ २ ॥

स्रुत शब्द की धारो करनी। मन सूरत धुन में धरनी। या बिध भौसागर तरनी। नित सतगुरु रूप धियाई ॥ ३ ॥

अस करो नित्त अभ्यासा। मन सूरत
चढ़ैं अकाशा। देखैं वहँ बिमल बिलासा।
निरमलता होत सफ़ाई ॥ ४ ॥
सतगुरु निज दया बिचारी। जीवन का
करैं उपकारी। राधास्वामी सरन स-
म्हारी। नित राधास्वामी नाम जपाई ॥५॥

॥ शब्द ४ ॥

चल देखिये गुरु द्वारे।
जहँ प्रेम समाज लगा री ॥ टेक ॥
प्रेमी जन जुड़ मिल बैठे। राधास्वामी
महिमा कहते। गुरु दरशन रस नित
लेते। इक २ का भाग जगा री ॥ १ ॥
मैं नीच अधम नाकारा। सतसँग का
लीन्ह सहारा। गुरु लेहैं मोहिं सुधारा।
उन चरनन प्रीत पका री ॥ २ ॥
गुरु बचन सुनत मन मोहा। तब भूल
भरम सब खोया। फिर करम धरम भी
सोया। यों माया काल ठगा री ॥ ३ ॥

घट अंतर ध्यान लगाई । सुन सुन धुन अति हरषाई। मन सूरत अधर चढ़ाई । गुरु अचरज दरस तका री ॥ ४ ॥

गगना में बजी बधाई । बिरोधी सब रहे मुरझाई । राधास्वामी की फिरी दुहाई, उन महिमा छिन छिन गा री ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५ ॥

चल खेलिये सतगुरु से ।
रँग होली आज सखी री ॥ टेक ॥
दरशन कर नैन निहारी ।
गुरु शोभा आज लखी री ॥ १ ॥
सतसँग के बचन सुहावन ।
सुन २ हिये प्रीत जगी री ॥ २ ॥
सुत शब्द जुगत अनमोला ।
ले गुरु से आज तरी री ॥ ३ ॥
खुल खेलूँ फाग नवीना ।
गुरु चरनन सुरत धरी री ॥ ४ ॥

घट प्रेम रंग नित भरती।
गुरु चरनन छिड़क चली री ॥ ५ ॥
अस खेलत होली भारी।
नभ तज सुत गगन चढ़ी री ॥ ६ ॥
दस द्वारा खोलत चाली।
हंसन सँग उमँग मिली री ॥ ७ ॥
सतपुर सतगुरु से भेंटी।
राधास्वामी चरनन जाय बसी री ॥ ८ ॥

॥ शब्द ६ ॥

जग भाव तजो प्यारी मन से।
सतसँग में चित्त धरो री ॥ टेक ॥
सब करम धरम दुखदाई।
इन सँग क्यों भरम बहो री ॥ १ ॥
तज टेक पुरानी प्यारी।
राधास्वामी सरन गहो री ॥ २ ॥
ले गुरु से शब्द उपदेशा।
सुत तिल में आज भरा री ॥ ३ ॥

धुन सुन २ होत मगन मन ।
गुरु चरनन भाव बढ़ो री ॥ ४ ॥
सुत उलटत नभ चढ़ झाँकी ।
घंटा और संख सुनो री ॥ ५ ॥
चढ़ गगन अधर को धाई ।
धुन मुरली बीन बजो री ॥ ६ ॥
राधास्वामी सतगुरु प्यारे ।
उन चरनन जाय पड़ो री ॥ ७ ॥

॥ शब्द ७ ॥

मोहिँ दरस देव गुरु प्यारे ।
क्यों एती देर लगइयाँ ॥ १ ॥
मैं माँगत २ थकियाँ ।
कोई जतन पेश नहिँ जइयाँ ॥ २ ॥
बिन दया तुम्हारी दाता ।
यह जीव कहा कर सकियाँ ॥ ३ ॥
अब परदा देव उठाई ।
तुम दरशन छिन छिन तकियाँ ॥ ४ ॥

मन इंद्री ज़ोर चलावत ।
जब तब मोहिँ नाच नचइयाँ ॥ ५ ॥
दूतन से बस नहिँ चालत ।
मैं रहूँ नित्त मुरझइयाँ ॥ ६ ॥
निज मन से खूँट छुड़ाओ ।
मेरी सूरत गगन चढ़इयाँ ॥ ७ ॥
सुन मैं लख चंद्र उजारा ।
हंसन सँग केल करइयाँ ॥ ८ ॥
मुरली धुन गुफा सम्हालूँ ।
सतपुर जाय बीन बजइयाँ ॥ ९ ॥
लख अलख अगम दरबारा ।
राधास्वामी चरन समइयाँ ॥ १० ॥

॥ शब्द ८ ॥

सतसँग की क़दर न जानी ।
मन बिरथा बैस गँवाई ॥ १ ॥
दुरलभ नरदेही पाई ।
याहि सुफल करो मेरे भाई ॥ २ ॥

गुरु चरन पकड़ दृढ़ आई ।
तब दया मेहर कुछ पाई ॥ ३ ॥
निज घर का देहिँ सँदेसा ।
घट धुन में सुरत लगाई ॥ ४ ॥
जग भोग से कर बैरागा ।
गुरु चरनन प्रीत बढ़ाई ॥ ५ ॥
शब्दा रस तोहि पिलाकर ।
मन सूरत अधर चढ़ाई ॥ ६ ॥
राधास्वामी दीनदयाला ।
भौ सागर सहज लँघाई ॥ ७ ॥

॥ शब्द ८ ॥

चरनन में चित्त लगावो ।
जग आसा दूर हटावो ॥ १ ॥
तब ध्यान रूप रस पावो ।
धुन शब्द सुनत हरखावो ॥ २ ॥
इंद्री रस भोग घटावो ।
मन चंचल थीर करावो ॥ ३ ॥

गुरु चरनन प्रेम बढ़ावो ।
धुन सँग सुत अधर चढ़ावो ॥ ४ ॥
लख जोत सूर और चंदा ।
धुन मुरली गुफा सुनावो ॥ ५ ॥
सतपुर में बीन बजावो ।
फिर अलख अगम को धावो ॥ ६ ॥
ले मेहर दया सतगुरु की ।
राधास्वामी चरन समावो ॥ ७ ॥

॥ शब्द १० ॥

तुम सोचो अपने मन में ।
या जग में दुक्ख घनेरा ॥ टेक ॥
यहँ चार दिनाँ का रहना ।
फिर चलना छोड़ बखेड़ा ॥ १ ॥
सब स्वारथ सँग आय अटके ।
कोइ साँचा संग न हेरा ॥ २ ॥
गुरु हैं हितकारी तेरे ।
उनके सँग करो निबेड़ा ॥ ३ ॥
सतसँग कर उनका चित से ।
ले उनसे जुगत सवेरा ॥ ४ ॥

हित से करो नित अभ्यासा ।
गुरु शब्द का बाँधो बेड़ा ॥ ५ ॥
चढ़ उतरो भौजल पारा ।
सत शब्द सुनो धुन नेड़ा ॥ ६ ॥
राधास्वामी सरन सम्हारो ।
छूटे सब मेरा तेरा ॥ ७ ॥

बचन १४ प्रेम लहर भाग चौथा

॥ शब्द १ ॥

दरस देव प्यारे,
अब क्यों देर लगइयाँ हो ॥ टेक ॥
पिरथम जब मोहिं दरशन दीन्हे,
मन और बुद्धि मेरे हर लीन्हे ।
बिरह अगिन हिये में धर दीन्हे,
सुलगत नित्त तपइयाँ हो ॥ १ ॥
बचन सुना मेरी प्रीत बढ़ाई । शब्द लखा परतीत दृढ़ाई । करम भरम सब दूर हटाई । घट में कार कमइयाँ हो ॥२॥

शब्द रूप की सुन २ महिमा, घट में जागी उमँग नवीना। रैन दिवस नहिँ पाऊँ चैना। मीना सम जल बिन तड़पइयाँ हो ॥ ३ ॥
राधास्वामी सतगुरु पिता हमारे,
जियल रहूँ उन चरन अधारे।
मेहर से लिया मोहिँ आप सम्हारे,
उन चरनन पर बल २ जइयाँ हो ॥ ४ ॥

॥ शब्द २ ॥

चलो घर प्यारे,
क्यों जग में नित्त फसइयाँ हो ॥ टेक ॥
देह संग नित दुख सुख सहते। मन इंद्री भोगन में बहते। सतगुरु दया धार अब कहते। चेतो तुम गहो सरन गुसइयाँ हो १
सतगुरु घर का भेद बतावें। शब्द संग मन सुरत चढ़ावें। काल करम से छूट छुड़ावें। उन सँग पार चलइयाँ हो ॥ २ ॥
अधर धाम सतगुरु का डेरा,
पहुँचे वहाँ जिन धुन घट हेरा।

सतगुरु दया सुरत ले घेरा ।
यारे राधास्वामी चरन समइयाँ हो ॥३॥

॥ शब्द ३ ॥

गुरु बचन सम्हारो,
क्यों मन सँग भरमइयाँ हो ॥ टेक ॥
मन की कहन ज़रा मत मानो ।
उस को पूरा बैरी जानो ।
दृष्टि जोड़ सुत घट में तानो ।
अनहद शब्द सुनइयाँ हो ॥ १ ॥
सतगुरु हैं तेरे साँचे मीता ।
उन सँग काल करम दोउ जीता ।
शब्दारस नित घट में पीता ।
चरनन सुरत धरइयाँ हो ॥ २ ॥
राधास्वामी दाता हुए सहाई ।
मेहर से मेरी सुरत जगाई ।
चरनन में लिया जकड़ लगाई ।
उन सँग काज बनइयाँ हो ॥ ३ ॥

[श]ब्द रूप की सुन २ महिमा, घट में जागी [उ]मँग नवीना। रैन दिवस नहिं पाऊँ चैना।
[म]ीना सम जल बिन तड़पइयाँ हो ॥ ३ ॥
[र]ाधास्वामी सतगुरु पिता हमारे,
जियत रहूँ उन चरन अधारे।
मेहर से लिया मोहिं आप सम्हारे,
उन चरनन पर बल २ जइयाँ हो ॥ ४ ॥

॥ शब्द २ ॥

चलो घर प्यारे,
क्यों जग में नित्त फसइयाँ हो ॥ टेक ॥
देह संग नित दुख सुख सहते। मन इंद्री भोगन में बहते। सतगुरु दया धार अब कहते। चेतो तुम गहो सरन गुसइयाँ हो १
सतगुरु घर का भेद बतावें। शब्द संग मन सुरत चढ़ावें। काल करम से छूट छुड़ावें। उन सँग पार चलइयाँ हो ॥ २ ॥
अधर धाम सतगुरु का डेरा,
पहुँचे वहाँ जिन धुन घट हेरा।

सतगुरु दया सुरत ले घेरा ।
प्यारे राधास्वामी चरन समइयाँ हो ॥३॥

॥ शब्द ३ ॥

गुरु बचन सम्हारो,
क्यौँ मन सँग भरमइयाँ हो ॥ टेक ॥
मन की कहन ज़रा मत मानो ।
उस को पूरा बैरी जानो ।
दृष्टि जोड़ सुत घट मैं तानो ।
अनहद शब्द सुनइयाँ हो ॥ १ ॥
सतगुरु हैं तेरे साँचे मीता ।
उन सँग काल करम दोउ जीता ।
शब्दारस नित घट मैं पीता ।
चरनन सुरत धरइयाँ हो ॥ २ ॥
राधास्वामी दाता हुए सहाई ।
मेहर से मेरी सुरत जगाई ।
चरनन मैं लिया जकड़ लगाई ।
उन सँग काज बनइयाँ हो ॥ ३ ॥

बचन १४ प्रेम लहर भाग पाँचवाँ

॥ शब्द १ ॥

यह देस मुझे नहिँ भावे । यहाँ दुख सुख नितही सहना । कोइ भेद देव वा घर का । जहाँ सदही आनँद लेना। मैं उसके चरन पड़ूँ री ॥ १ ॥

सतगुरु घर भेद सुनावैं । चलने की जुगत लखावैं । जो सरनी उनकी आवैं। तिन को ले धुर पहुँचावैं। मैं उन मिल काज करूँ री ॥ २ ॥

मोहिँ मिल गये दाता प्यारे । उन चरन सीस पर धारे । सतसँग कर बचन सुनारे। दरशन कर पाप कटारे। हिये में उन प्रेम भरूँ री ॥ ३ ॥

गुरु मेहर करी मो पै भाई। सुत शब्द जुगत बतलाई । यह देस काल का गाई। मन सूरत अधर चढ़ाई । घट में धुन शब्द सुनूँ री ॥ ४ ॥

चढ़ चढ़ सुत ऊँचे चाली ।
धुन सुन सुन हुइ मतवाली ।
गुरु दृष्टि मेहर की डाली ।
हुए दूर सकल दुख साली ।
अब राधास्वामी चरन तकूँ री ॥ ५ ॥

॥ शब्द २ ॥

हमें घर जाने दे ।
मन क्यों तू विघन कराय ॥ टेक ॥
जनम जनम जग में भरमाया ।
भोगन संग रहा अटकाय ॥ १ ॥
अबके तैं भल औसर पाया ।
गुरु चरनन में प्रीत लगाय ॥ २ ॥
जो यह कहन न मानो मेरी ।
बार बार चौरासी धाय ॥ ३ ॥
बिषयन का तुम संग तियागो ।
भोग बासना दूर हटाय ॥ ४ ॥
गुरु की दया ले घट में चालो ।
चढ़ो अधर तुम धुन रस पाय ॥ ५ ॥

निरमल होय मिले जाय गुरु से ।
नित्त नवीन पिरेम जगाय ॥ ६ ॥
सतगुरु संग चढ़त ऊँचे को ।
सत्तलोक में आरत लाय ॥ ७ ॥
चरन सरन राधास्वामी हिये धर ।
आज लिया निज काज बनाय ॥ ८ ॥

॥ शब्द ३ ॥

भोग बासना मन में धरी ।
मोसे सतसँग किया न जाय ॥ टेक ॥
मैं चाहूँ छोड़ूँ भोगन को ।
देख भोग मन अति ललचाय ॥ १ ॥
सतसँग बचन सुनूँ मैं कैसे ।
मन रहे अनेक तरंग उठाय ॥ २ ॥
चित्त चंचल मेरा चहुँ दि[illegible] ।
सुरत शब्द[illegible] ठह[illegible] ३ ॥
निरभय हो[illegible]

बचन १४ प्रेम लहर भाग छठवाँ

॥ शब्द १ ॥

दया के सिंध सतगुरु ।
जीवन के हितकारी हो ॥ टेक ॥
चरनन में लगाय मोको ।
दीन्ही भक्ति करारी हो ॥ १ ॥
ओट गही मैं उनकी अबके ।
सहज मिला पद चारी हो ॥ २ ॥
मन इंद्री बहु बिघन लगाते ।
देते दुख मोहिं भारी हो ॥ ३ ॥
सतगुरु दया प्रबल जब कीन्ही ।
मन माया दोउ हारी हो ॥ ४ ॥
गहरी प्रीत बसी जब हिये में ।
भोग लगे सब खारी हो ॥ ५ ॥
सतगुरु रूप निरखती चाली ।
शब्द में लागी ताड़ी हो ॥ ६ ॥
धुन घंटा और संख सुनाई ।
निरखी जोत उजारी हो ॥ ७ ॥

गुरु पद जाय लखा त्रिकुटी में ।
फिर अक्षर धुन धारी हो ॥ ८ ॥
भँवरगुफा मुरली धुन पाई ।
सतपुर बीन सम्हारी हो ॥ ९ ॥
अलख अगम के पार चढ़ा के ।
हुई अब सब से न्यारी हो ॥ १० ॥
राधास्वामी दरशन पाये ।
हुई उन चरनन प्यारी हो ॥ ११ ॥

॥ शब्द २ ॥

राधास्वामी दाता दीन दयाला ।
किया भारी उपकारा हो ॥ टेक ॥
शब्द भेद दे जीव चितावें ।
करें सहज छुटकारा हो ॥ १ ॥
सहज अभ्यास करें सब कोई ।
जुगत कही निज सारा हो ॥ २ ॥
चरन सरन दे जीव उबारें ।
काटें करमन भारा हो ॥ ३ ॥

अपना बल दे कार करावें।
देते गुप्त सहारा हो ॥ ४ ॥
कस कस महिमा गाऊँ उनकी।
कीन्ही दया अपारा हो ॥ ५ ॥
मैं अति नीच निकाम अनाड़ी।
आन पड़ी उन द्वारा हो ॥ ६ ॥
दया मेहर से बचन सुनाये।
लीन्हा मोहिँ सुधारा हो ॥ ७ ॥
ध्यान धरूँ नित घट में उनका।
देखूँ रूप पियारा हो ॥ ८ ॥
सुरत लगाय शब्द सँग धाऊँ।
निरखूँ जोत उजारा हो ॥ ९ ॥
त्रिकुटी होय चढ़ी ऊँचे को।
न्हाई बेनी धारा हो ॥ १० ॥
भँवरगुफा का लखा उजारा।
महासुन्न के पारा हो ॥ ११ ॥
आगे चढ़ कर सुनी बीन धुन।
सत्तपुरुष दरबारा हो ॥ १२ ॥

आरत कर कर मगन हुई अब ।
लखा वार और पारा हो ॥ १३ ॥
ले दुरबीन चली आगे को ।
राधास्वामी दरस निहारा हो ॥ १४ ॥
दया मेहर उन क्या करूँ बरनन ।
मैं चरनन बलिहारा हो ॥ १५ ॥

॥ शब्द ३ ॥

प्रेम भक्ति गुरु धार हिये में,
आया सेवक प्यारा हो ॥ टेक ॥
उमँग उमँग कर तन मन धन को ।
गुरु चरनन पर वारा हो ॥ १ ॥
गुरु दरशन कर बिगसत मन में ।
रूप हिये में धारा हो ॥ २ ॥
आठ पहर गुरु संग रहावे ।
जग से रहता न्यारा हो ॥ ३ ॥
मन माया को आँख दिखावे ।
गुरु बल सूर करारा हो ॥ ४ ॥

शब्द डोर गह चढ़ता घट में ।
पहुँचा गगन मँझारा हो ॥ ५ ॥
आगे चल सुनी सारँग किंगरी ।
मुरली बीन सितारा हो ॥ ६ ॥
राधास्वामी मेहर से दीन्हा ।
निज पद अगम अपारा हो ॥ ७ ॥

॥ शब्द ४ ॥

जीव उबारन जग में आये ।
राधास्वामी दीनदयाला हो ॥ टेक ॥
दरशन दे हिये प्रीत जगाई ।
सब को किया निहाला हो ॥ १ ॥
सतसँग में निज भेद सुनाया ।
सुरत शब्द मत आला हो ॥ २ ॥
जुगत बताय लगाया घट में ।
बोल सुनाया बाला हो ॥ ३ ॥
मन और सुरत समेटे तिल में ।
खोला घट का ताला हो ॥ ४ ॥

घट में प्रेम बढ़ावत दिन दिन ।
काटा माया जाला हो ॥ ५ ॥
करम धरम सब दूर हटाये ।
सबहि बिकार निकाला हो ॥ ६ ॥
पाँचो दूत रहे मुरझाई ।
हारा काल कराला हो ॥ ७ ॥
निरमल होय चढ़ी सुत घट में ।
झाँका गगन शिवाला हो ॥ ८ ॥
मगन होय सुत धुन रस लेती ।
पीती प्रेम पियाला हो ॥ ९ ॥
सुन में जाय मानसर न्हाई ।
धारा रूप मराला हो ॥ १० ॥
महासुन्न में थक कर बैठा ।
महाकाल मतवाला हो ॥ ११ ॥
भँवरगुफा में धँस गइ सूरत ।
सोहं शब्द सम्हाला हो ॥ १२ ॥
सत्तलोक में चढ़कर पहुँची ।
निरखा पुरुष निराला हो ॥ १३ ॥

अलख अगम गुरु मेहर कराई ।
आगे मारग चाला हो ॥ १४ ॥
मगन हुई निज दरशन पाये ।
राधास्वामी महा किरपाला हो ॥ १५ ॥

॥ शब्द ५ ॥

राधास्वामी दयाल सुनो मेरी बिनती ।
जल्दी दरस दिखावो हो ॥ टेक ॥
तड़प रही मैं बहुत दिनों से ।
अब घट द्वार खुलावो हो ॥ १ ॥
तुम समरथ क्यों देर लगाई ।
जल्दी मेहर करावो हो ॥ २ ॥
मैं अति दीन पड़ी तुम द्वारे ।
तुम बिन कोइ न सहारो हो ॥ ३ ॥
सारी बैस आस में बीती ।
अब तो दया बिचारो हो ॥ ४ ॥
बिन दरशन निज रूप अपारा ।
नहिं मेरा होत उधारो हो ॥ ५ ॥

जब लग सुरत चढ़े नहिँ घट मैं।
मन से नहिँ छुटकारो हो ॥ ६ ॥
चढ़ कर पहुँचूँ दसवें द्वारा।
निरखूँ भँवर उजारो हो ॥ ७ ॥
सत्तपुरुष के चरन परस के।
निज घर जाय सिहारो हो ॥ ८ ॥
परम शांत मैं जाय समाऊँ।
सब से होय नियारो हो ॥ ९ ॥
तब आसा पूरन होय मोरी।
तुम्हरे चरन बलिहारो हो ॥ १० ॥
राधास्वामी प्यारे दया उमगाओ।
कीजे मम उपकारो हो ॥ ११ ॥

बचन १४ प्रेम लहर भाग सातवाँ

॥ शब्द १ ॥

स्वामी प्यारे, क्यों नहिँ दरशन देत ॥टेक॥
प्रथम दया मोपे कीन्ही भारी।
दिया चरनन मैं हेत ॥ १ ॥

अब तक़सीर बनी क्या मोसे।
नेक सुद्ध नहिँ लेत ॥ २ ॥
मैं बलि जाउँ चरन पर तुम्हरे।
डारूँ तन मन रेत ॥ ३ ॥
तुम्हरी दया होय जब न्यारी।
काल करम रहैं खेत ॥ ४ ॥
करूँ पुकार सुनो मेरे प्यारे।
सुरत चढ़ाओ आज पद सेत ॥ ५ ॥
वहिँ मोहिँ दरस देव स्वामी प्यारे।
जहँ राधास्वामी की अचरज नेत ॥६॥

॥ शब्द २ ॥

भक्ति कर लीजिये, जग जीवन थोड़ा ॥टेक॥
चार दिनों का खेल यह। देह तजना ज़रूरी ॥ सतगुरु का सतसंग कर। तज मान ग़रूरी ॥ हिये में आज बसाय ले। तू चरन हज़ूरी ॥ अंतर दृष्टि खुलाय कर। लखना सत नूरी ॥ सतगुरु सँग तू बाँध ले। प्यारी अब के जोड़ा ॥१॥

बंद छुड़ावन आइया। सतगुरु संसारा॥ आज्ञा उनकी मानिये। हिये धर कर प्यारा॥ शब्द की जुगत कमाय कर। कीजे निरवारा॥ नाम बिना सब जीव। बहे चौरासी धारा॥ भाग जगा मोहिँ मिल गये। गुरु बंदी छोड़ा॥ २॥

दया करी गुरु प्रीतमा। मोहिँ संग लगाई॥ घर का भेद सुनाय कर। सुत अधर चढ़ाई॥ घंटा संख सुनाय कर। फिर जोत लखाई॥ वहँ से गगन चढ़ाय कर। धुन गरज सुनाई॥ चंद्र रूप लख काल से। अब नाता तोड़ा॥ ३॥

भँवरगुफा में जाय कर। सुनी मुरली प्यारी। सत्तलोक में पुरुष का। जाय रूप निहारी॥ अलख अगम का रूप लख। सुत चढ़ गइ पारी॥ मेहर दया गुरु पाय कर। हुइ सब से न्यारी॥ राधास्वामी दरशन पाय कर। सुत हो गई पोढ़ा॥ ४॥

॥ शब्द ३ ॥

गगन मैं बाजत आज बधाई ॥ टेक ॥
कुल मालिक राधास्वामी प्यारे ।
संत रूप धर आये ।
जगत मैं भक्ती रीत चलाई ॥ १ ॥
निज घर का स्वामी भेद सुनाया ।
सुरत शब्द मारग समझाया ।
जिन माना तिन चरन लगाई ॥ २ ॥
प्रेम बढ़ा करनी करवाई ।
करनी कर बहु मेहर बढ़ाई ।
काल करम से खूँट छुड़ाई ॥ ३ ॥
चरन सरन दे लिया अपनाई ।
प्रीत प्रतीत जिव हृदे बसाई ।
शब्द संग सुत अधर चढ़ाई ॥ ४ ॥
गगन माहिँ गुरु पद दरसाया ।
सतपुर सतगुरु रूप लखाया ।
राधास्वामी धाम दिया पहुँचाई ॥ ५ ॥

बचन १५ बिनती और प्रार्थना

॥ शब्द १ ॥

हे मेरे प्यारे सतगुरु ।
मोहिं दरशन दीजे ॥ १ ॥
हे मेरे प्यारे सतगुरु ।
मोहिं अपना कीजे ॥ २ ॥
हे मेरे प्यारे सतगुरु ।
मेरा मन हर लीजे ॥ ३ ॥
हे मेरे प्यारे सतगुरु ।
तन छिन छिन छीजे ॥ ४ ॥
हे मेरे प्यारे सतगुरु ।
मेरा कारज जल्दी कीजे ॥ ५ ॥
हे मेरे प्यारे सतगुरु ।
मेरी सुरत शब्द सँग सीजे ॥ ६ ॥
प्यारे राधास्वामी दीनदयाला ।
मेरी आसा पूरन कीजे ॥ ७ ॥

॥ शब्द २ ॥

हे मेरे प्यारे सतगुरु ।
तुम दाता अपर अपारा ॥ १ ॥

हे मेरे प्यारे सतगुरु ।
मोहिँ नाम देव निज सारा ॥ २ ॥
हे मेरे प्यारे सतगुरु ।
मैं अधम नीच नाकारा ॥ ३ ॥
हे मेरे प्यारे सतगुरु ।
किरपा कर लेव उबारा ॥ ४ ॥
हे मेरे प्यारे सतगुरु ।
तुम समरथ दीनदयारा ॥ ५ ॥
हे मेरे प्यारे सतगुरु ।
मोहिँ जग से कीजे न्यारा ॥ ६ ॥
हे मेरे प्यारे सतगुरु ।
दिखलावो गुरु दरबारा ॥ ७ ॥
हे मेरे प्यारे सतगुरु ।
तुम बिन नहिँ और सहारा ॥ ८ ॥
हे मेरे प्यारे सतगुरु ।
अपना कर लेव उबारा ॥ ९ ॥
प्यारे राधास्वामी परम दयाला ।
मुझ दीन का करो गुज़ारा ॥ १० ॥

॥ शब्द ३ ॥

गुरु धरा सीस पर हाथ ।
मन क्यों सोच करे ॥ १ ॥
गुरु रक्षा हर दम संग ।
क्यों नहिं धीर धरे ॥ २ ॥
गुरु राखें राखनहार ।
उनसे काज सरे ॥ ३ ॥
तेरी करें पच्छ कर प्यार ।
बैरी दूर पड़े ॥ ४ ॥
गुरु दाता दीनदयार ।
चरन लग जगत तरे ॥ ५ ॥
उन महिमा अकह अपार ।
बरनन कौन करे ॥ ६ ॥
सोइ चाखे अमी रस सार ।
चरनन सुरत धरे ॥ ७ ॥
घट बाजे अनहद सार ।
सुन सुन अधर चढ़े ॥ ८ ॥

गुरु देवें बिघन हटाय ।
उनसे काल डरे ॥ ९ ॥
माया दल मारें आय ।
मोह मद अगिन जरे ॥ १० ॥
बिन राधास्वामी गुरु समरत्थ ।
को अस दया करे ॥ ११ ॥
वही हैं बड़ भागी जीव ।
जो उन सरन पड़े ॥ १२ ॥
धर हिये में गहिरी प्रीत ।
सँग में आन अड़े ॥ १३ ॥
मेरा जागा अस बड़ भाग ।
जंग जिव अचरज करे ॥ १४ ॥
गुरु कीन्ही मेहर अपार ।
बैरी जल जल मरे ॥ १५ ॥
मेरे मात पिता गुरु देव ।
महिमा कौन करे ॥ १६ ॥
प्यारे राधास्वामी दीनदयाल ।
छिन छिन सार करें ॥ १७ ॥

॥ शब्द ३ ॥

गुरु धरा सीस पर हाथ ।
मन क्यों सोच करे ॥ १ ॥
गुरु रक्षा हर दम संग ।
क्यों नहिं धीर धरे ॥ २ ॥
गुरु राखें राखनहार ।
उनसे काज सरे ॥ ३ ॥
तेरी करें पच्छ कर प्यार ।
बैरी दूर पड़े ॥ ४ ॥
गुरु दाता दीनदयार ।
चरन लग जगत तरे ॥ ५ ॥
उन महिमा अकह अपार ।
बरनन कौन करे ॥ ६ ॥
सोइ चाखे अमी रस सार ।
चरनन सुरत धरे ॥ ७ ॥
घट बाजे अनहद सार ।
सुन सुन अधर चढ़े ॥ ८ ॥

गुरु देवें बिघन हटाय ।
उनसे काल डरे ॥ ९ ॥
माया दल मारें आय ।
मोह मद अगिन जरे ॥ १० ॥
बिन राधास्वामी गुरु समरत्थ ।
को अस दया करे ॥ ११ ॥
वही हैं बड़ भागी जीव ।
जो उन सरन पड़े ॥ १२ ॥
धर हिये में गहिरी प्रीत ।
सँग में आन अड़े ॥ १३ ॥
मेरा जागा अस बड़ भाग ।
जग जिव अचरज करें ॥ १४ ॥
गुरु कीन्ही मेहर अपार ।
बैरी जल जल मरे ॥ १५ ॥
मेरे मात पिता गुरु देव ।
महिमा कौन करे ॥ १६ ॥
प्यारे राधास्वामी दीनदयाल ।
छिन छिन सार करें ॥ १७ ॥

॥ शब्द ४ ॥

बिनती करूँ चरन मैं आज ।
बेग सँवारो मेरा काज ॥ १ ॥
तुम सतगुरु मेरे परम उदार ।
मुझ ग़रीब को लेव सुधार ॥ २ ॥
तन मन मेरा बँधा जगत मैं ।
बीती जात उमर खट पट मैं ॥ ३ ॥
भजन ध्यान कुछ बन नहिँ आवत ।
छिन छिन मन भोगन मैं धावत ॥ ४ ॥
क्योंकर रोकूँ मन को तन मैं ।
न्यारा होय सुनूँ कस धुन मैं ॥ ५ ॥
बिन तुम दया नहीं कुछ होई ।
राधास्वामी करो मेहर अब सोई ॥६॥
मैं अति निरबल चरन अधीना ।
तुम सतगुरु मेरे अति परबीना ॥ ७ ॥
मैं हूँ छिन छिन भूलनहार ।
तुम्हरी सरन गही अब हार ॥ ८ ॥

बख़्शो भूल और चूक हमारी ।
भौसागर से लेव उबारी ॥ ९ ॥
गुन गाऊँ तुम चरन धियाऊँ ।
राधास्वामी सरन समाऊँ ॥ १० ॥

॥ शब्द ५ ॥

सुनो बीनती स्वामी महाराज ।
अपना कर मेरी राखो लाज ॥ १ ॥
मन इंद्री मोहिं अति भरमावत ।
चित चंचल मेरा थिर न रहावत ॥ २ ॥
दया तुम्हार निरख रहा दम दम ।
फिर भी यह मन धावत हर दम ॥ ३ ॥
रोक रोक याहि चरन लगाता ।
चुप नहिँ रहे फिरे मद माता ॥ ४ ॥
अनेक गुनावन रहे उठाई ।
तरह तरह के रंग दिखाई ॥ ५ ॥
कोइ विधि सुरत न लगने पावे ।
धुन रस ले मन नहिँ त्रिप्तावे ॥ ६ ॥

॥ शब्द ४ ॥

बिनती करूँ चरन मैं आज ।
बेग सँवारो मेरा काज ॥ १ ॥
तुम सतगुरू मेरे परम उदार ।
मुझ ग़रीब को लेव सुधार ॥ २ ॥
तन मन मेरा बँधा जगत मैं ।
बीती जात उमर खट पट मैं ॥ ३ ॥
भजन ध्यान कुछ बन नहिँ आवत ।
छिन छिन मन भोगन मैं धावत ॥ ४ ॥
क्योंकर रोकूँ मन को तन मैं ।
न्यारा होय सुनूँ कस धुन मैं ॥ ५ ॥
बिन तुम दया नहीं कुछ होई ।
राधास्वामी करो मेहर अब सोई ॥ ६ ॥
मैं अति निरबल चरन अधीना ।
तुम सतगुरू मेरे अति परबीना ॥ ७ ॥
मैं हूँ छिन छिन भूलनहार ।
तुम्हरी सरन गही अब हार ॥ ८ ॥

॥ शब्द ६ ॥

चरन में बिनती करूँ बनाय।
सुरत मेरी दीजे आज चढ़ाय ॥ १ ॥
होय मन धुन रस में सरशार।
जगत के सबही ख़्याल निकार ॥ २ ॥
काल-और करम मिटाऊँ झार।
गगन चढ़ देखूँ बिमल बहार ॥ ३ ॥
होय वहाँ निरभय करूँ बिलास।
चरन में गुरु के रहकर पास ॥ ४ ॥
सुनूँ फिर चढ़ कर धुन रारंग।
मानसर न्हाऊँ हंसन संग ॥ ५ ॥
बिना तुम मेहर नहीं कुछ होय।
जतन मेरा काम न आवे कोय ॥ ६ ॥
दया बिन कैसे यह पद पाय।
मेहर मो पै पूरी करो बनाय ॥ ७ ॥
जाऊँ फिर वहाँ से महासुन पार।
भँवर का देखूँ सेत उजार ॥ ८ ॥

बहु दिन अस खटपट में बीते ।
काल करम अब तक नहिँ जीते ॥७॥
मैं नहिँ जानूँ मौज तुम्हारी ।
क्यौं नहिँ इनको मार निकारी ॥ ८ ॥
मैं निर्बल क्या लड़ने जोगा ।
दया करो काटो यह रोगा ॥ ९ ॥
निरमल होय मन बैठे घर में ।
सुरत बिहंगम चढ़े अधर में ॥ १० ॥
साँची प्रीत लगे घट धुन में ।
अमृत रस पीवे चढ़ सुन में ॥ ११ ॥
निर्भय होय जगत को त्यागे ।
मान मनी तज घर को भागे ॥ १२ ॥
निस दिन रहूँ आनँद में चूर ।
प्रेम दात दीजे भरपूर ॥ १३ ॥
दृढ़ कर पकड़े चरन तुम्हारे ।
तुम बिन नहिँ कोइ और अधारे ॥१४॥
जल्दी करो देर क्यौं धारी ।
राधास्वामी अब मोहिँ लेव सम्हारी ॥१५॥

॥ शब्द ६ ॥

चरन में बिनती करूँ बनाय।
सुरत मेरी दीजे आज चढ़ाय ॥ १ ॥
होय मन धुन रस में सरशार।
जगत के सबही ख़्याल निकार ॥ २ ॥
काल और करम मिटाऊँ झार।
गगन चढ़ देखूँ बिमल बहार ॥ ३ ॥
होय वहाँ निरभय करूँ बिलास।
चरन में गुरु के रहकर पास ॥ ४ ॥
सुनूँ फिर चढ़ कर धुन ररंग।
मानसर न्हाऊँ हंसन संग ॥ ५ ॥
बिना तुम मेहर नहीं कुछ होय।
जतन मेरा काम न आवे कोय ॥ ६ ॥
दया बिन कैसे यह पद पाय।
मेहर मो पै पूरी करो बनाय ॥ ७ ॥
जाऊँ फिर वहाँ से महासुन पार।
भँवर का देखूँ सेत उजार ॥ ८ ॥

परस फिर सत्तपुरुष चरना ।
अलख और अगम सुरत भरना ॥ ९ ॥
लखूँ फिर धाम अनामी जाय ।
परम गुरु राधास्वामी दरशन पाय ॥१०॥
चरन में बिनती करूँ अनंत ।
मिले मोहिं राधास्वामी प्यारे कंत ॥११॥
सरन गह बैठूँ होय निचिंत ।
दया से राधास्वामी भाग जगंत ॥१२॥

॥ शब्द ७ ॥

चरन में राधास्वामी करूँ पुकार ।
सरन दे लीजे मोहिं उबार ॥ १ ॥
बहुत दिन भटकी भरमन में ।
नेष्टा धारी करमन में ॥ २ ॥
सुमिर रही बहु दिन किरतम नाम ।
भेद बिन सरा न कोई काम ॥ ३ ॥
दया हुइ चरनन में आई ।
भेद निज घट का यहाँ पाई ॥ ४ ॥

प्रीत मेरी सेवा में लागी ।
शब्द धुन सुन सूरत जागी ॥ ५ ॥
परख कर तोड़ जगत की प्रीत ।
करूँ नित सतसँग धर परतीत ॥ ६ ॥
दया ले मन इंद्री रोकूँ ।
शब्द सुन मन सूरत पोखूँ ॥ ७ ॥
टेक राधास्वामी हिरदे धार ।
आस सब जग की देउँ निकार ॥ ८ ॥
भजन कर मगन रहूँ मन में ।
नाम गुरु सुमिरूँ छिन छिन में ॥ ९ ॥
दया कर राधास्वामी परम उदार ।
करें मेरा बेड़ा इक दिन पार ॥ १० ॥

॥ शब्द ८ ॥

राधास्वामी दीनदयाला । मोहिं दरशन दीजे ॥ मेरे प्यारे गुरु दातारा ।
निज किरपा कीजे ॥ १ ॥
मेरे सतगुरु समरथ साईं । क्यों देर लगाई ॥ मैं तरसूँ तड़पूँ निस दिन ।
सुत जल्दी देव चढ़ाई ॥ २ ॥

मैं औगुन हारा भारी। धर छिमा करो उपकारी॥ तुम अपनी ओर निहारी। मैं बालक सरन तुम्हारी॥ ३॥

मेरा काज करो अब बिधि से। तुम राधास्वामी अपर अपारी॥ मैं दीन ग़रीब भिखारी। तुम द्वारे आन पड़ा री॥४॥

अब मेहर हिये उमगाओ। जल्दी निज रूप दिखाओ॥ मेरे घट में प्रेम बढ़ाओ। तब तन मन शांत धराओ॥ ५॥

तुम मात पिता गुरू दाता। मैं नीच विषय मद माता॥ मन चरनन रस रहे राता। नित राधास्वामी महिमा गाता॥६॥

मुझ से कुछ बन नहिँ आई। क्योंकर मेरा काज बनाई॥ तुम राधास्वामी होव सहाई। तब सभी बात बन आई॥७॥

वचन १६ बसंत और होली

अंग पहला वसंत

॥ शब्द १ ॥

आज आई बहार बसंत।
उमँग मन गुरु चरनन लिपटाय॥ १ ॥
दया धार गुरु जग में आये।
भक्ती की फुलवार खिलाय ॥ २ ॥
प्रेम बदरिया बरषा लाई।
नइ नइ धुन घट शब्द सुनाय ॥ ३ ॥
सभी सुहागन खेलन आईं।
गुरु संग अचरज फाग रचाय ॥ ४ ॥
तन मन धन की धूल उड़ावत।
प्रेम प्रीत का रंग घुलाय ॥ ५ ॥
गुरु चरनन पर बारम्बारा।
डार डार रँग हिये हरखाय ॥ ६ ॥
भक्ति दान फगुआ लिया गुरु से।
इक इक अपना काज बनाय ॥ ७ ॥

राधास्वामी दीनदयाल कृपाला ।
सब को लिया निज चरन लगाय ॥ ८ ॥

॥ शब्द २ ॥

चेतो चेतो सखी ऋतु आई बसंत ।
खोजो सतगुरु प्यारे कंत ॥ १ ॥
अब तन मन अरपो चरन संत ।
सुरत शब्द का पाओ पंथ ॥ २ ॥
राग भोग मन से तजंत ।
चरन सरन गुरु दृढ़ करंत ॥ ३ ॥
गुरु मूरत हिये मैं बसंत ।
शब्द डोर ले नभ चढ़ंत ॥ ४ ॥
शब्द शब्द का कर बृतंत ।
पहुँची चढ़ कर देस संत ॥ ५ ॥
सत्तलोक सतगुरु मिलंत ।
बाजन लागीं धुन अनंत ॥ ६ ॥
अलख अगम के पार परंत ।
राधास्वामी धाम मिला बेअंत ॥ ७ ॥

महिमा राधास्वामी कस कहंत ।
राधास्वामी दीन्हा पूरा मंत ॥ ८ ॥

॥ शब्द ३ ॥

ऋतु बसंत आये सतगुरु जग में ।
चलो चरनन पर सीस धरो री ॥ १ ॥
प्रेम प्रीत करो उन चरनन में ।
अपने जीव का काज करो री ॥ २ ॥
काल करम दोउ अति बलवाना ।
बचो इन से गुरु सरन गहो री ॥ ३ ॥
मन इंद्री सँग बहुत ठगाई ।
भूल भरम तज होश करो री ॥ ४ ॥
सतगुरु बचन सुनो धर काना ।
मान मनी तज संग रलो री ॥ ५ ॥
उमँग अंग लेकर गुरु सेवा ।
दीन अधीन होय चरन पड़ो री ॥ ६ ॥
मेहर करैं वे भेद लखावैं ।
तब घट में धुन शब्द सुनो री ॥ ७ ॥

राधास्वामी दयाल परम हितकारी।
जीव काज निज धाम तजो री ॥ ८ ॥
मेहर करी मोहिं चरन लगाया।
अचरज भाग जगाय दियो री ॥ ९ ॥
पियत रहूँ नित धुन रस घट में।
मन सूरत मेरे गगन चढ़ो री ॥ १० ॥
गुरु पद परस चढ़त ऊँचे को।
सत्तलोक सतपुरुष मिलो री ॥ ११ ॥
अलख अगम का दरशन करके।
प्यारे राधास्वामी धाम बसोरी ॥ १२ ॥

॥ शब्द ४ ॥

ऋतु बसंत फूली जग माहीं।
मिल सतगुरु घट खोज करो री ॥१॥
दीन अधीन होय चरनन में।
प्रेम उमँग हिये बीच धरो री ॥ २ ॥
सुरत शब्द मारग दरसावें।
शब्द माहिं अब सुरत भरो री ॥ ३ ॥

दृढ़ परतीत धार हिये अंतर।
दया मेहर ले गगन चढ़ो री ॥ ४ ॥
राधास्वामी दयाल जीव हितकारी।
हित चित से उन सरन पड़ो री ॥ ५ ॥
राधास्वामी नाम सुमिर निस दिन में।
मन इंद्री के भोग तजो री ॥ ६ ॥
काज करें तेरा पूरा छिन में।
भौसागर से आज तरो री ॥ ७ ॥

॥ शब्द ५ ॥

ऋतु बसंत फूली जग माहीं।
मन और सुरत चेत हरखाईं ॥ १ ॥
दया मेहर राधास्वामी की परखी।
कँवल कियारी अंतर निरखी ॥ २ ॥
धुन फुलवार खिली घट घट में।
काल करम रहे थक खटपट में ॥ ३ ॥
मन चख रहा अमी रस प्याला।
मगन हुआ घट खोला ताला ॥ ४ ॥
सुरत चली घर को अब दौड़ी।
नभ पर चढ़ी पकड़ धुन डोरी ॥ ५ ॥

आगे चढ़ गुरु दरशन पाई ।
गरज गरज धुन मेघ सुनाई ॥ ६ ॥
सुन में जा धुन अक्षर पाई ।
मानसरोवर तीरथ न्हाई ॥ ७ ॥
राधास्वामी दयाल मिले मोहिं आई ।
आगे को फिर गैल लखाई ॥ ८ ॥
महाकाल का तोड़ा नाका ।
भँवरगुफा तक सतपुर झाँका ॥ ९ ॥
सत्तपुरुष के दरशन पाये ।
सत्त शब्द धुन बीन सुनाये ॥ १० ॥
अलख अगम के पार अनामी ।
अमी सिंध में जाय समानी ॥ ११ ॥
महिमा राधास्वामी बरनी न जाई ।
दया करी मोहिं अंग लगाई ॥ १२ ॥
चरन कँवल में बासा दीन्हा ।
न्यारा कर अपना कर लीन्हा ॥ १३ ॥
छिन २ आरत करूँ बनाई ।
चरन सरन में दृढ़ कर पाई ॥ १४ ॥

॥ शब्द ६ ॥

निरखो निरखो सखी ऋतु आई बसंत।
खोज करो घर आदि अंत ॥ १ ॥
देखो देखो सखी यह जग लबार।
धोखा दे रहा मन गँवार ॥ २ ॥
खोजो खोजो सखी सतगुरु दयार।
करम भरम सब दें निकार ॥ ३ ॥
पकड़ो पकड़ो सखी तुम उनकी बाँह।
उन बिन रक्षक नहिं जग माहिं ॥४॥
धारो धारो सखी तुम उनकी सरन।
सुरत शब्द ले भौ तरन ॥ ५ ॥
धावो धावो सखी सुन सुन्न की धुन।
छिन में मिट जायँ पाप और पुन्न ॥६॥
चलो चलो सखी सतगुरु की लार।
पहुँचो राधास्वामी पद दयार ॥ ७ ॥

॥ शब्द ७ ॥

आज आया बसंत नवीन।
सखी री खेलो गुरु सँग फाग रचाय ॥१॥

भाँत भाँत के फूल खिलाने ।
नइ नइ डाल डाल लहराय ॥ २ ॥
जहँ तहँ खिल रही नई बहारा ।
पीत रंग रहा चहुँ दिस छाय ॥ ३ ॥
सखियाँ सब जुड़ मिल कर आईं ।
सतगुरु चरनन प्रेम जगाय ॥ ४ ॥
पीत रंग बस्तर पहिनाये ।
चमक दमक सँग साज सजाय ॥ ५ ॥
दरशन कर हिये में हरखाईं ।
अद्भुत शोभा बरनी न जाय ॥ ६ ॥
सतगुरु मुखड़ा छिन छिन निरखत ।
बार बार चरनन बल जाय ॥ ७ ॥
उमँग उमँग गुरु चरनन लागीं ।
हिये में नया नया भाव धराय ॥ ८ ॥
प्रेम भरी सुख आरत गावत ।
तन मन की सब सुध बिसराय ॥ ९ ॥
समा बँधा इस औसर ऐसा ।
हंस हंसनी रहे लुभाय ॥ १० ॥

राधास्वामी दयाल प्रसन्न होयकर।
सब को लीन्हा चरन लगाय ॥ ११ ॥
प्रेम दात दे हरख हरख कर।
इक इक का दिया भाग बढ़ाय ॥ १२ ॥
राधास्वामी महिमा को सके गाई।
वेद कतेब रहे शरमाय ॥ १३ ॥
जोगी ज्ञानी कहन न जानैं।
जोत निरंजन भेद न पाय ॥ १४ ॥
प्यारे राधास्वामी परम दयाला।
हम नीचन को लिया अपनाय ॥ १५ ॥

अंग दूसरा होली

॥ शब्द १ ॥

होली खेलूँगी सतगुरु साथ।
सुरत मन चरन लगाई ॥ १ ॥
करम जाल को जार।
भरम की धूल उड़ाई ॥ २ ॥
गुनन गुलाल उड़ाय।
शब्द का रंग बहाई ॥ ३ ॥

प्रेम नशे में चूर ।
चरन गुरु रहूँ लिपटाई ॥ ४ ॥
सतगुरु बचन पुकार ।
जगत में धूम मचाई ॥ ५ ॥
राधास्वामी महिमा गाय ।
सरन में निस दिन धाई ॥ ६ ॥
राधास्वामी नाम सुनाय ।
काल से जीव बचाई ॥ ७ ॥

॥ शब्द २ ॥

आज मेरे आनँद बजत बधाई,
नइ होली खेलन मन भाई ॥ टेक ॥
ऋतु बसंत आये सतगुरु प्यारे । तन मन धन सब उन पर वारे। या से रीझैं पुरुष बिदेही। जगत बिच धूम मचाई ॥१॥
घट घट प्रेम रंग भरवावैं । अबिर गुलाल घोल घुलवावैं । अटक भटक सबही तुड़वावैं । काल दुष्ट को मार गिरावैं। बोल राधास्वामी की दुहाई ॥२॥

कुम २ बरषा चहुँ दिस होई,
हरषत उमँगत मन सुत दोई ।
सतगुरु पर रँग डारत सोई,
भीँजत बिगसत सज्जन लोई ।
प्रेम रँग धार बहाई ॥ ३ ॥
बिन सतगुरु सब धूल उड़ावें,
करम धरम के धक्के खावें ।
जम के दूत नित अधिक सतावें,
बार बार मुख गारी लावें ।
चौरासी में जाय खपाई ॥ ४ ॥
हमको सतगुरु लिया अपनाई,
करम भरम सब फूँक जलाई ।
दृढ़ परतीत और प्रीत जगाई,
धुर घर का निज भेद लखाई ।
सुरत मन अधर चढ़ाई ॥ ५ ॥
उमँग मेरे हिये में उठत करारी । लखूँ
गुरु दरशन शोभा भारी । मोहनी छवि
पर जाउँ बलहारी । करूँ मैं सेवा इक २
न्यारी । चरन में हित चित से गठियाई ॥६॥

दया मेरे मन में अधिक समाई ।
यही जग जीवन आख सुनाई ॥
बचा चाहो दुक्खन से जो भाई ।
आओ राधास्वामी की सरनाई ।
जतन कोइ और पेश नहिँ जाई ॥ ७ ॥
खेल फिर सतगुरु सँग तू होली ।
सुनो और परखो घट की बोली ।
काल के बिघन डाल सब रोली ।
दया गुरु मारो माया पोली ।
हिये में छिन २ राधास्वामी गाई ॥८॥

॥ शब्द ३ ॥

आज सँग सतगुरु खेलूँगी होरी ।
मेरे हिये बिच उठत हिलोरी ॥ १ ॥
सुरत अबीर मलूँ चरनन पर ।
प्रेम रंग पिचकारी छोड़ी ॥ २ ॥
धुन धधकार शब्द की बरषा ।
गुनन गुलाल उड़ो री ॥ ३ ॥
काम क्रोध अहंकार ईरषा ।
सुख इनका अब जात जलो री ॥ ४ ॥

राधास्वामी महिमा सब मिल गावैं ।
गावत गावत बचन थकोरी ॥ ५ ॥
काल करम दोउ मार बिडारे ।
भाग गई माया घर छोड़ी ॥ ६ ॥
ऐसे समरथ राधास्वामी पाये ।
लाग रहूँ चरनन चित जोड़ी ॥ ७ ॥

॥ शब्द ४ ॥

फागुन की ऋतु आई सखी ।
मिल सतगुरु खेलो होरी ॥ १ ॥
अनहद शब्द सुनो घट अंतर ।
घंटा संख बजो री ॥ २ ॥
झाँझ मृदंग बाँसरी बाजे ।
मधुर मधुर धुन बीन सुनो री ॥ ३ ॥
जगत जाल यह काल बिछाया ।
बिरह प्रेम बल तोड़ चलो री ॥ ४ ॥
मान मनी की धूल उड़ाओ ।
चरनन मैं चित जोड़ रहो री ॥ ५ ॥

ऐसा औसर फिर न मिलेगा ।
हित चित से अब संग करो री ॥ ६ ॥
दृढ़ परतीत और प्रीत सम्हारी ।
जैसे चंद्र चकोरी ॥ ७ ॥
प्रेम रंग सतगुरु बरसावें ।
भींज रहीं सखियाँ सरबोरी ॥ ८ ॥
ऐसी होली खेल सतगुरु सँग ।
राधास्वामी चरनन जाय मिलोरी ॥९॥

॥ शब्द ५ ॥

सखीरी ऐसी होली खेल ।
जा में प्रेम का रंग बहे री ॥ १ ॥
सतगुरु दया फोड़ नभ द्वारा ।
जोत स्वरूप लखेरी ॥ २ ॥
बंक नाल धस गढ़ त्रिकुटी पर ।
मन और सुरत चढ़ें री ॥ ३ ॥
घंटा संख मृदंग कींगरी ।
मुरली बीन बजे री ॥ ४ ॥

कोटि सूर और चंद्र प्रकाशा ।
सतगुरु मुखड़ा जाय लखे री ॥ ५ ॥
काल करम सब दूर निकारे ।
ज़ोर इनका अब कौन सहे री ॥ ६ ॥
राधास्वामी दयाल ऐसी होली खिलावें ।
उन महिमा कौन कहे री ॥ ७ ॥

॥ शब्द ६ ॥

होली खेलन ऋतु आई ।
सखी री क्या भूल रही संसारी ॥ १ ॥
काम क्रोध और मोह नशे में ।
लोभ संग मतवारी ॥ २ ॥
नर देही फिर हाथ न आवे ।
धरमराय करे ख़्वारी ॥ ३ ॥
या ते समझो बूझो अब ही ।
सतगुरु सरन उबारी ॥ ४ ॥
खोज लगाय पड़ो उन चरनन ।
प्रीत प्रतीत सम्हारी ॥ ५ ॥

माया की फिर धूल उड़ाओ ।
देखो घट उजियारी ॥ ६ ॥
सुरत अबीर मलो गुरु चरनन ।
प्रेम का रंग बहारी ॥ ७ ॥
गुनन गुलाल उड़ाय सुनो धुन ।
मिरदँग बीन बजारी ॥ ८ ॥
जगमग जोत सूर चमका री ।
झलक चंद्र और नूर निहारी ॥ ९ ॥
गुरु दयाल काटें जम जाला ।
कर दें तुम छुटकारी ॥ १० ॥
मगन होय जाओ घर अपने ।
राधास्वामी चरन सिहारी ॥ ११ ॥

॥ शब्द ७ ॥

होली के दिन आये सखी ।
उठ खेलो फाग नई ॥ १ ॥
दया धार आये सतगुरु प्यारे ।
प्रेम का रंग बही ॥ २ ॥

भक्ति दान फगुआ दिया सब को ।
प्रीत जगाय दई ॥ ३ ॥
बिरह गुलाल अबीर तड़प का ।
मन पर डाल दई ॥ ४ ॥
उमँग रंग भर भर अब घट मैं ।
गुरु पर छिड़क दई ॥ ५ ॥
आओ सखी अब सोच न कीजे ।
चरनन लिपट रही ॥ ६ ॥
दया दृष्टि अब सतगुरु डारी ।
अंतर भींज रही ॥ ७ ॥
दरशन करत हुई मतवारी ।
सुध बुध बिसर गई ॥ ८ ॥
नैनन की पिचकार छुड़ावत ।
तिल मैं उलट गई ॥ ९ ॥
सहसकँवल चढ़ जोत जगाई ।
संख बजाय रही ॥ १० ॥
लाल गुलाल रूप गुरु देखा ।
त्रिकुटी जाय रही ॥ ११ ॥

चंद्र रूप लख निरखी गूफा ।
जहँ मुरली बाज रही ॥ १२ ॥
सत्तलोक जाय पुरुष रूप लख ।
अचरज कौन कही ॥ १३ ॥
हंसन से मिल खेली होली ।
बीन बजाय रही ॥ १४ ॥
प्रेम रंग की बरषा कीन्ही ।
अमृत धार बही ॥ १५ ॥
अलख अगम से भैंटा कर के ।
राधास्वामी चरन पई ॥ १६ ॥
अचरज रूप निरख हिये दिरगन ।
छिन छिन रीझ रही ॥ १७ ॥
अद्भुत शोभा रूप अनूपा ।
निरखत मगन भई ॥ १८ ॥
महिमा राधास्वामी बरनी न जाई ।
हिया जिया वार रही ॥ १९ ॥
ऐसी होली खेल राधास्वामी से ।
अचल सुहाग लई ॥ २० ॥

॥ शब्द ८ ॥

होली खेल न जाने बावरिया ।
सतगुरु को दोष लगावे ॥ १ ॥
जगत लाज मरजाद में अटकी ।
घूँघट खोल न आवे ॥ २ ॥
प्रेम रंग घट भरन न जाने ।
भरम गुलाल घुलावे ॥ ३ ॥
डगमग भक्ती चाल अनेड़ी ।
जग सँग झोके खावे ॥ ४ ॥
निंद्या धूल से उड़ उड़ भागे ।
सतसँग निकट न आवे ॥ ५ ॥
पाँच दुष्ट का रँग ले साथा ।
नित पिचकार छुड़ावे ॥ ६ ॥
आदर मान भरा मन भीतर ।
दीन अंग नहिँ लावे ॥ ७ ॥
बचन सुने पर चित न समावे ।
छिन छिन काल भुलावे ॥ ८ ॥

पँच इंद्री पिचकारी छोड़ो ।
तन मन चरनन वार धरो री ॥ ६ ॥
निरमल होय चढ़ो ऊँचे को ।
राधास्वामी चरनन लाग रहो री ॥ ७ ॥

॥ शब्द १० ॥

प्रेम रंग बरसावत चहुँ दिस ।
होली खेलन आई सूरत प्यारी ॥ १ ॥
लिपट रही गुरु चरनन हित से ।
भींज रही घट अंतर सारी ॥ २ ॥
गुनन गुलाल उड़ावत मग में ।
पँच इंद्री छोड़ी पिचकारी ॥ ३ ॥
भर भर सुरत अबीर झुकावत ।
गुरु सन्मुख अब कुमकुम मारी ॥ ४ ॥
जगत भोग की धूल उड़ाई ।
लाज कान कुल की तज डारी ॥ ५ ॥
काल करम सिर धौल मार कर ।
माया नटनी की चादर फाड़ी ॥ ६ ॥

मन माया ने जाल बिछाया ।
सब जिव नाच नचावे ॥ ९ ॥
दया करें सतगुरु मन मोड़ें ।
तो घर की राह पावे ॥ १० ॥
प्रीत प्रतीत बढ़ावत दिन दिन ।
राधास्वामी चरन समावे ॥ ११ ॥

॥ शब्द ९ ॥

होली खेलन आये सतगुरु जग में ।
हिल मिल के अब सरन पड़ो री ॥ १ ॥
नर देही तुम दुरलभ पाई ।
जैसे बने तैसे काज करो री ॥ २ ॥
प्रीत प्रतीत धरो चरनन में ।
हित चित से गुरु बचन सुनो री ॥३॥
गुरु का ध्यान धरो हिये अंतर ।
शब्द भेद ले गगन चढ़ो री ॥ ४ ॥
सतगुरु रूप निरख मन माहीं ।
प्रेम गुलाल अब जाय मलो री ॥ ५ ॥

पँच इंद्री पिचकारी छोड़ो।
तन मन चरनन वार धरो री ॥ ६ ॥
निरमल होय चढ़ो ऊँचे को।
राधास्वामी चरनन लाग रहो री ॥ ७ ॥

॥ शब्द १० ॥

प्रेम रंग बरसावत चहुँ दिस।
होली खेलन आई सूरत प्यारी ॥ १ ॥
लिपट रही गुरु चरनन-हित से।
भीँज रही घट अंतर सारी ॥ २ ॥
गुनन गुलाल उड़ावत मग मेँ।
पँच इंद्री छोड़ी पिचकारी ॥ ३ ॥
भर भर सुरत अबीर भुकावत।
गुरु सन्मुख अब कुमकुम मारी ॥ ४ ॥
जगत भोग की धूल उड़ाई।
लाज कान कुल की तज डारी ॥ ५ ॥
काल करम सिर धौल मार कर।
माया नटनी की चादर फाड़ी ॥ ६ ॥

काम क्रोध और लोभ बिकारी ।
मान ईरखा चित से टारी ॥ ७ ॥
प्रेम भरी सखियन को सँग ले ।
तन मन धन सब गुरु पर वारी ॥ ८ ॥
बाचक जोगी ज्ञानी करमी ।
स्वाँग बना मोहे नर नारी ॥ ९ ॥
पंडित भेख शेख रोज़गारी ।
जम दूतन के धक्के खा री ॥ १० ॥
मेरा भाग जगा गुरु किरपा ।
पाय गई निज सरन अधारी ॥ ११ ॥
प्रेम दान दीन्हा निज घर से ।
राधास्वामी चरनन हुई दुलारी ॥ १२ ॥

॥ शब्द ११ ॥

उलट पलट कर खेली होली ।
अनहद धुन घट अन्तर बोली ॥ १ ॥
उमँग अबीर गुलाल प्रेम का ।
गुरु पर डाला भर भर झोली ॥ २ ॥

मन और सुरत चढ़े गगना पर ।
माया ममता घट से डोली ॥ ३ ॥
गुरु दरशन कर हुई मगनाली ।
अब नहिं देत काल झकझोली ॥ ४ ॥
आगे चढ़ पहुँची दस द्वारे ।
सुन्न शहर की धुन लइ तोली ॥ ५ ॥
भँवरगुफा सतलोक अटारी ।
चढ़ के चली अब शब्द खटोली ॥ ६ ॥
अलख अगम के पार चढ़ाई ।
राधास्वामी चरन अब मिले अमोली ॥७॥

॥ शब्द १२ ॥

सुरत रँगीली खेलत होरी ।
प्रेम लगन गुरु चरनन जोड़ी ॥ १ ॥
केसर रंग प्रीत भर घट में ।
बार बार पिचकारी छोड़ी ॥ २ ॥
भींज रहे सतगुरु सतसंगी ।
उमँग वढ़त धुन शोर मचो री ॥ ३ ॥

अबिर गुलाल उड़ावत चहुँ दिस ।
शब्द संग मन नाच नचो री ॥ ४ ॥
गुर दरशन अद्भुत हिये निरखत ।
सुरत हुई मस्तानी बोरी ॥ ५ ॥
अजब बिलास लखा घट माहीं ।
सुफल जन्म मेरा आज भयो री ॥ ६ ॥
माया नार रही शरमाई ।
काल करम बल आज थको री ॥ ७ ॥
आरत कर गुरु प्रेम बढ़ाती ।
चरन सरन गुरु धार रहो री ॥ ८ ॥
ऐसा फाग भाग से पइये ।
जन्म मरन सब दूर भयो री ॥ ९ ॥
धन धन भाग मेरे अब जागे ।
राधास्वामी मोहिं निज दान दियो री ॥१०॥
प्रेम अंग प्यारी सुरत नवेली ।
राधास्वामी प्यारे से आज मिलो री ॥११॥

॥ शब्द १३ ॥

होली खेलत सतगुरु नाल ।
पिरेमी सुरत रँगीली ॥ १ ॥

प्रेम प्रीत की केसर घोली ।
गुरु पै सन्मुख डाल ॥ २ ॥
बरषत रँग भीँजत सुत संगी ।
चढ़त गगन पर हाल ॥ ३ ॥
काल कला सब थकित हुई अब ।
काटा माया जाल ॥ ४ ॥
गुनन गुलाल उड़ावत मग मैँ ।
सुरत अबीर भर थाल ॥ ५ ॥
गुरु बल सुरत छड़ी घर चाली ।
पहुँची हंसन ताल ॥ ६ ॥
परम पुरुष के दरशन पाये ।
सत्तशब्द पाया धन माल ॥ ७ ॥
राधास्वामी चरन सरन दृढ़ धारी ।
मुझ पर हुए हैँ दयाल ॥ ८ ॥
भक्ति दान मोहिँ फगुआ दीन्हा ।
मेटे सब दुख साल ॥ ९ ॥

॥ शब्द १४ ॥

आज मैँ गुरु सँग खेलूँगी होरी ॥टेक॥

अबिर गुलाल उड़ावत चहुँ दिस।
शब्द संग मन नाच नचो री ॥ ४ ॥
गुर दरशन अद्भुत हिये निरखत।
सुरत हुई मस्तानी बौरी ॥ ५ ॥
अजब बिलास लखा घट माहीँ।
सुफल जन्म मेरा आज भयो री॥ ६ ॥
माया नार रही शरमाई।
काल करम बल आज थको री ॥ ७ ॥
आरत कर गुरु प्रेम बढ़ाती।
चरन सरन गुरु धार रहो री ॥ ८ ॥
ऐसा फाग भाग से पइये।
जन्म मरन सब दूर भयो री ॥ ९ ॥
धन धन भाग मेरे अब जागे।
राधास्वामी मोहिँ निज दान दियो री।१०।
प्रेम अंग प्यारी सुरत नवेली।
राधास्वामी प्यारे से आज मिलो री ॥११॥

॥ शब्द १३ ॥

होली खेलत सतगुरु नाल।
पिरेमी सुरत रँगीली ॥ १ ॥

प्रेम प्रीत की केसर घोली ।
गुरू पै सन्मुख डाल ॥ २ ॥
बरषत रँग भीँजत सुत संगी ।
चढ़त गगन पर हाल ॥ ३ ॥
काल कला सब थकित हुई अब ।
काटा माया जाल ॥ ४ ॥
गुनन गुलाल उड़ावत मग मेँ ।
सुरत अबीर भर थाल ॥ ५ ॥
गुरू बल सुरत छड़ी घर चाली ।
पहुँची हंसन ताल ॥ ६ ॥
परम पुरुष के दरशन पाये ।
सत्तशब्द पाया धन माल ॥ ७ ॥
राधास्वामी चरन सरन दृढ़ धारी ।
मुझ पर हुए हैँ दयाल ॥ ८ ॥
भक्ति दान मोहिँ फगुआ दीन्हा ।
मेटे सब दुख साल ॥ ९ ॥

॥ शब्द १४ ॥

आज मैँ गुरू सँग खेलूँगी होरी ॥टेक॥

भाग जगे गुरु सतगुरु पाये ।
मन बिच हरख बढ़ो री ॥ १ ॥
बिरह अनुराग रंग घट भरिया ।
गुरु पर छिड़क रहूँ री ॥ २ ॥
उमँग अबीर गुलाल प्रेम का ।
गुरु चरनन पर आन मलूँ री ॥ ३ ॥
प्रेम दान बिनती कर माँगूँ ।
तन मन धन सब वार धरूँ री ॥ ४ ॥
शब्द रूप प्यारे राधास्वामी का ।
घट में दरस करूँ री ॥ ५ ॥

॥ शब्द १५ ॥

फागुन की ऋतु आई सखी ।
आज गुरु संग फाग रचो री ॥ १ ॥
ऐसा समा मिले नहिं कबहीं ।
मनुआ उमँग रहो री ॥ २ ॥
दृष्टि जोड़ ताको गुरु सूरत ।
अद्भुत रूप लखो री ॥ ३ ॥

सुरत अबीर की भर भर झोली ।
घट घट रंग भरो री ॥ ४ ॥
गुरु सँग खेल आज नइ होली ।
जग बिच धूम मचो री ॥ ५ ॥
ऐसी होली खेलो मेरे भाई ।
करम भरम सब दूर करो री ॥ ६ ॥
राधास्वामी चरन ध्यान धर हिये में ।
जग से आज तरो री ॥ ७ ॥
होय निहाल जाय जग पारा ।
चरनन सुरत धरो री ॥ ८ ॥

॥ शब्द १६ ॥

मैं तो होली खेलन को ठाड़ी ।
स्वामी प्यारे झट पट खोलो किवाड़ी ॥१॥
प्रेम रंग की बरषा कीजे ।
भींजे सुरत हमारी ॥ २ ॥
देर देर बहु देर भई है ।
कहँ लग करूँ पुकारी ॥ ३ ॥

तड़प तड़प जिया तड़प रहा है।
दरशन देव दिखा री ॥ ४ ॥
सुन्दर रूप लखूँ अद्भुत छबि।
होवे घट उजियारी ॥ ५ ॥
ऋतु फागुन अब आय मिली है।
नइ नइ फाग खिलारी ॥ ६ ॥
राधास्वामी परम दयाला।
चरनन लेव मिला री ॥ ७ ॥
बिनती करूँ दोउ कर जोड़ी।
कर लो प्रेम दुलारी ॥ ८ ॥

॥ शब्द १७ ॥

होली खेलत सतगुरु संग।
पिरेमन रंग भरी ॥ १ ॥
अबिर गुलाल उड़ावत चहुँ दिस।
भर भर डालत रंग ॥ २ ॥
पाँच तत्त पिचकारी छोड़ी।
गुन तीनों हुए तंग ॥ ३ ॥

मन इंद्री को नाच नचा कर।
करत काल से जंग ॥ ४ ॥
सतगुरु प्रेम धार हिये अंतर।
गुरु का सीखी ढंग ॥ ५ ॥
मेहर करी गुरु चरन लगाया।
फूल रही अँग अंग ॥ ६ ॥
राधास्वामी महिमा नित हिये जिये से।
गावत उमँग उमंग ॥ ७ ॥

॥ शब्द १८ ॥

सुरत आज खेलत फाग नई ॥ टेक ॥
शब्द रूप हिरदे धर अपने।
गुरु रँग राच रही ॥ १ ॥
धुन की डोर पकड़ घट चढ़ती।
मान ईरषा सकल दही ॥ २ ॥
राधास्वामी बचन लगेँ अति प्यारे।
चरनन लाग रही ॥ ३ ॥
खेलत खेलत गुरु पद पहुँची।
रंग गुलाल बही ॥ ४ ॥

सुन्न शिखर चढ़ भँवरगुफा पर ।
सत्तनाम की मेहर लई ॥ ५ ॥
हंसन साथ मिली अब रँग से ।
अलख अगम के पार गई ॥ ६ ॥
राधास्वामी दयाल दया निज धारी ।
प्रेम का दान दई ॥ ७ ॥

॥ शब्द १९ ॥

सुरत प्यारी खेलन आई फाग ।
धार गुरु चरनन में अनुराग ॥ १ ॥
प्रेम रँग भर भर लइ पिचकार ।
छोड़ती चहुँ दिस उमँग सम्हार ॥ २ ॥
सुरत का लाई अबिर गुलाल ।
चरन गुरु कुमकुम भर भर डाल ॥ ३ ॥
काम और क्रोध उड़ाई धूर ।
करम और भरम किये सब दूर ॥ ४ ॥
गाल दे काल हटाया हाल ।
दया ले काटा माया जाल ॥ ५ ॥

सुरत अब चढ़ती गगन मँझार ।
करत वहँ गुरु से हेत पियार ॥ ६ ॥
मिली सतगुरु से जा सतलोक ।
अलख और अगम का पाया जोग ॥७॥
चरन राधास्वामी कीन्हा प्यार ।
प्रेम का फगुआ लीन्हा सार ॥ ८ ॥

॥ शब्द २० ॥

क्या सोय रही उठ जाग सखी ।
आज गुरु सँग खेलो री होरी ॥ १ ॥
मोह नींद में बहु दिन बीते ।
जागन चौंप धरो री ॥ २ ॥
सरधा भाव अबीर संग ले ।
घट बिच रंग भरो री ॥ ३ ॥
बिरह भाव के बान चला कर ।
मन से आज लड़ो री ॥ ४ ॥
सुरत शब्द मारग ले गुरु से ।
धुन सँग गगन चढ़ो री ॥ ५ ॥

प्रीत प्रतीत बढ़ावत दिन दिन ।
सुन्न मैं सुरत भरो री ॥ ६ ॥
चरन सरन राधास्वामी दृढ़ कर ।
सतपुर जाय बसो री ॥ ७ ॥

॥ शब्द २१ ॥

गुरू सँग खेलन फाग चली ।
खिलत मेरे घट मैं कँवल कली ॥ १ ॥
जोत की लई पिचकार सम्हार ।
शब्द रँग बरषा होत अपार ॥ २ ॥
चाँद और सूरज कुमकुम लाय ।
बिमल घट त्रिकुटी रंग भराय ॥ ३ ॥
सुन्न मैं भरती सुरत अबीर ।
महासुन चढ़ती धर कर धीर ॥ ४ ॥
भँवर चढ़ मुरली बीन बजाय ।
सत्तपुर होली खेली जाय ॥ ५ ॥
आरती गाई हंसन संग ।
धारिया सत्तपुरुष का रंग ॥ ६ ॥

उमँग कर राधास्वामी धाम चली ।
सरन गह राधास्वामी चरन रली ॥ ७॥

॥ शब्द २२ ॥

सखी चल फाग की देख बहार ॥टेक॥
सखियाँ जुड़ मिल खेलन आईं ।
गुरु सँग हिये धर प्यार ॥ १ ॥
अबिर गुलाल उड़त चहुँ दिस सैं ।
कुमकुम भर भर मार ॥ २ ॥
प्रेम रंग की बरषा गहिरी ।
भींज रहे नर नार ॥ ३ ॥
कली कली हिये कँवल खिलानी ।
फूल रही फुलवार ॥ ४ ॥
लिपट लिपट गुरु चरनन हित से ।
तन मन सुद्ध बिसार ॥ ५ ॥
गावत राग रागनी रस से ।
होत शब्द झनकार ॥ ६ ॥
समा बँधा आनँद अति बाढ़ा ।
राधास्वामी फाग खिलाया सार ॥ ७॥

॥ शब्द २३ ॥

खेल ले सतगुरु सँग तू फाग ।
सखी री तेरा भला बना है दाव ॥१॥
ऋतु फागुन भागन से आई ।
छोड़ सोवना तू उठ जाग ॥ २ ॥
इंद्री भोग चुरावत चित को ।
सहज सहज उनको तज भाग ॥ ३ ॥
सुरत अबीर गुलाल शब्द का ।
प्रेम रंग ले गुरु पद लाग ॥ ४ ॥
वहाँ से चल पहुँची दसद्वारे ।
करम भरम सब दीन्हे त्याग ॥ ५ ॥
भँवर गुफा होय पहुँची सतपुर ।
मुरली बीन सुनावत राग ॥ ६ ॥
राधास्वामी चरन परस हिल मिल कर।
गावत मंगल राग ॥ ७ ॥

॥ शब्द २४ ॥

आज गुरु खेलन आये होरी ।
जग जीवन का भाग जगो री ॥ १ ॥

प्रेम घटा अब बरसन लागी ।
धारा रंग बहो री ॥ २ ॥
सुरत अबीर घुमँड रहा चहुँ दिस ।
मनुआँ उमँग रहो री ॥ ३ ॥
घंटा संख मृदंग बाँसरी ।
सारँग बीन बजो री ॥ ४ ॥
हरख हरख सब गिरते चरनन ।
प्रेम भक्ति गुरु दान दियो री ॥ ५ ॥
काल करम का दाव चुकाया ।
खोल दई माया की चोरी ॥ ६ ॥
करम भरम तज जीव सुखारी ।
पकड़ शब्द निज घर को दौड़ी ॥ ७ ॥
अस लीला कहो कौन दिखावे ।
राधास्वामी दाता दया करो री ॥ ८ ॥

॥ शब्द २५ ॥

होली खेले सयानी ।
गुरू के रंग रँगानी ॥ टेक ॥
प्रेम प्रीत का रँग घट भर कर ।
गुरु पर दिया छिड़कानी ॥ १ ॥

दृढ़ बिस्वास धार गुरु चरनन ।
करम और भरम भुलानी ॥ २ ॥
जग ब्योहार लगा सब झूठा ।
सब से हुई अलगानी ॥ ३ ॥
ममत माया और दुबिधा छोड़ी ।
गुरु चरनन लिपटानी ॥ ४ ॥
जगत भोग तज चरन अमीरस ।
पीवत रहत अघानी ॥ ५ ॥
राधास्वामी सतगुरु मिले रँगीले ।
उन सँग फाग खिलानी ॥ ६ ॥

॥ शब्द २६ ॥

सुरत सिरोमन फाग रचाया ।
सब जुड़ मिल आज खेलोरी होरी ॥टेक॥
सखी सहेली घूमत आईं । अबिर
गुलाल रंग भर लाईं । गुरु दरशन को
धूमत धाईं । देख रूप झूमत मुसक्याईं ।
मान मनी की मटकी फोड़ी ॥ १ ॥

सतगुरु परम उदार कृपाला। देख दीनता हुए दयाला। बचन सुनाये अजब रसाला। दया दृष्टि से किया निहाला। अटक भटक सब अब दई तोड़ी ॥२॥
गुरु चरनन में प्रेम बढ़ावत। रूप अनूप हिये में ध्यावत। उमँग उमँग गुरु आरत गावत। शब्द भेद ले जुगत कमावत। चढ़त अधर गह धुन की डोरी ॥ ३ ॥
धूम मची अब धरन गगन में।
राधास्वामी खेलत फाग अधर में।
भींज रहे सब प्रेम रंग में।
सुध बिसरी रच रही धुनन में।
आज अनोखा फाग रचोरी ॥ ४ ॥

॥ शब्द २७ ॥

सोइ तो सुरत पिया की प्यारी।
जो भींज रही गुरु रँग सारी ॥ १ ॥
सतगुरु प्रेम रहे मद माती।
अटल भक्ति का प्रन धारी ॥ २ ॥

जगत भाव तज गुरु चरनन मेँ ।
प्रीत नई नई बिस्तारी ॥ ३ ॥
मगन होय गुरु अज्ञा माने ।
माया मन रहे दोउ हारी ॥ ४ ॥
शब्द भेद दे सुरत चढ़ाई ।
मेहर करी गुरु अति भारी ॥ ५ ॥
घंटा संख लगे घट बजने ।
सुन्न शिखर गई भौ पारी ॥ ६ ॥
मधुर मधुर धुन गुफा सुनाई ।
अमर लोक गइ गुरु लारी ॥ ७ ॥
सत्तपुरुष से फगुआ लीन्हा ।
अलख अगम जा पग धारी ॥ ८ ॥
राधास्वामी दीनदयाला ।
गोद लिया मोहिँ बैठारी ॥ ९ ॥

॥ शब्द २८ ॥

सुरत सिरोमन फाग रचाया ।
जग बिच धूम मची री ॥ १ ॥

बिरह भाव और प्रेम दिवानी।
गुरू के रंग रची री ॥ २ ॥
जग भय भाव लाज तज डारी।
भक्ती नाच नची री ॥ ३ ॥
छल बल कपट छोड़ कर बरते।
खेलत फाग सची री ॥ ४ ॥
प्रीत प्रतीत हिये में धारत।
राधास्वामी चरनन सरन पकी री ॥ ५ ॥
काल करम दोउ रहे झख मारत।
माया निज बल हार थकी री ॥ ६ ॥
राधास्वामी सतगुरु मिले दयाला।
उन चरनन में जाय बसी री ॥ ७ ॥

॥ शब्द २९ ॥

होली खेलत सुरत रँगीली,
गुरू सँग प्रीत बढ़ाई ॥ टेक ॥
सुरत अबीर मलत चरनन पर। प्रेम रंग बरसाई ॥ गुनन गुलाल उड़ावत चहुँ दिस। शब्द सुनत हरखाई ॥
गगन पर करत चढ़ाई ॥ १ ॥

बिरह उमगाय चढ़त ऊँचे को। गुरु पद सुरत लगाई ॥ धुन धधकार सुनत मन सरसा । हिये नया प्रेम जगाई ॥
काल दल रहा मुरझाई ॥ २ ॥
गुरु मूरत निरखत मगनानी। लाल रूप सुत पाई । सुन्न सिखर जाय फाग रचाया । अमृत धार बहाई ॥
भींज रहे गुरु बहिन और गुरु भाई ॥३॥
महासुन्न होय चढ़त गुफा पर। सोहँग मुरली बजाई । सतपुर जाय मिली सतगुरु से । मधुर बीन धुन आई ।
चरन में राधास्वामी जाय समाई ॥४॥

॥ शब्द ३० ॥

आज सखि गुरु सँग खेलो री होरी ।
तेरा सुन्दर ब्योँत बनो री ॥ १ ॥
सतगुरु भेंटे सतसँग मिलिया ।
अचरज भाग जगो री ॥ २ ॥

ऐसा दुरलभ औसर पाया ।
नर देह सुफल करो री ॥ ३ ॥
अब नहिँ चेतो तो फिर कब चेतो ।
फिर नहिँ ऐसा समा मिलो री॥ ४ ॥
जैसे बने तैसे अब ही चेतो ।
गुरु सँग प्रीत धरो री ॥ ५ ॥
प्रेम गुलाल घोल घट अंतर ।
गुरु पर ले छिड़को री ॥ ६ ॥
सुरत अबीर भरो हिये थाला ।
गुरु चरनन पर आन मलो री ॥ ७ ॥
प्रेम भरी सखियाँ सँग लेकर ।
भक्ति रंग बरसत भींजो री ॥ ८ ॥
अस आरत गुरु चरनन कीजे ।
धुन रस ले मन गगन चढ़ो री ॥ ९ ॥
परम गुरू राधास्वामी दयाला ।
उन चरनन मँ सुरत भरो री ॥ १० ॥

॥ शब्द ३१ ॥

सुन री सखी मेरे प्यारे राधास्वामी ।
आज जग जिव उबार करायरहे री॥१॥

चार लोक में बजी है बधाई ।
मिल हंस सभा गुन गाय रहे री ॥२॥
घन गरज गरज बजा दया का नगारा।
काल करम मुरझाय रहे री ॥ ३ ॥
अमृत धार लगी घट झिरने ।
धुन घंटा संख सुनाय रहे री ॥ ४ ॥
धन धन भाग जगा जीवन का ।
जो गुरु दरशन पाय रहे री ॥ ५ ॥
कर सतसंग मिला रस भारी ।
प्रीत प्रतीत बढ़ाय रहे री ॥ ६ ॥
सुरत शब्द का दे उपदेशा ।
घट में सुरत चढ़ाय रहे री ॥ ७ ॥
आरत कर गुरु लीन्ह रिझाई ।
तन मन धन सब वार रहे री ॥ ८ ॥
हुए प्रसन्न राधास्वामी गुरु प्यारे ।
उन सतलोक पठाय रहे री ॥ ९ ॥

॥ शब्द ३२ ॥

सखी री मैं निस दिन रहूँ घबरानी ॥टेक॥

मन इंद्री की चाल निरख कर। बहु बिधि रहूँ पछतानी ॥ भोग बासना छोड़त नाहीं। उन सँग रहे अटकानी ॥ दरद कस कहूँ बखानी ॥ १ ॥

बहु बिधि याहि समझौती दीन्ही। नेक कहन नहिँ मानी ॥ मैं तो हार हार अब बैठी। गुरु बिन कौन बचानी ॥ कहो मेरी कहा बसानी ॥ २ ॥

सुमिरन ध्यान में ठहरे नाहीं। थोथा भजन करानी ॥ बहु बिधि अपना ज़ोर लगाऊँ। छोड़े न भरम कहानी ॥ छीर तज पीवे पानी ॥ ३ ॥

गुरु दयाल की मेहर परखती। तौभी धुन में प्रीत न आनी ॥ घट में चंचल नेक न ठहरे। चिंता में रहे नित्त भुलानी ॥ कहो कस जुगत कमानी ॥ ४ ॥

अब थक कर मैं करूँ बीनती ।
हे गुरु दृष्टि मेहर की आनी ॥
छिमा करो और दया उमगाओ ।
हे राधास्वामी पुरुष सुजानी ॥
प्रेम का देवो दानी ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३३ ॥

प्रेम रंग ले खेलो री गुरु से ।
आज पड़ा तेरा दाव री ॥ १ ॥
गुरु को सब बिधि समरथ जानो ।
लाओ पूरन भावरी ॥ २ ॥
दया करें तुझ पर वे छिन छिन ।
दे दे मन को ताव री ॥ ३ ॥
अस्तुत कर महिमा कर उनकी ।
नित्त बढ़ाओ चाव री ॥ ४ ॥
गुरु से रोस करो मत कबही ।
छिन छिन प्रेम बढ़ाव री ॥ ५ ॥
मौज निहार रज़ा में बरतो ।
मन मत दूर हटाव री ॥ ६ ॥

सुरत जगाय उमँग नई धारी।
राधास्वामी चरन समाव री ॥ ७ ॥

बचन १७ सावन लावनी और बारहमासा

॥ शब्द १ ॥

॥ सावन ॥

सावन मास मेघ घिर आये।
गरज गरज धुन शब्द सुनाये ॥ १ ॥
रिमझिम बरषा होवत भारी।
हिये बिच लागी बिरह कटारी ॥ २ ॥
प्रीतम छाय रहे परदेसा।
बूझत रही नहिँ मिला सँदेसा ॥ ३ ॥
रैन दिवस रहूँ अति घबराती।
कसक कसक मेरी कसके छाती ॥ ४ ॥
कासे कहूँ कोइ दरद न बूझे।
बिन पिया दरस नहीँ कुछ सूझे ॥ ५॥
चमके बीज तड़प उठे भारी।
कस पाऊँ पिया प्रान अधारी ॥ ६ ॥

रोवत बीते दिन और राती ।
दरद उठत हिये में बहु भाँती ॥ ७ ॥
ढूँढ़त ढूँढ़त बन बन डोली ।
तब राधास्वामी की सुन पाई बोली ॥८॥
प्रीतम प्यारे का दिया सँदेसा ।
शब्द पकड़ जाओ उस देसा ॥ ९ ॥
सुरत शब्द मारग दरसाया ।
मन और सुरत अधर चढ़वाया ॥१०॥
कर सतसंग खुले हिये नैना ।
प्रीतम प्यारे के सुने वहीं बैना ॥ ११ ॥
जब पहिचान मेहर से पाई ।
प्रीतम आप गुरू बन आई ॥ १२ ॥
दया करी मोहिं अंग लगाया ।
दुक्ख दरद सब दूर हटाया ॥ १३ ॥
क्या महिमा मैं राधास्वामी गाऊँ ।
तन मन वारूँ बल बल जाऊँ ॥ १४ ॥
भाग जगे गुरू चरन निहारे ।
अब कहूँ धन धन राधास्वामी प्यारे॥१५॥

॥ शब्द २ ॥

॥ दिवाली ॥

दिवाला पूजैं जीव अजान ।
भरमते फिरते चारौं खान ॥ १ ॥
दिवाली संतन घर जागी ।
प्रेम रस मन सूरत पागी ॥ २ ॥
खिला अब चमन नूर हिये मैं ।
बढ़ी अब प्रीत गुरू जिये मैं ॥ ३ ॥
साफ़ मैं कीन्हा मन दरपन ।
किया तन मन धन गुरु अरपन ॥ ४ ॥
लगाई बाज़ी गुरु के संग ।
हार कर तन मन लिया गुरु रंग ॥५॥
बाल जिव सूरत मैं अटके ।
जुगन जुग सहते जम झटके ॥ ६ ॥
खिलौने खेल गये घर भूल ।
पकड़ कर साखा तज दिया मूल ॥ ७ ॥
जुए मैं नर देही हारी ।
देत जम धिरकारी भारी ॥ ८ ॥

अभागी जीव न मानैं बात ।
भरमते नित तम चक्कर साथ ॥ ९ ॥
रैन ज्यों मावस अँधियारी ।
रही कल धारा घट जारी ॥ १० ॥
जगा जिन जीवन धुर भागा ।
लगा गुरु चरनन अनुरागा ॥ ११ ॥
सुरत मन नित घट मैं चढ़ते ।
सरन गुरु छिन छिन दृढ़ करते ॥१२॥
देखते दीपदान घट मैं ।
निरखते जोत रूप पट मैं ॥१३॥
गगन चढ़ देखत उगता सूर ।
सुन्न मैं निरखत चाँदन पूर ॥ १४ ॥
भँवर मैं झलका अद्भुत नूर ।
परे तिस सत्तनाम भरपूर ॥ १५ ॥
लखा फिर अलख अगम घर दूर ।
हुई राधास्वामी चरनन धूर ॥ १६ ॥
करे जहाँ आरत सेवक सूर ।
मेहर गुरु पाया आनँद पूर ॥ १७ ॥

॥ शब्द ३ ॥

लावनी

तड़पत रही बेहाल। दरस बिन
मन नहिँ माने ॥ कासे कहूँ बिथाय।
दरद मेरा कोइ नहिँ जाने ॥ १ ॥
निस दिन हर बार। सोच यहि मोहिँ
सतावत ॥ गुरु से कैसे मिलूँ।
जतन कोइ बन नहिँ आवत ॥ २ ॥
बिन अंतर दीदार। मोर मन शांत न
लावे ॥ जग के भोग बिलास।
नहीँ मोहिँ नेक सुहावे ॥ ३ ॥
छिन छिन घटत शरीर। उमर योँही
बीती जावे ॥ कस पाऊँ दीदार।
सोच यही मन मेँ आवे ॥ ४ ॥
बिन सतगुरु की मेहर। बने नहिँ
कोई काजा ॥ याते करूँ पुकार।
दया का दीजे साजा ॥ ५ ॥

राधास्वामी सुनो पुकार। पाट घट खोल दिखावो ॥ दरशन देकर आज। हिये की तपन बुझाओ ॥ ६ ॥

॥ शब्द ४ ॥

लावनी

बिन सतगुरु की भक्ति। जन्म बिरथा नर नारी। गुरु ज्ञान बिना संसार। अँधेरा भारी ॥ टेक ॥
क्या जन्मे जग में आय। शब्द का खोज न कीन्हा ॥ अटके देवी देव। संत का मरम न चीन्हा ॥ दुख सुख भोगें सदा। करम का यह फल लीन्हा॥ भोगन में रहे लिपटाय। विषय रस नित ही पीना ॥ जन्ममरन नहिँ छुटे। करम का चक्कर भारी ॥ बिन सतगुरु की भक्ति। जन्म बिरथा नर नारी ॥१॥
वे बड़ भागी जीव। मिले जिन सतगुरु प्यारे। कर उनका सतसंग।

चरन उन सिर पर धारे ॥ सार बचन उर धार । हुए करमन से न्यारे ॥ सोमत लीन्हा चीन्ह । भरम तज दीन्हे सारे ॥ बिन गुरू कौन सुनाय । जुगत यह सब से न्यारी ॥ बिन सतगुरू की भक्ति । जन्म बिरथा नर नारी ॥ २ ॥ प्रीत बढ़त गुरू चरन । दिनों दिन आनँद भारा ॥ मेहर से दिया गुरू भेद । शब्द का अगम अपारा ॥ ध्यान धरत गुरू रूप । हुआ घट मैं उजियारा ॥ निस दिन सुरत लगाय । सुनत हनहद झनकारा ॥ बिन गुरू कैसे लगे । सुरत की घट मैं तारी ॥ बिन सतगुरू की भक्ति । जन्म बिरथा नर नारी ॥ ३ ॥ तिल का द्वारा फोड़ । लखा घट जोत उजारा ॥ सुन धुन घंटा शंख । गगन मैं बजा नगारा ॥ गुरू का दरशन पाय । हुआ तन मन से न्यारा ॥ करम जाल कट गया । जूझ कर काल भी हारा ॥

बिन सतगुरु की सरन। नहीं अस होय उबारी ॥ बिन सतगुरु की भक्ति। जन्म बिरथा नर नारी ॥ ४ ॥

सुन धुन ऊपर चढ़ी। करी हंसन सँग यारी ॥ महासुन्न के पार। सुनी मुरली धुन न्यारी ॥ सतपुर पहुँची धाय। लगी बीना धुन प्यारी ॥

लख अलख अगम का रूप। हुई सूरत सुखियारी ॥ राधास्वामी चरनन मिली। हुआ आनँद अति भारी ॥ बिन सतगुरु की भक्ति। जन्म बिरथा नर नारी ॥५॥

॥ शब्द ५ ॥

॥ बारहमासा ॥

आया मास असाढ़। बिरह के बादल घट छाये ॥ नैनन झड़ता नीर। मेघ ज्यों रिमझिम बरखाये ॥ अन्न और पानी नहिँ भावे ॥ हर दम पिया की याद। बिकल चित चहुँ दिस को धावे ॥

खटक दरशन की हिये साले ॥
बिन प्रीतम दीदार ।
नहीं मन कोइ विधि कर माने ॥ १ ॥
लागा सावन मास । घुमँड घन चहुँदिस रहा बरखाय ॥ सुन सुन पपिहा बोल । बिरहनी रही जिये मैं घबराय ।
तपन हिये मैं उठती भारी । ढूँढ़त रही पिया धाम । खोज कर बैठी थक हारी ॥ भेख और पंडित जग भरमान । निज घर सुद्ध न लाय । रहे सब माया सँग अटकान ॥ २ ॥
तीजा भादौं मास । बिरह की दौं लागी भारी ॥ देखत अस अस हाल । पिया आये संत रूप धारी ॥ सहज मैं मोहिँ दरशन दीन्हा । घर का भेद बताय । दया कर मोहिँ अपना कीन्हा॥ शब्द की घट मैं राह लखाय ॥
सतगुरु चरन अधार ।
सुरत मन धुन सँग देत चढ़ाय ॥ ३ ॥

आया मास कुआर । सुरत गुरु चरनन
मैं लागी ॥ दिन दिन सेवा करत ।
प्रीत हिये अंतर मैं जागी ॥
रूप गुरु लागे अति प्यारा । सुनती
चित से बचन । अमी की ज्यों बरसे
धारा । हिये के मैल भरम निकसे ।
मगन हुई मन माहिँ ।
फूल की कलियाँ ज्यों बिगसे ॥ ४ ॥
कातिक काया ताक । सुरत मन घर
की सुध धारी ॥ गुरु स्वरूप धर ध्यान।
शब्द धुन सुनती झनकारी । निरख
घट अंतर उजियारी । अचरज लीला
देख । होत अब तन मन सुखियारी ॥
गुरू की बढ़ती नित परतीत ।
छिन छिन दया निहार ।
उमँगती नइ नइ भक्ती रीत ॥ ५ ॥
अघहन अघ सब कटे ।
सुरत मन निरमल होय आये ॥

मेहर करी गुरु देव। तोड़ तिल नभ ऊपर धाये॥ सुनी वहँ घंटा संख पुकार। सहसकँवल के माहिँ। निरख रही निरमल जोत उजार॥ हिये से गुरु महिमा गाती। निरखत दया अपार। चरन पर नित बल बल जाती॥ ६॥ माया जाड़ा लाग। पूस में मुरझाया काला॥ सुन धुन गगना पूर। सुरत मन झट चढ़ गये बाला॥ मेघ जहँ गरजत घोरम्घोर। बाजत धुन मिरदंग॥ काल दल धर भागा घर छोड़। सुरत गुरु दरशन कर हरखाय॥ छूटे करम कलेश। दया गुरु छिन २ रही गुन गाय॥७॥ माघ महीना लाग। खिलत रही चहुँ दिस फुलवारी॥ वेनी तीर चढ़ाय। सुरत गई तिरलोकी पारी। खेल रही हंसन सँग कर प्यार॥ मान सरोवर न्हाय। सुनत रही किँगरी सारँग सार॥

सिखर चढ़ गई महासुन पार ॥
सिंघ नाग को टार ।
भँवर गढ़ पहुँची सतगुरु लार ॥ ८ ॥
फागुन फाग रचाय । पुरुष सँग खेलत
सुत होरी । मुरली बीन बजाय ॥
काल से कुल नाता तोड़ी । मची सतपुर
में अचरज धूम ॥ जुड़ मिल आये
हंस । हरख कर आरत गावें घूम ॥
प्रेम रँग भींज रहे सब कोय ।
अचरज शोभा पुरुष निहारत ॥
चरनन सुरत समोय ॥ ९ ॥
चैत महीना चेत । अधर की सुध ले
सुत चाली । पुरुप दई दुरबीन ॥
अलख पुर पहुँची दर हाली । मगन
हुई दरस अलख पुर्ष पाय ॥
अरबन रबि उजियार । पुरुष के इक
इक रोम लजाय ॥ ख़बर ले ऊपर को
धाई । अगम पुरुष दरबार ।

निरख छबि अद्भुत हरखाई ॥ १० ॥
आया मास बैसाख । चित्त में बाढ़ा
अनुरागा ॥ अगम लोक के पार ।
ध्यान राधास्वामी चरनन लागा ॥
सुरत चली धीरे से पग धार ।
निरखा अजब प्रकाश ॥ द्वार पर रबि
शशि नहीं शुमार । लखा जाय हैरत
रूप अनाम ॥ अकह अपार अनंत ।
परम गुरु संतन का निज धाम ॥ ११ ॥
सब से जेठा धाम । आदि में वहीं से
सुत आई ॥ काल जाल की फाँस ।
फँसी तन मन सँग दुख पाई ॥ मिलें
कोई सतगुरु परम उदार । कर उनका
सतसंग प्रेम से ॥ तब होवे निरवार ।
दीन दिल चरन सरन धारे ॥ सुरत शब्द
की राह । अधर घर चढ़ जावे पारे ॥१२॥

बारह मास पुकार । संत की निज महिमा गाई ॥ सूरत शब्द लगाय । मिलन का रस्ता बतलाई ॥ भाग बढ़ अपना क्या गाऊँ । मिल गये राधास्वामी दयाल ॥ दई मोहिँ निज चरनन ठाऊँ । जिऊँ मैं राधास्वामी आधारे ॥ चरनन सुरत लगाय । गाऊँ मैं धन धन स्वामी प्यारे ॥ १३ ॥

बचन १८ मिश्रित अंग

॥ शब्द १ ॥

क्या भूल रही जग माहिँ ।
घर को जाना है ॥ १ ॥
यह देश तुम्हारा नाहिँ ।
काल का थाना है ॥ २ ॥
सँग त्यागो पंडित भेष ।
भरम भुलाना है ॥ ३ ॥
जो घट का देवे भेद ।
वही गुरु स्याना है ॥ ४ ॥

सुत शब्द का भेद बताय।
घर पहुँचाना है ॥ ५ ॥
तू कर गुरु चरनन प्रीत।
रूप उन ध्याना है ॥ ६ ॥
सुन घट में धुन झनकार।
शब्द निशाना है ॥ ७ ॥
धुन डोरी गह मज़बूत।
सुरत चढ़ाना है ॥ ८ ॥
सुन घंटा संख पुकार।
मृदंग बजाना है ॥ ९ ॥
सुन किंगरी सारँग सार।
भँवर धुन गाना है ॥ १० ॥
घर अमर लोक पुर्ष ध्यान।
दरशन पाना है ॥ ११ ॥
लख अलख पुरुष पद पार।
अगम ठिकाना है ॥ १२ ॥
राधास्वामी धाम निहार।
दरस दिवाना है ॥ १३ ॥

गत पूरी पाई आज ।
चरन समाना है ॥ १४ ॥

॥ शब्द २ ॥

ऐसी गहरी पिरेमन नार ।
गुरू को लीन्ह रिझाई ॥ १ ॥
सेवा करत प्रेम से निस दिन ।
तन मन दीन्ह चढ़ाई ॥ २ ॥
गुरु दरशन बिन कल न पड़त है ।
छिन छिन मन अकुलाई ॥ ३ ॥
जब गुरु दरशन करत मगन होय ।
फूली तन न समाई ॥ ४ ॥
आरत कर कर प्रेम बढ़ावत ।
गुरु छबि पर बल जाई ॥ ५ ॥
सुरत लगाय शब्द सँग धावत ।
नभ तज गगन चढ़ाई ॥ ६ ॥
सुन्न सिखर चढ़ भँवरगुफा लख ।
अमर लोक धस जाई ॥ ७ ॥
अलख अगम से मेला कर के ।
राधास्वामी चरन समाई ॥ ८ ॥

॥ शब्द ३ ॥

मनुआ हठीला कहन न माने ।
भोगन में रस लेत ॥ १ ॥
गली गली में भरमत डोले ।
करे न गुरु सँग हेत ॥ २ ॥
सतगुरु दाता भेद बतावें ।
सुरत शब्द रस देत ॥ ३ ॥
यह मूरख भरमन में अटका ।
निस दिन रहे अचेत ॥ ४ ॥
माया सँग नित रहत भुलाना ।
कस पावे पद सेत ॥ ५ ॥
कुटँब जगत की प्रीत न छोड़े ।
मर मर होय पिरेत ॥ ६ ॥
राधास्वामी जब निज दया बिचारें ।
तब छूटे जम खेत ॥ ७ ॥

॥ शब्द ४ ॥

अमी की बरखा हुइ भारी ।
भींज रही अंतर स्रुत प्यारी ॥ १ ॥

सजी जहँ तहँ कँवलन क्यारी ।
शब्द गुल फूली फुलवारी ॥ २ ॥
बासना त्यागी संसारी ।
मगन होय चढ़त अधर प्यारी ॥ ३ ॥
गगन गुरु दरशन कीना री ।
हुआ मन चरन अधीना री ॥ ४ ॥
सुन्न चढ़ निरखी उजियारी ।
मिली हंसन सँग कर यारी ॥ ५ ॥
भँवर धुन लाग रही तारी ।
मिला फिर सत्त शब्द सारी ॥ ६ ॥
दया राधास्वामी की भारी ।
सरन दे चरन लगाया री ॥ ७ ॥

॥ शब्द ५ ॥

सरन गुरु मोहिँ मिला भेवा ।
उमँग कर करती गुरु सेवा ॥ १ ॥
नित्त मैं सतसँग करूँ बनाय ।
चरन गुरु राखूँ हिये बिसाय ॥ २ ॥

सुमिरता रहुँ मैं नित गुरु नाम।
चरन गुरु ध्याय रहूँ निह काम॥ ३ ॥
चरन मैं प्रीत बढ़ाय रहूँ।
नित्त नइ उमँग जगाय रहूँ ॥ ४ ॥
धार गुरु चरनन मैं विस्वास।
जगत की त्यागूँ सब ही आस ॥ ५ ॥
भेद गुरु दीन्हा मोहिँ बताय।
शब्द मैं राखूँ सुरत लगाय ॥ ६ ॥
मेहर गुरु जोत रूप झाँकूँ।
गगन चढ़ गुरु मूरत ताकूँ ॥ ७ ॥
दसम दर झाँकूँ पाट खुलाय।
महासुन चढ़ूँ गुरू सँग धाय ॥ ८ ॥
गुफा धुन सुनी बाँसरी सार।
अमरपुर दरशन पुरुष निहार ॥ ९ ॥
अलख और अगम के पार ठिकान।
धरूँ राधास्वामी चरनन ध्यान ॥१०॥
गाऊँ मैं आरत प्रेम भरी।
चरन राधास्वामी पकड़ धरी ॥ ११ ॥

उमँग कर राधास्वामी गुन गाऊँ।
मेहर गुरू परशादी पाऊँ ॥ १२ ॥

॥ शब्द ६ ॥

चलो री सखी सुनो अगम सँदेसा।
छोड़ देव अब जगत अँदेसा ॥ १ ॥
जग बिच नित दुख सुख सहना री।
जनम मरन से नहिँ बचना री ॥ २ ॥
जग जीवन की प्रीत न साँची।
चाल ढाल उन सब है काँची ॥ ३ ॥
मन मग़रूर जगत में फंदे।
धन और नामवरी के बंदे ॥ ४ ॥
परमारथ की सार न जानैं।
मान मनी घट माहिँ बिराजे ॥ ५ ॥
उनसे प्रीत करत दुख पावे।
गुरू चरनन में चित्त न आवे ॥ ६ ॥
जो तुम चाहो अपन उधारा।
तज उन संग गहो गुरू द्वारा ॥ ७ ॥

भाग तुम्हारा नित नित जागे ।
काम किरोध मोह मद भागे ॥ ८ ॥
परमारथ के बचन सम्हारो ।
मन से जग का भाव निकारो ॥ ९ ॥
करो प्रतीत प्रीत चरनन में ।
राधास्वामी नाम पुकारो छिन में ॥१०॥
राधास्वामी रूप अनूप अपारा ।
चित्त बसाओ हिये धर प्यारा ॥ ११ ॥
छिन छिन झाँक रहो हिये अंतर ।
राधास्वामी नाम सुनो गुरु मंतर ॥१२॥
सुनो प्रेम से सतगुरु बानी ।
दया मेहर की परख निशानी ॥ १३ ॥
गुरु दयाल नित दया बिचारें ।
छिन छिन मन को आप सम्हारें ॥१४॥
जगत भोग में रहे मलीना ।
माया का रहे सदा अधीना ॥ १५ ॥
सतसँग जल से साफ़ करावें ।
प्रेम दात दे चरन लगावें ॥ १६ ॥

बिरह बिना यह काज न होई ।
मेहनत करे फल पावे सोई ॥१७॥
या ते सतसँग सतगुरु धारो ।
बचन सुनो हिये माहिँ बिचारो ॥१८॥
दिन दिन चरनन प्रीत बढ़ावो ।
करम भरम सब दूर हटाओ ॥ १९ ॥
मोह जगत तज चित को जोड़ो ।
मन और सुरत शब्द सँग मोड़ो ॥२०॥
ऐसे कोइ दिन करो कमाई ।
जग दुख सुख सब जाय नसाई ॥२१॥
सुमिरन ध्यान भजन रस पाई ।
भाग आपना लेव सराही ॥ २२ ॥
चित से यह उपदेश सम्हारो ।
राधास्वामी आरत नित प्रति धारो ॥२३॥
गुन गाओ तुम राधास्वामी निस दिन ।
सरन सम्हार गिरो उन चरनन ॥ २४॥
राधास्वामी सब बिध करिहैं काज ।
सरन पड़े की राखेँ लाज ॥ २५ ॥

॥ शब्द ७ ॥

भूल भरम में जग अटकाना ।
दूर दूर घर से भटकाना ॥ १ ॥
जल पषान पूजन ठहराया ।
कोइ कोइ जिव विद्या भरमाया ॥ २ ॥
निज घर का कोइ खोज न करता ।
जीव काज का सोच न धरता ॥ ३ ॥
निज घर भेद बतावें संता ।
पीव मिलन का लखावें पंथा ॥ ४ ॥
उनका बचन न कोई माने ।
काल जाल में रहे भुलाने ॥ ५ ॥
मेरा जागा भाग सुहावन ।
संत चरन परतीत दिलावन ॥ ६ ॥
अचरज बचन सुने जब काना ।
उमँग बढी और प्रीत समाना ॥ ७ ॥
प्रीत सहित करता सतसंगा ।
धारा हिये में सतगुरु रंगा ॥ ८ ॥

सुरत शब्द का मारग साँचा ।
और रीत परमारथ काँचा ॥ ९ ॥
धर बिस्वास लिया उपदेसा ।
संतन का अति ऊँचा देसा ॥ १० ॥
ध्यान धरत सुत मन सिमटाओ ।
सतगुरु शब्द अधर घर धाओ ॥११॥
यह संतन की जुगत अमोला ।
दीन चित्त कोइ बिरले तोला ॥ १२ ॥
मथ मथ शब्द लखे परकासा ।
घट में पावे अगम बिलासा ॥ १३ ॥
मैं अति दीन पड़ा गुरु चरना ।
प्रेम सहित धारी हिये सरना ॥ १४ ॥
मेहर हुई निज भाग जगाई ।
नित्त करूँ गुरु आरत आई ॥ १५ ॥
राधास्वामी नाम जपूँ निस बास ।
पाऊँ राधास्वामी चरन निवास ॥१६॥

॥ शब्द ८ ॥

देख जग का व्योहार असार ।
करत रहा मन में नित्त बिचार ॥ १ ॥

कौन घर से यह जिव आया ।
कौन याहि जग में भरमाया ॥ २ ॥
छोड़ जग फिर कहाँ जावेगा ।
करम का फल कहाँ पावेगा ॥ ३ ॥
कौन है प्रेरक घट घट में ।
रहा छिप दीखे नहिँ पट में ॥ ४ ॥
कौन बिध होय मालिक राज़ी ।
कौन विधि मन इन्द्री साधी ॥ ५ ॥
खोज मैं कीन्हा बहु भाँती ।
न आई मन को कहिँ शांती ॥ ६ ॥
भरम में फस रहे पंडित भेष ।
बाँध रहे सब मिल पिछली टेक ॥७॥
कोइ कोइ विद्या में भरमान ।
करत पुरषारथ आपा ठान ॥ ८ ॥
न जानें को है निज करतार ।
रूप अपने का करत बिचार ॥ ९ ॥
खोज उसका भी कुछ नहिँ कीन्ह ।
धारना पिंड रिदे में कीन्ह ॥ १० ॥

रहे अस मन आकाश समाय।
पता निज घर का कोइ नहिँ पाय ॥११॥
हुआ मन मेरा अधिक उदास।
न आया उन बचनन बिस्वास ॥ १२ ॥
भाग से प्रेमी जन मिले आय।
पता गुरु संगत दीन्ह बताय ॥ १३ ॥
उमँग कर सतसँग मैं आया।
भेद निज घर का वहाँ पाया ॥ १४ ॥
सुरत और शब्द जोग की रीत।
लखी और मन मैं भई परतीत ॥ १५॥
प्रेम सँग करता नित अभ्यास।
देखता घट मैं परम बिलास ॥ १६ ॥
सुरत सतपुर से यहँ आई।
काल ने जग मैं भरमाई ॥ १७ ॥
शब्द की डोरी गह कर हाथ।
उलट घर जावे सतगुरु साथ ॥ १८ ॥
होयकर जन्म मरन से न्यार।
अमर घर पावे सुक्ख अपार ॥ १९ ॥

चरन में गुरु के धर परतीत ।
बढ़ावे छिन छिन घट में प्रीत ॥ २० ॥
नाम राधास्वामी हिरदे धार ।
कमावे सुरत शब्द की कार ॥ २१ ॥
कोई दिन अस करनी बन आय ।
मगन होय सुरत चरन रस पाय ॥२२॥
चरन में बिनय करूँ हर बार ।
लेव मन सूरत मोर सुधार ॥ २३ ॥
दूत सँग भरमत दिन और रात ।
उठावत नित नित नये उतपात ॥ २४॥
दया की दृष्टी मो पर डाल ।
काट दो मन माया का जाल ॥ २५ ॥
हुआ मेरे मन में निश्चय आज ।
करें मेरा राधस्वामी पूरन काज॥ २६॥
जगाया राधास्वामी मेरा भाग ।
दिया मोहिँ चरन सरन अनुराग॥२७॥
उमँग कर आरत उन गाऊँ ।
चरन राधास्वामी नित ध्याऊँ ॥ २८ ॥

॥ शब्द ९ ॥

सिंध से आई सूरत नार ।
पिंड में आन फँसी नौ द्वार ॥ १ ॥
भोग इंद्रियन सँग करत बिलास ।
जगत में कीन्हा सत बिस्वास ॥ २ ॥
दुक्ख सुख भोगत मन के माहिँ ।
अहँग बुध धारी तन के माहिँ ॥ ३ ॥
करम और धरम रही भरमाय ।
गुनन सँग निस दिन चक्कर खाय ॥४॥
भूल गइ यहँ आय निज घर बार ।
न जाने को है सत करतार ॥ ५ ॥
पूजते किरतम देव अनित्त ।
भरमते जग बिच धर कर चित्त ॥ ६ ॥
भेष और पंडित आप भुलाय ।
दिया सब जीवन को भरमाय ॥ ७ ॥
संत सतगुरू बिन नहीं उबार ।
दयाल घर वही पहुँचावनहार ॥ ८ ॥

भाग बड़ हम सब का जागा।
सूत राधास्वामी चरनन लागा ॥ ९ ॥
जुड़ा राधास्वामी संगत से नात।
बचन सुन मन बुध पाई शांत ॥ १० ॥
संत मत महिमा जान पड़ी।
सुरत गुरु चरनन आन धरी ॥ ११ ॥
शब्द का लिया उपदेश सम्हार।
सुरत मन झाँकत मोक्ष दुआर ॥ १२ ॥
दया राधास्वामी लेकर संग।
करम और भरम किये सब भंग ॥१३॥
बरत और तीरथ दिये उड़ाय।
मोह जग मन से दिया हटाय ॥ १४ ॥
प्रीत गुरु चरनन नित्त बढ़ाय।
सुरत मन घट में अधर चढ़ाय ॥ १५॥
सहसदल देखा जोत उजार।
गगन चढ़ निरखा सूर अकार ॥ १६ ॥
सुन्न चढ़ लखी चाँदनी सार।
भँवर में सेत सूर उजियार ॥ १७ ॥

अमरपुर कोटन सूर उजास ।
पाइया सतगुरु चरन निवास ॥ १८ ॥
अलख और अगम का देख बिलास ।
अनामी धाम लखा परकाश ॥ १९ ॥
अजब गत राधास्वामी निरख निहार ।
मिला अब राधास्वामी सरन अधार ॥२०॥
आरती करती उमँग जगाय ।
चरन राधास्वामी हिये बसाय ॥ २१ ॥

॥ शब्द १० ॥

उमर सारी बीत गई जग मैं ।
भरम मेरे धस रहे रग रग मैं ॥ १ ॥
ज्ञान मत धार रहा कोइ काल ।
शांति नहिँ पाई रहा बेहाल ॥ २ ॥
भाग से गुरु भक्त मिलिया आय ।
संत मत भेद दिया दरसाय ॥ ३ ॥
समझ मैं आई सत मत रीत ।
चरन गुरु धारी हिये परतील ॥ ४ ॥

उमँग कर दरशन को धाया ।
देख सतसंगत हरखाया ॥ ५ ॥
अजब गत राधास्वामी मत जानी ।
शब्द की महिमा मन मानी ॥ ६ ॥
करम और भरम किये सब दूर ।
जगत के सब मत देखे कूड़ ॥ ७ ॥
शब्द बिन सब जग रहा अंधा ।
संत बिन को काटे फंदा ॥ ८ ॥
भाग मोहिं निरबल का जागा ।
चरन में गुरु के मन लागा ॥ ९ ॥
सुरत और शब्द जुगत धारी ।
पिरेमी जन सँग की यारी ॥ १० ॥
हुआ मेरे मन अस बिस्वासा ।
करें गुरु पूरन मम आसा ॥ ११ ॥
रहूँ नित गुरु चरनन दासा ।
चरन में राधास्वामी पाउँ बासा ॥१२॥

॥ शब्द ११ ॥

प्रेम घटा घट छाय रही ॥ टेक ॥

धुन झनकार शब्द की धारा।
अमृत रस बरसाय रही ॥ १ ॥
भींज रही सुत नार रँगीली।
रसक रसक गुन गाय रही ॥ २ ॥
प्रिय राधास्वामी चरन धर हिये मैं।
उमँग उमँग लिपटाय रही ॥ ३ ॥
अधर चढ़त सुन धुन सुत प्यारी।
सुन्न सरोवर न्हाय रही ॥ ४ ॥
हंसन संग नवीन बिलासा।
निरख निरख मगनाय रही ॥ ५ ॥
सुनत अधर मैं मधुर धुन मुरली।
भँवरगुफ़ा पर छाय रही ॥ ६ ॥
सत्तपुरुष का दरशन करके।
प्रेम नवीन जगाय रही ॥ ७ ॥
अलख अगम का दरस निहारत।
अचरज भाग सराह रही ॥ ८ ॥
राधास्वामी चरन सिहारत।
हरख हरख मुसकाय रही ॥ ९ ॥

॥ शब्द १२ ॥

मेरा जिया ना माने सजनी ।
जाऊँगी गुरु दरबार ॥ १ ॥
सेवा करूँ बचन उर धारूँ ।
नित्त बढ़ाऊँ प्यार ॥ २ ॥
गुरु छबि देख मगन हिये होती ।
मैं तो छिन छिन जाउँ बलिहार॥ ३ ॥
चरन सरन प्रीतम दृढ़ करती ।
वोही हैं सत करतार ॥ ४ ॥
सुरत शब्द का जोग कमाऊँ ।
भौसागर उतरूँ पार ॥ ५ ॥
प्रीत प्रतीत बढ़ी अब हिये में ।
काल करम रहे हार ॥ ६ ॥
जग जीवन को आख सुनाऊँ ।
मेरे गुरु का करो दीदार ॥ ७ ॥
तीरथ मूरत ब्रत आचारा ।
त्यागो भोग बिकार ॥ ८ ॥

प्रीत प्रतीत धरो चरनन मैं।
जो चाहो उद्धार ॥ ९ ॥
राधास्वामी नाम पुकारो।
छोड़ो जगत लबार ॥ १० ॥
आस भरोस धरो उन चरनन।
घट मैं देख बहार ॥ ११ ॥

॥ शब्द १३ ॥

मनुआँ सिपाही चरनन लागा।
घट परतीत पकाय ॥ १ ॥
नाम तेग़ धारत कर अपने।
काल का सीस कटाय ॥ २ ॥
परम पुरुष राधास्वामी बल हिये धर।
चोरन मार हटायं ॥ ३ ॥
इंद्रियन सँग नित करत लड़ाई।
ठगियन दूर पराय ॥ ४ ॥
करम भरम सब दूर निकारे।
भक्ती लीन्ह जगाय ॥ ५ ॥

सुरत शब्द गुरु मत घट धारा ।
मनमत दूर बहाय ॥ ६ ॥
काल मते में जगत फसाना ।
करम धरम अटकाय ॥ ७ ॥
कुमत अधीन जीव सब भरमत ।
नित चौरासी धाय ॥ ८ ॥
मेरा भाग जगा गुरु किरपा ।
सूरत शब्द लगाय ॥ ९ ॥
सुन सुन धुन हरखत रहूँ मन में ।
निस दिन गुरु गुन गाय ॥ १० ॥
राधास्वामी नाम जपूँ नित हिये में ।
चरनन ध्यान लगाय ॥ ११ ॥
गुरु छबि देख मगन हिये माहीं ।
अचरज भाग सराय ॥ १२ ॥
क्या महिमा मैं राधास्वामी गाऊँ ।
गत मत बरनी न जाय ॥ १३ ॥
मैं तो नीच अधम नाकारा ।
कीन्ही मेहर बनाय ॥ १४ ॥

चरन सरन दे पार उतारा ।
राधास्वामी हुए हैं सहाय ॥ १५ ॥
उमँग उमँग गुरु आरत गाऊँ ।
तन मन भेंट चढ़ाय ॥ १६ ॥
राधास्वामी चरनन पर बल जाऊँ ।
रहूँ नित सरन समाय ॥ १७ ॥

॥ शब्द १४ ॥

मेरे लगी प्रेम की चोट । बिकल मन
अति घबरावे ॥ कोइ कछू कहे समझाय ।
चित्त में नेक न आवे ॥ १ ॥
मात पिता बहु कहें । बहन और भाई
भतीजे ॥ मूरख हैं सब लोग ।
प्रीत उन दिन दिन छीजे ॥ २ ॥
मैं सतगुरु बल धार । चरन में प्रीत
बढ़ाता ॥ जग से होय निरास ।
रूप गुरु निस दिन ध्याता ॥ ३ ॥
दया करी गुरु देव । सुरत अब धुन
में लागी ॥ घट में देख बिलास ।
सरन में दृढ़ कर पागी ॥ ४ ॥

राधास्वामी दीन दयाल। दया कर मोहिँ अपनाया ॥ करम भरम को काट। तिर्कुटी पार पहुँचाया ॥ ५ ॥
सुन्न महासुन होय। गई सुत सोहँग पासा ॥ आगे सतपद परस। अलख लख अगम निवासा ॥ ६ ॥
पहुँची राधास्वामी धाम। मेहर से सतगुरु केरी ॥ दरशन राधास्वामी पाय। दया उन छिन छिन हेरी ॥ ७ ॥

॥ शब्द १५ ॥

दास हुआ चरनन में लौलीन। ध्यान गुरु लाय ताड़ी ॥ १ ॥
जगत की दई बासना त्याग। देख घट उजियारी ॥ २ ॥
सुरत मन मगन होत सुन सुन। शब्द धुन झनकारी ॥ ३ ॥
काम और क्रोध गये घर छोड़। हुआ तन सुखियारी ॥ ४ ॥

चरन सरन दे पार उतारा ।
राधास्वामी हुए हैं सहाय ॥ १५ ॥
उमँग उमँग गुरु आरत गाऊँ ।
तन मन भेंट चढ़ाय ॥ १६ ॥
राधास्वामी चरनन पर बल जाऊँ ।
रहूँ नित सरन समाय ॥ १७ ॥

॥ शब्द १४ ॥

मेरे लगी प्रेम की चोट । बिकल मन
अति घबरावे ॥ कोइ कछु कहे समझाय ।
चित्त में नेक न आवे ॥ १ ॥
मात पिता बहु कहें । बहन और भाई
भतीजे ॥ मूरख हैं सब लोग ।
प्रीत उन दिन दिन छीजे ॥ २ ॥
मैं सतगुरु बल धार । चरन में प्रीत
बढ़ाता ॥ जग से होय निरास ।
रूप गुरु निस दिन ध्याता ॥ ३ ॥
दया करी गुरु देव । सुरत अब धुन
में लागी ॥ घट में देख बिलास ।
सरन में दृढ़ कर पागी ॥ ४ ॥

राधास्वामी दीन दयाल। दया कर मोहिं अपनाया ॥ करम भरम को काट। तिर्कुटी पार पहुँचाया ॥ ५ ॥
सुन्न महासुन होय। गई सुत सोहँग पासा ॥ आगे सतपद परस। अलख लख अगम निवासा ॥ ६ ॥
पहुँची राधास्वामी धाम। मेहर से सतगुरु के री ॥ दरशन राधास्वामी पाय। दया उन छिन छिन हेरी ॥ ७ ॥

॥ शब्द १५ ॥

दास हुआ चरनन में लौलीन।
ध्यान गुरु लाय ताड़ी ॥ १ ॥
जगत की दई बासना त्याग।
देख घट उजियारी ॥ २ ॥
सुरत मन मगन होत सुन सुन।
शब्द धुन भनकारी ॥ ३ ॥
काम और क्रोध गये घर छोड़।
हुआ तन सुखियारी ॥ ४ ॥

करम और भरम हुए सब दूर ।
हुई जग से न्यारी ॥ ५ ॥
काल और करम रहे सब हार ।
थकी माया नारी ॥ ६ ॥
सुरत मन हो गये अब निरबंध ।
चढ़त नभ के पारी ॥ ७ ॥
निरख गुरु दरशन त्रिकुटी माहिँ ।
चरन पर जाऊँ वारी ॥ ८ ॥
सुन्न और महासुन्न के पार ।
सुनी बंसी प्यारी ॥ ९ ॥
अमरपुर निरख पुरुष का रूप ।
अजब गत सुत धारी ॥ १० ॥
अधर चढ़ निरखा राधास्वामी धाम ।
मेहर उन करी भारी ॥ ११ ॥
करूँ क्या अस्तुत उनकी गाय ।
चरन पर बलिहारी ॥ १२ ॥

॥ शब्द १६ ॥

गुरु नैन रसीले निरखे ।
मेरे सिमट गये मन प्रान ॥ १ ॥

पुरुष अंस मेरी निरमल सूरत ।
बसी काल घर आन ॥ २॥
बिना दया सतगुरु पूरे के ।
कस उलटे घर जान ॥ ३ ॥
राधास्वामी प्यारे मिले परम गुरु ।
उन दीना पता निशान ॥ ४ ॥
दृष्टि करी भरपूर मेहर की ।
पहुँची अधर ठिकान ॥ ५ ॥

॥ शब्द १७ ॥

राधास्वामी सतगुरु पूरे ।
मैं आया सरन हज़ूरे ॥ १ ॥
मैं औगुनहारा भारी ।
तुम बख़्शो भूल हमारी ॥ २ ॥
मैं जग मैं बहु भरमाया ।
कहीँ घर का पता न पाया ॥ ३ ॥
तुम कीन्ही दात अपारी ।
निज घर का भेद दिया री ॥ ४ ॥

स्रुत शब्द जुगत समझाई ।
सुमिरन और ध्यान बताई ॥ ५ ॥
जो करे कमाई हित से ।
और बचन सुने जो चित से ॥ ६ ॥
वह छिन छिन घट में धावे ।
और शब्द अमी रस पावे ॥ ७ ॥
गुरु मेरा भाग जगाया ।
मन सूरत शब्द लगाया ॥ ८ ॥
अब मन में रहूँ मगन मैं ।
शब्दा रस पिऊँ अपन मैं ॥ ९ ॥
गुरु बचन लगैं मोहिं प्यारे ।
सुन सुन हुआ जग से न्यारे ॥ १० ॥
मेरे औगुन चित न बिचारे ।
गुरु कीन्ही दात अपारे ॥ ११ ॥
सतसंगत मैं जब रलिया ।
गुरु प्रेमी जन सँग मिलिया ॥ १२ ॥
गुरु भक्ती रीत पिछानी ।
निश्चय कर मन में मानी ॥ १३ ॥

सोई जन है बड़ भागी ।
जिन हिरदे भक्ती जागी ॥ १४ ॥
राधास्वामी से करूँ पुकारी ।
मोहिँ दीजे भक्ति करारी ॥ १५ ॥
नित सुरत शब्द मैं भरना ।
चित रहे तुम्हारे चरना ॥ १६ ॥
माया से लेव बचाई ।
राधास्वामी नाम धियाई ॥ १७ ॥
गुरु आरत निस दिन गाऊँ ।
राधास्वामी चरन समाऊँ ॥ १८ ॥

॥ शब्द १८ ॥

काहे को डरपे मन नादान ।
रहो छिप कँवल कली मैं आन ॥ १ ॥
पकड़ ले गुरु की ओट सम्हार ।
करम और काल रहैं तब हार ॥ २ ॥
शब्द का मारग ले कर सार ।
धुनन की सुन घट मैं झनकार ॥ ३ ॥

खेल रहा बालक सम जग माहिँ ।
जकड़ कर पकड़त नहिँ गुरु बाँह ॥४॥
इसी से होत भरम भारी ।
गुरू का बल हिये नहिँ धारी ॥ ५ ॥
चेत कर करो आज सतसंग ।
चित्त मेँ धारो ढंग उमँग ॥ ६ ॥
बसाओ घट मेँ राधास्वामी प्रीत ।
चलो निज घर को भौजल जीत ॥ ७॥

॥ शब्द १९ ॥

पूरन भक्ति देव गुरु दाता ।
सुरत रहे तुम चरनन साथा ॥ १ ॥
मन विच प्रीत बढाओ दिन दिन ।
गुन गाऊँ राधास्वामी छिन छिन ॥ २॥
जग बिच दुख पाये बहुतेरे ।
हार पड़ा होय चरनन चेरे ॥ ३ ॥
काल करम मोहिँ नित भरमावत ।
मन इंद्री भोगन सँग धावत ॥ ४ ॥

तुम बिन और न रच्छक मेरा ।
लीजे मोहिँ बचाय सवेरा ॥ ५ ॥
भेद तुम्हारा अगम अपारा ।
सुरत शब्द मारग अति सारा ॥ ६ ॥
सो किरपा कर दिया मोहिँ दाना ।
घट मैं पाया नाम निशाना ॥ ७ ॥
अब यह बिनय सुनो मेरे साईं ।
राखो मन चरनन की छाईं ॥ ८ ॥
कर जल्दी खोलो घट द्वारा ।
देखूँ नभ मैं जोत उजारा ॥ ९ ॥
बंक नाल धस त्रिकुटी फोड़ूँ ।
काल करम का बल सब तोड़ूँ ॥ १० ॥
सुन्न सिखर चढ़ तन मन वारूँ ।
चन्द्र चाँदनी चौक निहारूँ ॥ ११ ॥
गुरू बल जाउँ महासुन पारा ।
सुनूँ गुफा धुन सोहँग सारा ॥ १२ ॥
सतपुर दरस पुरुष का पाऊँ ।
अलख अगम के पार चढ़ाऊँ ॥ १३ ॥

राधास्वामी चरन निहारूँ।
उमँग सहित उन आरत धारूँ ॥ १४ ॥
पूरन सरन प्रसादी पाऊँ।
प्रेम सहित नित चरन धियाऊँ ॥ १५॥
उलट जगत में फिर चल आऊँ।
जीवन को निज नाम सुनाऊँ ॥ १६ ॥
चरन ओट ले राधास्वामी गाओ।
भाग आपना आज जगाओ ॥ १७ ॥
फिर औसर ऐसा नहिँ पाओ।
चौरासी का फेर बचाओ ॥ १८ ॥
जो कहना नहिँ मानो मेरा।
जन्म जन्म दुख सहो घनेरा ॥ १९ ॥
या से आजहि काज बनाओ।
राधास्वामी २ छिन छिन गाओ ॥२०॥
बड़े भाग पाई राधास्वामी सरना।
भौसागर से सहजहि तरना ॥ २१ ॥

॥ शब्द २० ॥

राधास्वामी चरनन आओ रे मना।
भाग अपना लेव जगाय रे मना ॥ १ ॥

तन मन धन सँग तुम लाओ रे मना।
गुरु चरनन भेट चढ़ाओ रे मना॥२॥
अब काम क्रोध तज आओ रे मना।
तब राधास्वामी किरपा पाओ रे मना॥३॥
सतसँग कर भाव बढ़ाओ रे मना।
गुरु चरनन सुरत लगाओ रे मना॥४॥
शब्दा रस घट में पाओ रे मना।
गुरु महिमा छिन २ गाओ रे मना॥५॥
वहाँ अनहद तूर बजाओ रे मना।
दसवाँ दर सहज खुलाओ रे मना॥६॥
सुत खेंच अधर को चढ़ाओ रे मना।
धुन मुरली बीन सुनाओ रे मना॥७॥
वहाँ से भी क़दम बढ़ाओ रे मना।
राधास्वामी चरन समाओ रे मना॥८॥

॥ शब्द २१ ॥

ऐसी चौपड़ खेलो जग में।
लाल होय पहुँचो गुरु पद में॥ १ ॥

माया काल से बाज़ी लाग।
होय हुशियार जगत से भाग ॥ २ ॥
सुरत गोट चौपड़ में अटकी।
बिन सतगुरु चौरासी भटकी ॥ ३ ॥
पूरे गुरु से मिल घर प्रीत।
जुग बाँधो कर दृढ़ परतीत ॥ ४ ॥
प्रेम सहित उन सँग घर चलना।
चोट न खाओ काल बल दलना ॥५॥
काल दूत जो बिघन करावैं।
मार कूट उन तुरत हटावैं ॥ ६ ॥
खेल जिताय चढ़ावैं रंग।
दूर करावैं सब बदरंग ॥ ७ ॥
तीन धार के पासे डाले।
सुखमन होय सुरत घर चाले ॥ ८ ॥
दाव पड़ा मेरा अब के भारी।
सतगुरु मिल मोहिं आप सम्हारी ॥९॥
ऐसा औसर फिर नहिं मिलही।
जम को कूट पार घर चलही ॥ १० ॥

गुरु सँग जुग सीधा घर जावे ।
रस्ते मैं कोइ बिघन न आवे ॥ ११ ॥
गुरु पद परस लाल हो जावे ।
सतपुर जाय सेत पद पावे ॥ १२ ॥
धुन मुरली और बीन सुनावे ।
सतगुरु चरन परस हरखावे ॥ १३ ॥
अलख अगम घर निरख निहारे ।
धाम अनामी अधर सिधारे ॥ १४ ॥
राधास्वामी चरन धार परतीती ।
काल और महाकाल दल जीती ॥ १५ ॥
अस चौपड़ राधास्वामी खिलाई ।
सुरत जीत कर निज घर आई ॥ १६ ॥

॥ शब्द २२ ॥

जो जन राधास्वामी सरना पड़े ।
उनके जागे भाग बड़े ॥ १ ॥
कर सतसँग उन प्रीत बढ़ाई ।
मान मोह तज न्यारे खड़े ॥ २ ॥

जग भय भाव लाज तज दीन्ही ।
सतसँग में नित रहत अड़े ॥ ३ ॥
धर परतीत गहे गुरु चरना ।
सहज सहज भौ सिंधु तरे ॥ ४ ॥
गुरु बल जीत लिया मैदाना ।
मन माया से ख़ूब लड़े ॥ ५ ॥
काम क्रोध अहंकार लबारा ।
लोभ मोह सब मार धरे ॥ ६ ॥
राधास्वामी काज किया सब पूरा ।
उन बिन को अस दया करे ॥ ७ ॥

॥ शब्द २३ ॥

मन रे सतसँग गुरु का करो ।
प्रीत प्रतीत निज हिये धरो ॥ १ ॥
उनका सँग कर समझ सम्हारो ।
घट अँधियारा दूर करो ॥ २ ॥
सुरत शब्द मारग ले उनसे ।
सुरत शब्द में नित्त भरो ॥ ३ ॥

राधास्वामी नाम सुमिर छिन २ में।
गुरु स्वरूप का ध्यान धरो ॥ ४॥
सेवा करो प्रीत से गुरु की
दीन होय उन चरन पड़ो ॥ ५ ॥
दया लेव हरदम तुम उनकी।
तब यह भौजल सहज तरो ॥ ६ ॥
राधास्वामी दया मेहर ले साथा।
काल करम से नाहिँ डरो ॥ ७ ॥

॥ शब्द २४ ॥

रागी जन माया के पाले पड़े ॥ टेक ॥
नित प्रति उसके धक्के खावैं।
त्रय तापन की अगिन जरे ॥ १ ॥
गुरु दरशन में भाव न लावैं।
धन वालों के द्वारे खड़े ॥ २ ॥
जो गुरु बचन सुनावैं उनको।
नेक न मानें मान भरे ॥ ३ ॥
निंद्या कर सिर भार चढ़ावैं।
नरकन में सहैं दुक्ख बड़े ॥ ४ ॥

राधास्वामी मेहर से खैंच चरन में।
यह जिव भी भौ पार करे ॥ ५ ॥

॥ शब्द २५ ॥

मन रे क्यों न धरे गुरु ध्याना।
तज मान मोह अज्ञाना ॥ १ ॥
गुरु सँग प्रीत करो तुम ऐसी।
जस बालक माता लिपटाना ॥ २ ॥
गुरु स्वरूप लागे अस प्यारा।
जस तिरिया सँग पति हरखाना ॥ ३ ॥
जब लग घट में प्रेम न होवे।
ध्यान धरत मन रस नहिं पाना ॥४॥
दया मेहर सतगुरु की सँग ले।
दीन होय चित भजन समाना ॥ ५ ॥
मन को रोक सुनो धुन घट में।
सहज सहज तन से अलगाना ॥ ६ ॥
इस बिध कार करो तुम निस दिन।
पाओ राधास्वामी चरन ठिकाना ॥७॥

॥ शब्द २६ ॥

हंसनी क्यों न सुने गुरु बानी ।
जग सँग रहत मिलानी ॥ १ ॥
वक्त अमोल जाय यों ही बीता ।
परमारथ की सार न जानी ॥ २ ॥
सोच बिचार करो अब मन सैं ।
नहिं तो बहुत होय तेरी हानी ॥ ३ ॥
भोग जगत के त्यागो मन से ।
क्यों तू इन सँग भूल भुलानी ॥ ४ ॥
सतसँग कर परतीत बढ़ाओ ।
प्रीत चरन मैं गुरु के आनी ॥ ५ ॥
घट का भेद लेव तुम उन से ।
सुरत शब्द मैं नित्त लगानी ॥ ६ ॥
राधास्वामी काज करैं तेरा पूरा ।
उनके चरन मैं सुरत समानी ॥ ७ ॥

॥ शब्द २७ ॥

अरे मन क्यों नहिं धारे गुरु ज्ञान ॥टेक॥

सत चेतन घट माहिँ बिराजे ।
तू बाहर जड़ सँग भरमान ॥ १ ॥
निज घर तेरा अगम अपारा ।
तू रहा जग सँग यहाँ भुलान ॥ २ ॥
धन और मान पाय बहु फूला ।
तिरिया सुत सँग मेल मिलान ॥ ३ ॥
जग की हालत नित उठ देखे ।
कोई न ठहरे सभी चलान ॥ ४ ॥
फिर फिर बिरधी चाहे यहाँ की ।
ऐसा मूरख समझ न लान ॥ ५ ॥
कभी जाग्रत कभी सुपन अवस्था ।
गहिरी नींद में कभी सुलान ॥ ६ ॥
इन हालों में नित प्रति बरते ।
परख न लावे अजब सुजान ॥ ७ ॥
मद माता भोगन में राता ।
मोह जाल में रहा फसान ॥ ८ ॥
करता की रचना नित देखे ।
तौभी उसका खोज न आन ॥ ९ ॥

परघट है कुदरत का खेला ।
यह पोथी कभी पढ़ा न पढ़ान ॥ १० ॥
खान पान में वैस बितावत ।
मरने की कभी सुद्ध न लान ॥ ११ ॥
काम क्रोध और लोभ लहर में ।
बहत रहे निस दिन अनजान ॥ १२ ॥
जो कोइ बचन चितावन कारन ।
कहे तो उस से रूसे आन ॥ १३ ॥
साध संत हुए जिव हितकारी ।
परमारथ की राह लखान ॥ १४ ॥
शब्द भेद दे जुगत बतावें ।
सुरत चढ़ावें अधर ठिकान ॥ १५ ॥
जनम मरन की फाँसी काटें ।
काल करम से सहज बचान ॥ १६ ॥
तिनका बचन सुने नहिं चित दे ।
सोचे न अपनी लाभ और हान ॥१७॥
संत संग नाता नहिं जोड़े ।
सतसँग में नहिं बैठे आन ॥ १८ ॥

कुटँब जगत का मोह न छोड़े ।
क्योंकर पावे नाम निशान ॥ १९ ॥
जीव हुआ लाचार जगत में ।
निरबल निरधन निपट अजान ॥ २० ॥
जब लग मेहर न होवे धुर की ।
संत मता कस माने आन ॥ २१ ॥
राधास्वामी दया करें जिस जन पर ।
संत चरन में वही लगान ॥ २२ ॥
प्रीत लाय नित करे साध सँग ।
सुरत शब्द की कार कमान ॥ २३ ॥
शब्द शब्द रस पिये अधर चढ़ ।
सतगुरु का हिये धर कर ध्यान ॥२४॥
दया हुई कारज हुआ पूरा ।
राधास्वामी चरन समान ॥ २५ ॥

॥ शब्द २८ ॥

गुरु सँग प्रीत न कोई करे ।
चरनन में नहिं भाव धरे ॥ १ ॥

जो सतसंगी बचन सुनावेँ
मूरखता कर उनसे लड़े ॥ २ ॥
जगत भोग में गया भुलाई ।
जम धक्के नित खाता फिरे ३ ॥
माया संग रहा अटकाई ।
भौसागर कहो कैसे तरे ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया करें जब अपनी ।
इन जीवन की बिपता टरे ॥ ५ ॥

॥ शब्द २९ ॥

॥ भोग ॥

राधास्वामी सेव करत धर प्यारा ।
बिंजन अनेक कीन्ह तइयारा ॥ १ ॥
भर भर थाल धरे स्वामी आगे ।
सरब पदारथ अमीँ रस पागे ॥ २ ॥
प्रेम सहित स्वामी ध्यान सम्हारा ।
गगन मँडल धुन शब्द पुकारा ॥ ३ ॥
अधर चढ़त निरखा जाय सतपुर ।
रूप सुहावन राधास्वामी सतगुरु ॥४॥

दया करी स्वामी भोग लगाया ।
अमी रस स्वाद दीन्ह बरखाया ॥ ५ ॥
उमँग २ सतसंगी मिल कर ।
लैं परशादी हिये भाव धर ॥ ६ ॥
प्रेम बढ़त घट में अब तिल तिल ।
राधास्वामी गुन गावैं सब मिल मिल ॥७॥

वचन १९ ग़ज़ल और मसनवी

॥ ग़ज़ल १ ॥

हे गुरू मैं तेरे दीदार का आशिक़ जो हुआ । मन से बेज़ार सुरत वार के दीवाना हुआ ॥ १ ॥
इक नज़र ने तेरी ऐ जाँ मुझे बेहाल किया । लैला के इश्क़ में मजनूँसा परेशान किया ॥ २ ॥
मैं हूँ बीमार मेरे दर्द का नहिँ और इलाज । मेरे दिल ज़ख़्म का मरहम तेरी बोली है इलाज ॥ ३ ॥

तेरे मुखड़े की चमक ने किया मन को नूराँ। सूरज और चाँद हज़ारों हुए उससे ख़िजलाँ ॥ ४ ॥

जग में इस चक्र ज़मॉने का यह दस्तूर हुआ। प्रेमी प्रीतम के चरन लाग के मशहूर हुआ ॥ ५ ॥

हिर्स दुनिया की मेरे दिल से हुई है सब दूर। तेरे दरशन की लगन मन में रही है भरपूर ॥ ६ ॥

वाह वाह भाग जगे गुरु चरनन सुर्त मिली। चंद्र मंडल को वहाँ फोड़ के गगना में पिली ॥ ७ ॥

राग और रागिनी मैंने सुने अंतर जाकर। मेरे नज़दीक हुए हिन्दू मुसलमाँ काफ़िर ॥ ८ ॥

॥ ग़ज़ल २ ॥

अर्श पर पहुँच कर मैं देखा नूर। काल को मार कर मैं फूँका सूर ॥ १ ॥

देह की सुध गई जो सुर्त चढ़ी ।
जाके बैठी जहाँ कि पहिले थी ॥ २ ॥
निज गली यार के जो आशिक़ हैं ।
भीड़ से अब एकांत लाऊँ मैं ॥ ३ ॥
जो कहूँ मैं सो कान देके सुनो ।
सुर्त खैंचो चढ़ाओ धुन को सुनो ॥ ४ ॥
सिर में है तेरे बाग़ और सतसंग ।
सैर कर जल्द ले गुरू का रंग ॥ ५ ॥
तान पुतली को आँख को मत खोल ।
चढ़के आकाश का दुआरा खोल ॥ ६ ॥
जब चढ़े सुर्त तेरी अंदर यार ।
देह की सैर कर व देख बहार ॥ ७ ॥
अचरजी सैर है तेरे बीचे ।
पिरथी ऊपर है आस्माँ नीचे ॥ ८ ॥
बंक नाल होके आगे सुर्त चली ।
तिरकुटी पहुँच कर गुरू से मिली ॥ ९ ॥
रूप सूरज का लाल क्या बरनूँ ।
सहस सूरज हैं उसके इक रोमूँ ॥ १० ॥

आगे चल सुर्त सुन्न में पहुँची ।
धुन किंगरी व सारँगी की सुनी ॥११॥
कुंड अमृत भरे नज़र आये ।
हंस रूप होय मोती चुन खाये ॥१२॥
सुन्न को छोड़ कर चली आगे ।
पहुँची महासुन जहाँ सोहँग जागे ॥१३
हाल वहाँ का मैं क्या कहूँ क्या है ।
जानता है वही जो पहुँचा है ॥ १४ ॥
रास्ते में वहाँ अँधेरा है ।
सतगुरू संगही निबेड़ा है ॥ १५ ॥
सतगुरू संग ले किया मैदाँ ।
काल देख उनको हो गया हैराँ ॥१६॥
सुर्त चढ़ कर गुफा में पहुँची धाय ।
धुन सोहँग सुनी मुक़ाम को पाय ॥१७॥
इस मुक़ाम अचरजी को पाय मिली ।
खोल खिड़की को अंदरून चली ॥१८॥
आगे चल सत्तलोक पहुँची धाय ।
और अमीका अहार दमर खाय ॥१९॥

आगे इसके अलख अगम है मुक़ाम ।
तिसपरे हैगा राधास्वामी नाम ॥ २० ॥
यह मुक़ाम है अकह अपार अनाम ।
संत बिन कौन पा सके यह धाम ॥ २१ ॥
भेद सब इस जगह तमाम हुआ ।
सब हुए चुप्प मैं भी चुप्प हुआ ॥२२॥

॥ ग़ज़ल ३ ॥

निज रूप पूरे सतगुरू का । प्रेम मन मैं छा रहा ॥ बचन अमृत धार उनके । सुन अमी मैं न्हा रहा ॥ १ ॥
जब से चरनौं मैं लगा । और धूर चरनौं की लई ॥ मन के अंतर का अँधेरा । मैल सब जाता रहा ॥ २ ॥
मुखड़ा सुहावन क़द्द सीधा । चाल अति शोभा भरी । तेज रोशन सीने अंदर । मन को घायल कर रहा ॥ ३ ॥
जो किया सतसंग सतगुरू । और बचन पूरे सुने ॥ दीन दुनिया झूँठी लागी । और न उनका ग़म रहा ॥ ४ ॥

पिंड का सब भेद पोशीदा। मुझे ज़ाहिर हुआ ॥ मेहर से पूरे गुरू के। काम मेरा बन रहा ॥ ५ ॥

सुर्त ने जब धुन को पकड़ा। आस्माँ पर चढ़ गई ॥ हो गई क़ाबिल वहाँ पर। फिर न कोई ग़म रहा ॥ ६ ॥

॥ वज़न २ ॥

सुर्त आवाज़ को पकड़ के गई।
नभ पै पहुँची व जानकार हुई ॥ ७ ॥
देखी वहाँ पर अजब नवीन बहार।
और अनुभव जगा हुई सरशार ॥ ८ ॥
दुक्ख जन्म और मरन की तकलीफ़ात।
हो गई दूर और गई आफ़ात ॥ ९ ॥
भेद अंतर का मुझ पै हाल खुला।
जब कि सतगुरू से मैं सवाल किया ॥१०॥
देह को ख़ाक की मैं छोड़ गया।
काल भी थक के मुझ से बाज़ रहा ॥११॥

सुर्त आकाश पर चढ़ी इक बार।
कर्म कारज गये हुई करतार ॥ १२ ॥
मेरे सतगुरू ने जब करी किरपा।
पद से जाकर मिली बियोग गया ॥१३॥
कर्मी शरई नमाज़ी क्या जानैं।
भेद अभ्यासी आप पहिचानैं ॥ १४ ॥
विद्यावान सब रहे मूरख।
अंतरी भेद को न जाने कुछ ॥ १५ ॥
संशय मैं सब जगत रहा कूड़ा।
रहा बाचक न पाया गुरू पूरा ॥ १६ ॥
पाये सतगुरू उसी का जागा भाग।
बाक़ी बाद और बिबाद मैं रहे लाग ॥१७॥
राधास्वामी गुरू ने की किरपा।
भाग जागा है मेरा अब धुर का ॥१८॥

॥ ग़ज़ल ४ ॥

यह सतसंग और राधास्वामी है नाम।
सरन आओ हे करमियों तुम तमाम ॥१॥

जो सतगुरू से चाहो दया की नज़र ।
सुरत और मन और मत भेट कर ॥२॥
ख़राब हैगी हालत सभों की यहाँ ।
बचा चाहो सतगुरू सरन लो मियाँ ॥३॥
हटा कर के संसे सरन में तू आ ।
प्रीत और परतीत दृढ़ कर सदा ॥४॥
तू सतगुरू के दरवाज़े पर कर पुकार ।
और उनके भक्तों का रस्ता बुहार ॥५॥
पतंगा सा सतगुरू पै आपे को वार ।
सिँघासन की धूल अपने पलकों से झाड़॥६
कभी मेहर से शहद देवैं तुझे ।
मुनासिब समझ ज़हर देवैं तुझे ॥ ७॥
तू चुप होके ले और सिर पर चढ़ा ।
तू खुश होके पी और कह यह सदा ॥८॥
कि धन २ हैं धन २ हैं सतगुर मेरे ।
उतारेंगे भौजल से बेशक परे ॥ ९ ॥

॥ अशआर सतगुरु महिमा ॥ ५ ॥

संत बचन हिरदे में धरना ।
उनसे मुख मोड़न नहिं करना ॥ १ ॥
मीठा कड़ुवा बोल सुहाई ।
मत को तेरे देहैं पकाई ॥ २ ॥
गरम सरद का सोच न लाना ।
नरक अगिन से तोहि बचाना ॥ ३ ॥
तेरी समझ है किनके माहीं ।
गुरु पूरा खोजो जग माहीं ॥ ४ ॥
उन सँग किनका पावे ज्ञान ।
मार लेय तू मन शैतान ॥ ५ ॥
गुरु पूरा कस्तूर समान ।
बाहर खूँ घट मुश्क बसान ॥ ६ ॥
जब वे घट का भेद सुनावें ।
नभ की ओर सुरत मन धावें ॥ ७ ॥
अंधे को शीशा दिखलाना ।
ऐसे हरि पत्थर में जाना ॥ ८ ॥

गुरु बिन घट में राह न चलना।
डर और बिघन अनेकन मिलना॥ ९॥
गुरु रक्षा जाके सँग नाहीं।
उसको काल करम भरमाहीं॥ १०॥
याते सतगुरु ओट पकड़ना।
झूठे गुरु से काज न सरना॥ ११॥
गिरि समान उन छाया जग में।
सुरत बिहंगम रहत अधर में॥ १२॥
जो मन करड़ा पत्थर होवे।
गुरु से मिलत जवाहिर होवे॥ १३॥
बँदगी भजन करे सौ बरसा।
गुरु का संग दुघड़िया बढ़का॥ १४॥
जो मालिक का चहे दीदार।
जातू बैठ गुरू दरबार॥ १५॥
मालिक का बालक गुरु पूर।
मालिक का हरदम मंज़ूर॥ १६॥
गुरु पूरे को समरथ जान।
करम बान उलटावें आन॥ १७॥

जो मालिक का सुनता बोल।
उसका बचन सही कर तोल ॥ १८ ॥
जो तू घट में चालनहार।
चलने वाला सँग ले यार ॥ १९ ॥
हिन्दू चाहे मुसल्माँ होवे।
अरबी होय तुरक चाहे होवे ॥ २० ॥
रूप रंग उसका मत देख।
सरधा भाव निशाना पेख ॥ २१ ॥
जिनके है मालिक का प्यार।
हिन्दू और तुरक दोउ यार ॥ २२ ॥
जो हैं माते मन के केल।
दो हिन्दू का होय न मेल ॥ २३ ॥
भान रूप मालिक सुन भाई।
नर देही में रहा छिपाई ॥ २४ ॥
फूल खिलें गुलनारी जबही।
बाग़ सुहावन लागे तबही ॥ २५ ॥
अस गुरु संग करे जो कोई।
पूरे सँग पूरा होय सोई ॥ २६ ॥

गुरु पूरे का सेवक बरतर।
क्या जो हुकम करे राजाँ पर ॥ २७ ॥
हर दम सुरत चढ़े ऊँचे को।
मालिक ताज ख़ास दिया उसको ॥२८॥
गुरु की गत परखो अंतर मेँ।
बे परखे मत मानो मन मेँ ॥ २९ ॥
जो गुरु परख न पावे घट मेँ।
तो मत जाय अकेला बट मेँ ॥ ३० ॥
रस्ते मेँ है काल का घेरा।
शब्द सुना दुख देहै घनेरा ॥ ३१ ॥
अभ्यासी को कहै पुकारी।
शब्द सुनो आओ सरन हमारी ॥३२॥
जो कोइ काल शब्द मेँ रचिया।
घर नहिँ जाय राह मेँ पचिया ॥३३॥
धावत जाय काल के घर को।
भिड़ा शेर खा जावेँ उसको ॥ ३४ ॥
काल शब्द की यह पहिचान।
मन चाहे धन आदर मान ॥ ३५ ॥

काल शब्द में चित्त न लाओ ।
तब निज घर का भेद खुलाओ ॥ ३६ ॥
जिस घट परगट सत का नूर ।
उसको पूजें देव और हूर ॥ ३७ ॥
साध का निरखो आँख और माथा ।
सत का नूर रहे जिस साथा ॥ ३८ ॥
यह चिन्ह देख करें पहिचान ।
गुरु पद का जिन हिरदे ज्ञान ॥ ३९ ॥
परम पुरुष सम गुरु को जान ।
बिन जिभ्या कहें बचन सुजान ॥ ४० ॥
वही हकीम और वही उस्ताद ।
हिये में सुनत रहो उन नाद ॥ ४१ ॥
छोड़ कुसंगी से तू प्यार ।
सच्चा संगी खोजो यार ॥ ४२ ॥
जिन कीन्हा सतगुरु का संग ।
सत्तपुरुष का पाया रंग ॥ ४३ ॥
झूठे गुरु का जो सँग लाय ।
नरक पड़े और अति दुख पाय ॥४४॥

गत मत भेद संत का भारी ।
वही पावे जिन तन मन वारी ॥ ४५ ॥
संत न देखें बोल और चाल ।
वे परखें अंतर का हाल ॥ ४६ ॥
गुरु का हाथ पुरुष का हाथ ।
हाज़िर ग़ायब सब के साथ ॥ ४७ ॥
उनका हाथ बहु लंबा ऊँचा ।
सात मुक़ाम के ऊपर पहुँचा ॥ ४८ ॥
जो तू सिर को राखा चाह ।
दीन होय गुरु सरनी आय ॥ ४९ ॥
गुरु तुझको सब भाँत बचावें ।
काल बिघन सब दूर करावें ॥ ५० ॥
झूठे गुरु की ओट न गहना ।
सतगुरु चरन सरन सुख लेना ॥ ५१ ॥
जिन सतगुरु का संग न कीन्हा ।
दुख पाया हुआ काल अधीना ॥ ५२ ॥
जो आया सतगुरु की छाँह ।
सूरज लागा उसके पाँय ॥ ५३ ॥

॥ बहर दूसरी ॥

जो तुझे चलना है तो इस ढंग चल।
जो ख़िज़र है तौ भी गुरु के संग चल ॥५४॥
बन सके जहाँ तक तू गुरु से मुख न फेर।
सेवा कर अभ्यास कर मत कर तू देर ॥५५॥
निरभे मत हो खौफ़ रख मन में सदा।
लाज तज बदनाम हो जग से जुदा ॥५६॥
कोइ तरह यह मन नहीं हाथ आयगा।
पूरे गुरु की छाया से मर जायगा ॥५७॥
इसलिये दामन को। तू उनके पकड़।
छोड़ मत ऐ यार। उसको धर जकड़ ॥५८॥
जो तू मज़बूती से पकड़ेगा चरन।
मिल गई मालिक की तुझ को निज सरन ५९
देख हरदम मेहर उनकी अपने
साथ। नित निरख सिर पर तू
अपने उनका हाथ ॥ ६० ॥
गुरु के हिरदे में तू कर ले अपना घर।
सुर्त रूप अपना निरख चढ़ मानसर ॥६१॥

गुरु की ताड़ और मार सह घर कर पियार । मूरखों की अस्तुती पर ख़ाक डार ॥ ६२ ॥

गुरु से परमारथ की दौलत पायगा।
सुर्त सँग चेतन्न अँग हो जायगा ॥६३॥

पूरे गुरु को खटमुखी आईना जान ।
मालिक उस में बैठ कर देखे है आन ॥६४॥

बे वसीले गुरु के परमारथ न पाय ॥
चाहे कोई कुछ करे निज घर न जाय ॥६५॥

जिन को मालिक का । हुआ हासिल विसाल ॥ थोड़ा सा मैंने कहा यह उनका हाल ॥ ६६ ॥

पूरे गुरु हैं शेर वे करते शिकार। और सब बाक़ी हैं उनके टुकड़े ख़्वार ॥६७॥

बस रहो चुप और गुरु सरनी गहो ।
हुक्म मानो उनके चरनों में रहो ॥६८॥

ओट पूरे की गहो पूरे बनो । नीच की संगत न कर नहिँ सिर धुनो ॥ ६९॥

जो भजन और बंदगी हर की करे।
या करम और धर्म सब बिध से करे।७०।
गुरु की फटकार और निरादर जिन सहा।
वह हुआ इन सब से बिहतर मैं कहा।७१।
हक़ ने पैग़म्बर को समझाया कि मैं।
मिल नहीं सकता ज़मीं अस्मान में॥७२॥
ऊँचे और नीचे ठिकाने में नहीं। अर्श
कुरसी पर भी मैं रहता नहीं॥ ७३ ॥
दिल में भक्तों के मैं रहता हूँ सदा।
जो मुझे चाहे तो माँग उनसे तू जा॥७४॥
गुरु की महिमा का समझना हैगा यह।
दीन हो चरनों में तू ज्यों ख़ाक रह॥७५॥
एक कर हर गुरु को क्या है मानना।
अपना आपा उनके सन्मुख घालना॥७६॥
जिसके दिल से उड़ गये दुनिया के रंग।
ग़ैब के नक़्श उसमें झलकें बेदिरंग॥७७॥
जो नज़र अपने क़सूरों पर करे।
जल्द पूरा होवे रस्ता तै करे॥ ७८ ॥

आप को जाने है पूरा जो अजान।
थक रहा रस्ते में हक़ के वह निदान।७९।

महिमा अनहद शब्द और जुगत उसके प्राप्ती की

भर्म की ठेंठी निकालो कान से।
तब लगाओ ध्यान अनहद तान से॥८०॥
सुर्त के कानों से फिर तू शब्द सुन।
शब्द कहो चाहे कहो अंतर बचन॥८१॥
घट में जो उठती है रागों की सदा।
जो कहूँ मैं तुझ से हाल उसका ज़रा।८२।
जान मुरदों की उठें क़बरों से भाग।
ऐसा अंतर का है बाजा और राग।८३।
कान से चित दे सुनो आवाज़ को।
पर सुनाते हैं नहीं इस राज़ को॥८४॥
लाव पाओं के तले तू आस्माँ।
शब्द ऊँचे देस का सुन सूरमाँ॥ ८५॥
जो निदा खैंचे है ऊँचे को तुझे।
जान वह धुन आई ऊँचे से तुझे॥८६।

सुन के जो आवाज़ जागे कामना ।
काल की आवाज़ है घर घालना ॥८७॥
देख ले तू यों पयम्बर ने कहा ।
आती है आवाज़ हक़ मुझको सदा ॥८८॥
मुहर कानों पर तुम्हारे है लगी ।
सुन नहीं सकते हो अनहद धुन कभी॥८९॥
सुनता हूँ आवाज़े हक़ घट में सदा ।
दिल को मेरे करती है पाक और सफ़ा।९०।
काटते और खोदते रस्ता रहो ।
मरते दम तक एक दम ग़ाफ़िल न हो।९१।

॥ वज़न २ ॥

रूह है हुक्म भेद अंस खुदा ।
बेज़बाँ करती है अवाज़ सदा ॥ ९२ ॥
हाय बंधन धरे तू देही का ।
न सुने ज़िक्र पाक मालिक का ॥ ९३ ॥
यार तुझको पुकारता दिन रात ।
तू न सुनता है हाय उसकी बात ॥ ९४ ॥

सब जगह है आवाज़ उसकी पूर।
खोल कानों को अपने घरके पाऊर ॥९५॥
कान का खोलना यही है सुनो।
शब्द बाहर का सुनना बंद करो ॥९६॥
वह है आवाज़ हर वक़्त जारी।
घट में जन्म और मरन से है न्यारी ॥९७॥
आद और अंत उसका है बेहद।
इस सबब से कहें उसे अनहद ॥९८॥
पहिले ज़ाहिर हुआ शब्द भंडार।
फिर हुआ पैदा उससे सब संसार ॥९९॥
शब्द करता न अपना जो इज़्हार।
कभी परगट न होता यह संसार ॥१००॥
सुनो वह शब्द और लो आनंद।
भूल आपे को छोड़ दे दुख दंड ॥१०१॥

॥ ग़ज़ल ५ ॥

बड़ा ज़ुल्म है मेरे यार यह।
कि तू जाय सैर को बाग़ के ॥
तू कँवल से आपहि कम नहीं।
हिये में उलट के चमन में आ ॥१०२॥

ख़ाली नाफ़ों की तू तलाश में।
क्यों उठाये मिहनतो रंज को॥
घर प्रेम सुन्दर श्याम का।
ख़ुशबू उलट के ले घट में आ ॥१०३॥
तेरे मन में जो नहीं बासना, तन संग
भोग बिलास की। तब कौन तुझको खेंचता,
कि तू जग की चोर सरा में आ ॥१०४॥
तेरी चाह दुख सुख रूप है,
तेरा मनही काल और जाल है।
तेरी आस जग की पुकारे है,
कि तू फेर में तू और मैं के आ ॥१०५॥
तेरी है किधर को नज़र लगी,
कि तू इस क़दर करे ग़ाफ़िली।
तेरी मौत सिर पै है आ खड़ी,
ज़रा आँख खोल कफ़न में आ ॥१०६॥
तेरे घट में गुरु दरबार से,
हर वक्त आती है यह निदा।
तज वासना जग जार की,
ले प्रेम अंग को घर में आ ॥ १०७ ॥

ग़म इन्तिज़ार का सह रहा,
तेरे दर्शनौं को तड़प रहा।
ज़रा डग उठा के करो दया,
छिन एक जाँ मेरे तन में आ ॥ १०८ ॥

॥ वज़न २ ॥

रात गुरु भेदी ने मुझ से यौं कहा।
तुम से गुरु का भेद नहिँ राखूँ छिपा ॥१०९॥
काम भक्ती के करो तुम सहज से।
जो करो सख़्ती तो दुनिया सख़्त है ॥११०॥
बिन पिरेम और भेद नहिँ पतियाय धुन।
या ते कर अभ्यास भक्ती हे सजन ॥१११॥
आसमाँ से आती है हर दम अवाज़।
क्यौं पड़ा दुनिया में नहिँ सुनता उसे ११२
कोइ नहीँ भेदी है सतगुरु धाम का।
बस यही कि घंटे की आवे सदा ॥११३॥

॥ वज़न २ ॥

जब देखा तेज मैं ने जो मालिक के नाम का।
दिल और जान भेंट हुए गुरु के नाम का ११४

प्यासों की प्यास बुझ गई धारा से नाम के।
ऐसा है आबे शीरीं असी रूप नाम का ११५
नामी व नाम में है नहीं फ़र्क़ देख ले।
छबि यार की दिखाता है वह तेज नाम का ११६
हिरदे में तुझको दीख पड़ेगा जमाले यार।
जो रगड़ा उसपे नित्त दिया जावे नाम
का ॥ ११७ ॥
मालिक का संग तुझको मिला यह
सहीह जान।
जो दिल में तेरे लाग रहा ध्यान नाम
का ॥ ११८ ॥
कर संग नाम का जो तू दीदार को चहे।
मालिक का मेल है जो हुआ मेल नाम
का ॥ ११९ ॥
मालिक के लोक में तेरा हो जायगा गुज़र।
जो तू उड़ेगा ऊँचे को बल ले के नाम का १२०
सुमिरन से नाम गुरु के तू ग़मगीं
न हो कभी।

मालिक का प्यार आवे जो हो प्यार
नाम का ॥ १२१ ॥

॥ प्रेम की महिमा ॥

सुर्त मन में प्रेम गुरु जिसके बसा।
फूल से ज़्यादा है हरदम वह खिला १२२
प्रीत सतगुरु की तू हरदम धार यार।
औलियाओं का बना इसही से कार १२३
यह न जानो तुम कि हक़ मिलता नहीं।
वह है दाता उसको कुछ मुशकिल नहीं १२४
प्रेम कारन जिसने कीन्हा ख़र्च माल।
धन है वह जन उसको मिलिया प्रेम
हाल ॥ १२५ ॥
पहिले जिसने अपना घर दीन्हा उजाड़।
पाइ फिर गुरु प्रेम की दौलत अपार १२६
जग के जीवों के लिये दुनिया का मुल्क।
भक्तजन के वास्ते मालिक का मुल्क ॥१२७॥
प्रेम चाहे छेद देवे आस्माँ।
प्रेम से पिरथी रहे कंपायमाँ ॥ १२८ ॥

प्रेम डाले जोश से समुँदर को फाड़।
प्रेम चाहे रेत सम पीसे पहाड़॥ १२९ ॥
प्रेम छिन में मुरदे को ज़िंदा करे।
प्रेम पल में शाह को बंदा करे ॥ १३०॥
प्रेम सब कड़वाई को मीठा करे।
प्रेम छिन में लोहे को कंचन करे ॥१३१॥
पाक करता हैगा नापाकी को प्रेम।
दूर कर देता है सब दरदों को प्रेम॥१३२॥
प्रेम से हो जाय काँटा गुल गुलाब।
प्रेम से हो जाय सिरका ज्यों शराब॥१३३॥
प्रेम अग्नी अपने हिरदे बालिये।
फ़िक्र भजन और बंदगी का जालिये॥१३४॥
प्रेमियों का मत है सब मत से जुदा।
प्रेमियों का इष्ट है मालिक सचा ॥१३५॥
कुफ़्र उसका दीन है और दीन उसका नूरे जाँ। जो तू निरभय हो गया सारे जहाँ में हुइ अमाँ ॥ १३६ ॥

इश्क़ वह शोला है जिस घट में वह रौशन
हो गया। एक प्रीतम रह गया और
बाक़ी सब जल भुन गया ॥ १३७ ॥
प्रेम जब आया सभी को रद किया।
एक प्रीतम रहके बाक़ी बह गया ॥१३८॥
ाह वाह हे प्रेम तू है निरमला।
ार को प्यारे सिवा दीन्हा जला ॥१३९॥
ीत भक्ती की सुनो हे साधवा। लोभ
ी मत कर अमीरों से तू चाह ॥ १४०॥
जसके मन में है भरी भोगों की चाह।
ास खुले मालिक का भेद
ोर हो निबाह॥ १४१ ॥
ी तरंगें मन में तेरे हैं भरी।
् मालिक का नहीं झलके ज़री॥१४२॥
निया को चाहे तू और दीदार को
ह है मुश्किल अनसमझ है यार तू १४३
ो तेरी आँखों से परदा दें उठा।
ागा दुनिया से तू बेज़ार और ख़फ़ा ।१४४।

धोखे उसके जब तुझे आवें नज़र।
भाग जावेगा तू उससे दूर तर ॥ १४५ ॥
खाना बेशुबहे का तुझको है ज़रूर।
तो भजन तुझसे बनेगा बेक़सूर ॥ १४६ ॥
जो तू खाना खायगा हक़ और हलाल।
जीत लेगा मन को ऐ साहिब कमाल ॥१४७॥
दूर कर मन से जो है गुरु के सिवाय।
तब रहे प्रीतम तेरे मन में समाय ॥१४८॥
जब तलक मन में तेरे है मान यार।
हो नहीं सकता है मालिक तेरा यार।१४९।
जब तेरे मन से हुआ हंकार दूर।
जा मिले मालिक से और पावे सरूर।१५०।
अपने मालिक पै तू दे आपे को वार।
जब नहीं तू तब रहा मालिक दयार ॥१५१॥
जो कि तन मन से हुआ अपने जुदा।
मिल गया बस उसको इस्रारे खुदा।१५२।
आँख कान और मुँह को अपने बंद कर।
भेद मालिक का तुझे आवे नज़र ॥१५३॥

चाह दुनिया की करे मन को सियाह।
गुरु से गुरु को माँग मत कर और चाह।१५४।
जिस क़दर तुझ को है मालिक से पियार।
उससे ज़्यादा तुझसे वह करता है प्यार।१५५।
पर तुझे उसकी परख होती नहीँ।
मेहर की उसके ख़बर होती नहीँ ॥१५६॥
बुलहवस को दर्द इश्क़ होता नहीँ।
सोज़ परवाने का मक्खी को नहीँ।१५७।
इक जनम मेँ दौलते दीदार पाय।
हर किसी को वस्ले हक़ मिलता नहीँ।१५८।
जो तू मूरत याकि अग्नी पूजता।
आओ आओ जैसे तैसे भाव से ॥१५९॥
सौ दफ़े भूल और चूक होगी मुआफ़।
मत निरास होना तू इस दरबार से।१६०।

॥ ग़ज़ल ६ ॥

प्यारे ग़फ़लत छोड़ो सर वसर। गुर बचन सुनो तुम होश धर ॥ मन की तरंगेँ रोक कर सतसंग मेँ तुम बैठो जाय ॥ १ ॥

गुरू का चरन पकड़ जकड़ । गुरू का स्वरूप ध्यान धर ॥ इस मन की खोवो सब अकड़ । नैनन में तुम बसो आय ॥२॥
यह दुनिया ख़्वाबो ख़्याल है। जो आया यहाँ सो चाल है ॥ क्या पूछो यहाँ क्या हाल है। यह काल कराला सबको खाय ॥३॥
क्या भूला तू धन माल देख । माया का यह सब जाल पेख ॥ काल करम की मिटे रेख। जो सतगुरू की सरन आय॥४॥
सतगुरू से कर आन प्यार । उनसे ले भेद सार ॥ सुरत शब्द मारग अपार । सुरत मन धुन से लगाय ॥ ५ ॥
देख अंतर जोती जमाल । लख गगना मैं सूर लाल ॥ सुन्न के परे महा काल । सतगुरू सँग चलो धाय ॥ ६ ॥
मुरली धुन सुन रसाल । ऊँचे पर धरो ख़्याल ॥ सत्तपुरुष निरखो जलाल । फिर अलख अगम परस जाय ॥ ७ ॥

धाम अनामी धुर अधर। निरखा जाय अति प्रेम कर ॥ राधास्वामी चरनन सीस धर। अस्तुत उनकी रही गाय ॥८॥

॥ शब्द रेख़ता ७ ॥

करो सतसंग सतगुरु का, भेद घर का वहाँ पाओ। धार परतीत चरनन में, दीन दिल सरन में धाओ ॥ १ ॥

समझ कर जगत में बरतो, फँसो नहिं जाल में उसके। रहो हुशियार इंद्रियन से, भोग सँग धोखा मत खाओ ॥ २ ॥

शब्द का भेद ले गुरु से, करो अभ्यास तुम निस दिन। गुनावन जगत की तज कर, चित्त से ध्यान धुन लाओ ॥ ३ ॥

जुगत से रोक मन घट में, ध्यान गुरु रूप का धारो। सुमिर राधास्वामी नाम हर दम, गुरू गुन नित्त तुम गाओ ॥४॥

सुरत मन तान गगना में, बजे जहँ संख और घंटा। सुनो फिर शब्द ओंकारा, सुन्न चढ़ मानसर न्हाओ ॥ ५ ॥

भँवर गढ़ जा सुनी बानी, सत्तपुर जाय हुलसानी । अलख और अगम के पारा, अनामी धाम चढ़ जाओ ॥ ६ ॥

मिली राधास्वामी से प्यारी, सरावत भाग निज अपना । भटक में बहु जनम बीते, पड़ा मेरा ऐसा अब दावो ॥७॥

॥ मसनवी ॥

मैं सतगुरू पै डालूँगी तनमन को वार।
मैं चरनों में कुरबान हूँ बार बार ॥१॥
करूँ कैसे उनकी दया का बयान ।
दिया मुझको प्रेम और परतीत दान ॥२॥
खुली आँख जब मुझको आया नज़र ।
कि दुनिया है धोखे की जा सर बसर ॥३॥
ज़मीन और ज़न और ज़र की है चाह ।
सभी जीव रहते हैं ख़्वार और तबाह ॥४॥
हुए मुबातिला दामे हिरसो हवस ।
न पावें कहीं चैन वह इक नफ़स ॥५॥

न मालिक का ख़ौफ़ और न मरने का डर ।
न खोजें कभी अपने घर की ख़बर ॥६॥
करें फ़िक्र मिहनत से दुनिया के काम ।
रहें इस्तरी और धन के ग़ुलाम ॥ ७ ॥
जो दुनिया के नामावरी के हैं काम ।
दिलो जाँ से उसमें पचे हैं मुदाम ॥८॥
भरा हैगा भोगों की ख़्वाहिश से मन ।
उसी में लगाते हैं धन और तन ॥ ९ ॥
न शरमो हया उनको मा बाप की
न कुछ फ़िक्र है पुन्न और पाप की ॥१०॥
जो मन इंदरी पावें लज़्ज़ात को ।
ग़नीमत समझते हैं इस बात को ॥११॥
जो दुनिया के सामाँ मुयस्सर हुए ।
हुए खुशदिल और मान में सब मुए ॥१२॥
नहीं जीव का अपने उनको ख़याल ।
कि मरने पै क्या होयगा उसका हाल ॥१३॥
कहाँ से वह आता है जाता कहाँ ।
कहाँ कौन है मालिके जिस्मो जाँ ॥१४॥

कोई जो कहाते हैं परमारथी ।
जो देखा तो वह हैं निपट स्वारथी ॥१५॥
करें ज़ाहिरी पाठ पूजा मुदाम ।
सुनें भागवत और गीता तमाम ॥ १६ ॥
मगर दिल पै उनके न होवे असर ।
न मरने का ख़ौफ़ और न नरकों का डर १७
करें तीरथ और यात्रा शौक़ से ।
रखें बर्त और दान दें ज़ौक़ से ॥१८॥
मगर होवे दुनिया का मतलब ज़रूर ।
रहे है यही आस हिरदे में पूर ॥१९॥
जो दुनिया की कुछ आस होवे नहीं ।
तो इस काम में पैसा ख़रचें नहीं ॥२०॥
जो मालिक का भेद इनसे कहवे कोई ।
उड़ावें हँसी और न मानें कभी ॥ २१ ॥
भरा हैगा मन उनका शुबहात से ।
न बाचें जिहालत की आफ़ात से ॥२२॥
वह सन्तों के कहने को मानें नहीं ।
सफ़ा बुद्धि से बात तोलें नहीं ॥ २३ ॥

कहूँ क्या कि दिल में हैं वे नास्तिक।
मगर धन के लेने को हैं आस्तिक ॥२४॥
होवे ऐसे जीवों का कैसे निबाह।
जहन्नुम की अग्नी में पावेंगे दाह ॥२५॥
वहाँ हाथ मल मल के पछतायँगे।
किये अपने कामों का फल पायँगे ॥२६॥
मदद कोई उनकी करेगा नहीं।
कोई इनका रोना सुनेगा नहीं ॥ २७ ॥
पकड़ इनको जमदूत देवेंगे मार।
सरप इनकी गरदन में देवेंगे डार ॥२८॥
अगिन खंभ से बाँध देंगे इन्हें।
अगिन कुंड में ग़ोता देंगे इन्हें ॥ २९ ॥
निहायत दुखी होके चिल्लायँगे।
यह ग़फ़लत का फल अपना यों पायँगे ।३०।
निरख करके जीवों का अस हाल ज़ार।
सन्त आये दुनिया में औतार धार ॥३१॥
दया कर सुनावें उन्हें घर का भेद।
मेहर से करें दूर करमों का खेद ॥ ३२ ॥

राह घर के जाने की देवें लखा ।
सुरत शब्द मारग का देवें पता ॥३३॥
हर इक घट में आवाज़ होती मुदाम ।
वही शब्द की धुन है और वोही नाम ॥३४॥
सुने जो कोई धुन को चित धर के प्यार ।
वही जीव घर जावे तिरलोकी पार ॥३५॥
सुनो भेद मंज़िल का अब राह के ।
वह हैं सात बालाय छः चक्र के ॥ ३६ ॥
यह हैं नाम छः चक्करों के सुनो ।
गुदा इंदरी और नाभी गिनो ॥ ३७ ॥
चकर चौथा हिरदै गुलू पाँचवाँ ।
छठा दोनों आँखों के है दरमियाँ ॥३८॥
इसी जा पै है सुर्त रूह का क़याम ।
परे इसके सन्तों के सातों मुक़ाम ॥३९॥
सहसदल है पहिला गगन दूसरा ।
सुन्न पर महासुन का मैदाँ बड़ा ॥४०॥
गुफ़ा लोक चौथा है सोहंग नाम ।
परे इसके सतलोक आली मुक़ाम ॥४१॥

अलख लोक की क्या कहूँ दस्तगाह ।
अगम लोक सन्तों का है तख़्त गाह ॥ ४२ ॥
परे इसके है कुल्ल मालिक का धाम ।
अपार और अनन्त राधास्वामी है नाम ४
अकह और अगाध और यही है अनाद ।
वहीं से उठी मौज और आद नाद ॥ ४४
नहीं कोइ जाने है यह भेद सार ।
रहे थक के सब कोइ गगना के वार । ४५
करम और धरम में रहे सब अटक ।
नहीं जिव के कल्यान की कुछ खटक ॥ ४६ ॥
रहे पूजते देवी देवा को झाड़ ।
न मालिक का खोज और न दिल
में पियार ॥ ४७ ॥
रहे पिछली टेकों में भूले सुदाम ।
नहीं जानें महिमा गुरू और नाम ॥ ४८ ॥
अगर चाहो तुम अपना सच्चा उद्धार ।
तो सतगुरु को जल्दी से लो खोज यार ॥ ४९ ॥

बचन संत सतगुरु के चित दे सुनो ।
पिरीत और परतीत हिरदे धरो ॥ ५० ॥
पियो चरन अमृत को तुम प्रीत से ।
भरम काटो परशादी के सीत से ॥ ५१॥
करो उनका सतसंग तुम बार बार ।
लेवो शब्द मारग का उपदेश सार॥५२॥
करो मन से मालिक का सुमिरन मुदाम।
परम पुर्ष राधास्वामी है उसका नाम॥५३॥
गुरू रूप का ध्यान हिरदे में लाय ।
सुरत और मन शब्द धुन से लगाय ॥५४॥
यह अभ्यास नित घट में करना सही।
कटें मन के औगुन इसी से सभी ॥५५॥
कोई दिन में दरशन गुरू के मिलें ।
सुने शब्द की धुन सुरत मन खिलें॥५६॥
इसी तरह नित घट में आनंद पाय ।
बढ़त जाय आनन्द मन शान्त लाय ॥५७॥
कोई दिन में मुक्ती का पावे सरूर ।
तू हो जाय तन मन से न्यारा ज़रूर ॥५८॥

प्रीत और परतीत दिन दिन बढ़े ।
तेरे मन में गुरु प्रेम का रँग चढ़े॥ ५९ ॥
उमँग कर तू सतगुर की सेवा करे ।
प्रेम अंग ले नित्त आरत करे ॥ ६० ॥
मिले प्रेम की तुझको दौलत अपार ।
सरावेगा भागों को तब अपने यार ॥६१॥
किया अब यह उपदेश का ख़त्म राग ।
जो माने उसी का जगे पूरा भाग ॥६२॥
करोगे जो हित चित से नित तुम
यह कार ।
करें राधास्वामी तुम्हारा उधार ॥६३॥
जपो प्रीत से नित्त राधास्वामी नाम ।
पाओ मेहर से एक दिन आद धाम॥ ६४॥